मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद – १४

पहली आवृत्ति ५

रु १७५ अक्तूबर, १९५९

आभार-स्वीकार

अिस पुस्तकमें अंकित गांधीजीके जीवनकी घटनाओं और कहानियोंके सिलसिलेमें मैंने जिन व्यक्तियों और सामयिक पत्रों आदिका अुपयोग किया है, अुन सबके प्रति मैं कृतज्ञतापूर्वक अपना ऋण स्वीकार करता हूं।

अिसके सिवा निम्नलिखित व्यक्तियोंको विशेष धन्यवाद देता हूं: आचार्य काका कालेलकरको प्रस्तावना लिखनेके लिये और गांधीजीकी अुनकी अपनी स्मृतियोंमें से 'आदर्श शैली' शीर्षक अेक छोटासा प्रसंग — यह प्रसंग अिस पुस्तकमें १२१ पृष्ठ पर मिलेगा — मुद्रित करनेकी अनुमतिके लिये; श्री डी॰ जी॰ तेन्दुलकर और विट्ठलभाओी के॰ झवेरीको गांधीजीके प्रति अर्पित श्रद्धांजलियोंकी अुनके द्वारा सम्पादित 'गांधीजी' नामक पुस्तकमें से दो लेख — 'सितुराज' (पृ॰ ११७) और 'अक्षरी शिक्षाका पाठ' (पृ॰ १०२) जिनमें से अेक तो मेरा ही लिखा हुआ है — अिस संग्रहमें शामिल करनेकी अनुमतिके लिये; श्री गुरुदयाल मल्लिकको अुनकी कहानी 'बच्चोंके साथ सैर' (पृ॰ १९) — यह कहानी मूलतः बम्बअीसे प्रकाशित बच्चोंकी अपनी पत्रिका 'पुष्प' में निकली थी — मुद्रित करनेकी अनुमतिके लिये; श्री पागम मधुनाथ नायक और अुनकी पुत्री डॉ॰ निरुपमा नायकको — गांधीजीने करीब बीस वर्ष पहले डॉ॰ निरुपमाको जो पत्र लिखे थे अुनमें से दो पत्रोंको अुनके मूल रूपमें मुद्रित करनेकी अनुमतिके लिये; और 'धरतीके लाल' (नअी दिल्ली) के सम्पादक श्री प्रेम जी॰ भाटियाको अिस पुस्तककी तैयारीकी प्रारम्भिक अवस्थामें दी गयी अुनकी बहुमूल्य सहायताके लिये।

नवजीवन ट्रस्टके प्रति भी मैं अपनी विशेष कृतज्ञता प्रकट करता हूं, जिसके यंग अिंडिया और हरिजन पत्रोंका मैंने अिस पुस्तकमें संगृहीत राष्ट्रपिताके जीवनके अधिकांश प्रसंगोंके लिये पूरा अुपयोग किया है।

आर॰ के॰ प्रभु

प्रस्तावना

श्री प्रभु मेरे पुराने और प्रिय मित्र हैं। अिस मित्रताका आरम्भ हुअे आज चालीस वर्षसे भी ज्यादा हो रहे हैं। अुनका पहला परिचय कराया था हम दोनों जिन्हें जानते थे अैसे अेक तीसरे मित्रने जिन्होंने मेरा प्रवेश आकाश-दर्शनमें — या अिसे मैं तारकाओंका काव्य कहता हूँ अुस काव्यमें — कराया था। परिचयका सूत्र था हम दोनोंकी समानशीलता। श्री रामचन्द्र कृष्ण प्रभु अुन दिनों लोकमान्य तिलककी अिस स्थापनाके अध्ययन और प्रतिपादनमें व्यस्त थे कि वेदोंके अनुसार आर्योंका आदिदेश अुत्तरी ध्रुव था। मुझे प्राचीन भारतीय संस्कृतिमें देश-प्रेममूलक रस तो था ही स्वभावतः मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुआी कि श्री प्रभु जैसे अेक दूसरे विद्वानका भी यही मत है कि वेद हजारों वर्ष पुराने हैं और यह कि हमारे पूर्वज भारतमें ध्रुव प्रदेशसे चलकर आये थे और अुस प्रागैतिहासिक कालसे आज तक लगातार यहीं रहते आये हैं। हम लोगोंको अेक-दूसरेके ज्यादा पास लानेवाला अेक दूसरा कारण यह था कि दोनोंको ही श्री अरविन्द घोषके जीवन अुनके कार्य और अुनकी शिक्षाओंमें गहरी दिलचस्पी थी।

पुस्तक प्रेमी होनेके कारण श्री प्रभु अुन दिनों श्री बोर्डेनके पास जिन्हें बड़ौदाके महाराज श्री सयाजीराव गायकवाड अपनी राजधानीमें केन्द्रीय लाअिब्रेरीका संगठन और विकास करनेके लिये अमेरिकासे लाये थे लाअिब्रेरीके शास्त्रका अध्ययन कर रहे थे। फिर श्री प्रभु धीरे-धीरे पत्रकारितामें लग गये और अुन्होंने अुसे ही अपना जीवन-कार्य बना लिया। अिस क्षेत्रमें अुन्हें हार्निमैन और ब्रेलवी जैसे विख्यात पत्रकारोंके साथ रहकर काम करनेका सुयोग प्राप्त हुआ। अिन वर्षोंमें अपने व्यावसायिक कार्यके साथ अुन्होंने गांधीजीके जीवन और अुनकी शिक्षाओंका गहरा अध्ययन किया। गांधीजीके लेखोंकी कतरनों या अुनमें से लिये गये अुद्धरणोंका अुनके पास अेक विशाल संग्रह है जिसका अुन्होंने विविध शीर्षकोंके अन्तर्गत वर्गीकरण कर रखा है। संग्रह अितना बड़ा है कि अुससे अनेक पुस्तकें तैयार की जा सकती हैं।

है। जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीकासे भारत आये अुस समय यूरोप अेक विशाल युद्धमें फंसा था और भारत नैराश्य और नेतृत्वके अभावसे पीड़ित अपना मार्ग अंधेरेमें टटोल रहा था। संतभूमि भारतकी सिद्धियोंके अुत्तराधिकारी भारतकी युगोंसे चली आयी समन्वय-मूलक सांस्कृतिक व्याख्याता और सारी दुनियाके कल्याणकी क्षमता रखनेवाले अेक नवीन मानवतावादके पैगम्बर गांधीजीने देशके नेतृत्वका भार अपने अूपर ले लिया। देशकी आध्यात्मिक नैतिक आर्थिक और सांस्कृतिक —सारी बिखरी हुअी शक्तियोंको अिकट्ठा किया और भारतकी आत्माकी खोज और अभिव्यक्तिके लिये अुन्हें अेक महान राष्ट्रीय आन्दोलनमें नियोजित किया। अुन्होंने देशको अैसी संगठित अेकता प्रदान की अैसी पहले कभी किसीने नहीं की थी और अहिंसक साधनोंके जरिये प्रबल ब्रिटिश साम्राज्यसे टक्कर लोहा लिया। अुन्होंने दुनियाको दो-दो जागतिक युद्धोंकी महान भीषणताके कष्टसे गुजरते देखा और भारतको गुलामीसे मुक्त करके दुनियामें आत्मशक्तिका वह अमोघ प्रवाह प्रवाहित किया जो धीरे-धीरे दुनियाकी राजनीतिको तथा अुसकी आशाओं और आकांक्षाओंको नयी दिशामें मोड़ रहा है और नया रूप दे रहा है।

महात्माजीके जीवन और अुनके कार्यकालकी परिस्थितियों पर बहुत लोगोंने बहुत कुछ लिखा है। अुनके अद्वितीय आध्यात्मिक जीवनके चित्रणका पहला प्रयत्न श्रीमाली पादरी डोक और हेनरी अेस अेल पोलकने किया था। डॉ॰ प्राणजीवन मेहता और श्रीमती अवन्तिका गोखलेने प्रेम भावसे जितना बन सका अुतना अुनके लेखोंके संग्रहका काम

है। श्री तेन्दुलकरने आठ बड़ी-बड़ी कीमती जिल्दोंमें गांधीजीकी लम्बी और पूरी जीवनी प्रगट की है और श्री प्यारेलाल जिन्हें गांधीजीके अेक निजी मंत्रीकी तरह काम करनेका असाधारण सौभाग्य प्राप्त हुआ था घटनाओंकी भीतरी जानकारी और गांधीजीके मूल पत्रोंसे सुसज्जित अुनकी जैसा वे कहते हैं सर्वांग-सम्पूर्ण जीवनी लिखनेमें व्यस्त हैं।*

गांधीजी अपने मूल स्वभावकी दृष्टिसे कर्म-परायण व्यक्ति थे। किताबें पढ़ने या लिखनेका अुनके पास समय ही नहीं था। लेकिन अुन्होंने जो कार्य अपने लिअे स्वीकार कर लिया था अुसके कारण अुन्हें समय समय पर लिखनेके लिअे बाध्य होना पड़ता था। अिसके सिवा अपने साप्ताहिकोंके लिअे तो अुन्हें लगातार प्रति सप्ताह लिखना ही पड़ता था। अिन लेखोंमें वे भारत और दुनियासे सम्बन्धित विविध विषयों पर अपने विचार प्रगट करते थे। फिर अुन्हें पत्र भी बहुत लिखने पड़ते थे। दूर और पासके सिवा तथा दुनियाके विभिन्न भागोंसे लिखनेवाले पत्र-लेखकोंको विविध प्रश्नों पर लिखे गये अुनके अिन पत्रोंकी संख्या हजारों तक पहुंचती है। अिन पत्रोंको धीरे-धीरे अिकट्ठा किया जा रहा है तथा अुन्हें सम्पादित और अनुवादित करके विविध भाषाओंमें प्रकाशित किया जा रहा है।

अिस तरह गांधीजीके जीवन और अुनके संदेशसे सम्बन्धित सामग्रीकी बहुत बड़ी राशि हमारे पास है। अुसका प्रकाशन अभी अभी शुरू हुआ है। पश्चिमके लोग बहुत व्यस्त होते हैं। दुनियामें किसी नयी विचारधारा — अुसका प्रकार जो भी हो — अुदय हो तो अनका ध्यान अुस पर तुरन्त जाता है। लेकिन अुन्होंने गांधीजी और अुनके संदेशके जो दर्शन किये हैं अुनमें अुतावलीके सिवा जब-तब अपूर्णता और अयथार्थताके दोष पाये जाते हैं। प्रकाशकोंने अुनके प्रचारमें अपना लाभ देखकर अुन्हें प्रकाशित कर दिया है। गांधीजीके विषयमें भारतमें और

* अिस जीवनीके दो भाग अंग्रेजीमें नवजीवनसे प्रकाशित हो चुके हैं: महात्मा गांधी — दि लास्ट फेज — १, २। प्रत्येक भागकी कीमत १० रुपये।

दुनियामें विशाल साहित्य निर्माण हो रहा है। मित्रों साथियों और नवजीवनके सहकारियोंका ध्यान अुनके जीवन पर — जैसा अुन्होंने मुझे देखा था — केन्द्रित रहा है। अुनके लिये अभी यह सम्भव नहीं है कि वे भारतके अिस गांधीयुगके राजनीतिक और सांस्कृतिक अितिहासका विवरण लिख सकें। सच पूछो तो दुनियाके सारे बनावोंकी विस्तृत भूमि पर गांधीयुगके प्रभावका स्पष्ट दर्शन अभी अभी होना शुरू हुआ है। फिर भी समय आ गया है जब कि हमारे लोग पिछले सौ सालोंकी — जिन्हें अिस गांधीयुगका पूर्वगामी कहा जा सकता है — घटनाओंको और जो सांस्कृतिक प्रेरणायें अुनके पीछे काम करती रही हैं अुन्हें लेखबद्ध कर डालें। यह सोचना गलत है कि यह युग गांधीजीके जन्मसे शुरू हुआ। यह १८५७ के कुछ पहलेसे शुरू हो गया था और हमें पिछले सौ सालकी व्याख्या अिस तरह कर सकना चाहिये कि यह समय अुस नव-जागृतिकी तैयारीका काल था जो महात्मा गांधीके जीवन और कार्यके माध्यमसे व्यक्त हुआ।

गांधीजीसे सम्बन्धित अिस विशाल साहित्यमें अुनके जीवनके छोटे छोटे प्रसंगोंका स्थान छोटा ही होगा पर वह होगा बहुत रसप्रद और मूल्यवान क्योंकि अुससे अुनके भिन्न और जटिल व्यक्तित्वको समझनेमें अच्छी मदद मिलती है। अेक अग्रेज तत्त्ववेत्ताकीसे सूक्तियोंमें अेक बड़ी मार्मिक बात कही है यह कहता है पूर्णता छोटी छोटी बातोंके संग्रहसे बनती है और पूर्णता छोटी बात नहीं है। गांधीजीके प्रसंगमें अिसी बातको श्री जयरामदास दौलतरामने निम्नलिखित शब्दोंमें कहा था

> आदमीकी सच्ची महत्ता अुसकी बड़ी सफलताओंमें अुतनी नहीं होती जितनी अुसके छोटे-छोटे कार्योंमें। मनुष्यके जीवनमें सबसे ज्यादा मुख्य छोटी बातोंका है अुनसे ही यह प्रकट होता है कि वह किस धातुका बना है। अुदाहरणके लिये यदि कोओी गांधीजीको अुनके जीवनको और अुनकी शिक्षाओंको जानना-समझना चाहता है तो अुसे अिस बातका अध्ययन करना चाहिये कि सच्ची मानवता क्या है और गांधीजीके दैनिक जीवन और अुनकी शिक्षाओंमें वह किस तरह काम करती थी।

श्री चन्द्रशंकर शुक्ल — महात्माजीके अपेक्षाकृत तरुण निजी सचिवोंमें से अेक — ने गांधीजीके जीवनके विविध प्रसंगोंका संग्रह करके दुनियाका अेक बड़ा अुपकार किया है। वोरा अेण्ड कं द्वारा प्रकाशित अुनकी तत्सम्बन्धी चार संग्रह-पुस्तकें अपने मानवीय रसके कारण मनोरम तो है ही गांधीजीकी विविध जीवनियोंकी पूर्ति करनेवाले प्रामाणिक अैतिहासिक लेखोंकी तरह मूल्यवान भी है। अिस क्षेत्रमें सबसे पहला प्रयत्न शायद श्री जी रामचन्द्रनका था। गांधीजीसे सम्बन्धित अपने अिस कथा-संग्रहमें अुन्होंने जो कुछ लिखा है वह मनोरंजक है और महत्त्वपूर्ण है। किन्तु वह बहुत स्वल्प है और पाठकको अुससे पूरा सन्तोष नहीं होता। मेरा अपना संग्रह ग्लीम्प्सेज ऑफ बापू * सिवनी जेलमें दोपहरके भोजनके बाद मित्रोंको सुनाओी गओी कहानियोंका फल था। अिन कहानियों या झांकियोंकी संख्या शायद और बढ़ती लेकिन मैं जेलसे अेकाअेक रिहा कर दिया गया और वे जितनी थी अुतनी ही रह गयी। बादमें अुसी तरहके और दूसरे प्रसंग लिख डालने और अुक्त संग्रहका परिपूर्ण बनानेका मुझे समय ही नहीं मिला।

और अब मेरे मित्र श्री प्रभुने यहां अिस पुस्तकमें १५ प्रसंगोंका संग्रह किया है। अधिकांश प्रसंग नये है और किसी पुराने संग्रहमें नहीं मिलते। श्री हॉरिस अेलेक्जैंडरने मेरे संग्रहकी जो आलोचना की थी वह श्री प्रभुके मौजूदा संग्रहको भी अुतनी ही अच्छी तरह लागू की जा सकती है। श्री हॉरिस अेलेक्जैंडरका कहना था कि अपनी छोटी पुस्तिकामें मैंने जो झांकियां दी हैं वे ओोधी हुओी भेड़ों जैसी मालूम होती हैं। अुन्हें न तो समय क्रमके अनुसार रखा गया है और न अुपयुक्त शीर्षक देकर अुनका वर्गीकरण किया गया है। मैं चाही कोशिश करता तो अुन्हें समय क्रमके अनुसार रख सकता था लेकिन मुझे यह जरूरी नहीं मालूम हुआ और न मुझे वही लगता है

* मूल हिन्दी पुस्तक बापूकी झांकियां और अुसका यह अंग्रेजी अनुवाद दोनों नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबादसे प्रकाशित हुअे है। मूल हिन्दी कीमत १ डाकखर्च २५ अंग्रेजी संस्करण कीमत २ डाकखर्च ८१।

कि श्री प्रभुकी कहानियोंके रस या मूल्यमें भिन्न तरहकी व्यवस्थासे काफी सुधार होगा। अुन्होंने बौद्ध कहानी-ग्रंथ अंगुत्तर-निकायकी शैलीका अनुसरण किया है। आरम्भमें अुन्होंने छोटे-छोटे प्रसंग दिये हैं और धीरे धीरे क्रमशः लम्बे प्रसंग दिये हैं। मेरा खयाल है कि मनोविज्ञानकी दृष्टिसे यह व्यवस्था काफी अच्छी है। पाठक ज्यों-ज्यों आगे पढ़ता जाता है अुसकी दिलचस्पी बढ़ती जाती है और फिर वह पूरी पुस्तक समाप्त कर डालता है। अुसमें लगनेवाले समयकी परवाह नहीं करता।

यह तो जाहिर है कि किसी महापुरुषके विषयमें लिखी गयी किसी भी बातको कहानी या प्रसंगकी संज्ञा नहीं दी जा सकती। लेकिन श्री प्रभुने अपने संग्रहको बहुत सूचक नाम दिया है — ऐसे थे बापू। किसी प्रसंग या कहानीको प्रसंग और कहानी तभी कहा जा सकता है जब कि वह किसी तरह अर्थवान हो। पढ़नेके बाद भी वह हमें कभी दिनों तक याद रहे, ऐसा गुण अुसमें होना चाहिये। अिस पुस्तकमें संगृहीत अधिकांश प्रसंग अिसी श्रेणीके हैं। ये मनको पकड़ते हैं और हमारा रस कायम रखते हैं। ये महात्मा गांधीके चरित्र पर जहां-तहां अच्छी रोशनी — और कहीं-कहीं तो सर्चलाअिटकी रोशनी — डालते हैं। लेकिन कोअी छह-सात प्रसंग ऐसे हैं जो न तो किसी तरह सूचक या अर्थवान हैं और न मनको किसी तरह प्रभावित ही करते हैं। ज्यादा बारीकी करनेवाले साहित्यिक आलोचक कहेंगे कि अुनको संग्रहमें स्थान नहीं मिलना चाहिये था। लेकिन गांधीजीके भक्त श्री प्रभुका बहुमान मानेंगे कि अुन्होंने अपनी साहित्यिक सौन्दर्यकी रुचिके बजाय वृत्तान्त-लेखकके कर्तव्यको ज्यादा प्रधानता दी और अिन प्रसंगोंका वर्णन नहीं छोड़ा।

महापुरुषोंके जीवनकी अेक विशेषता है। ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है त्यों-त्यों अुसमें परिवर्तन होता जाता है। अुनसे सम्बन्धित कथा कहानियोंकी संख्या और विविधता बढ़ती जाती है और कुछ समय बाद अुनमें से सच कौन है और बनावटी कौन है यह बताना मुश्किल हो जाता है। महापुरुषोंकी मृत्युके बाद ही नहीं अुनके जीवन-कालमें भी ऐसा होता है। मनुष्यका स्वभाव खासकर जहां वीरपूजाकी बात हो, ऐसे प्रसंगोंका चित्रण अपनी वृत्ति और रुचिके अनुसार करनेकी ओर झुकता

है। अुदाहरणके लिअे जिस खण्डके १४६ वे प्रसंगको लीजिये। जिस प्रसंगमें महात्माजी सन् १९१५ में जब पहली बार शान्तिनिकेतन गये तब अुन्होंने वहां जो छोटी-मोटी क्रान्ति कर डाली अुसका वर्णन किया गया है। अुस समय मैं वहां अवैतनिक शिक्षककी तरह काम कर रहा था और जिस छोटी-मोटी क्रान्तिमें मेरा भी कुछ हिस्सा था जिसका वर्णन मैंने अपनी बापूकी झांकियां पुस्तकमें किया है। अुक्त प्रसंग जिस पुस्तकमें जिस तरह पेश किया गया है अुसमें भी अेक के रायमें वर्णन टैगोरके मुहसे कराया है लेकिन यह वर्णन वास्तविक तथ्योंसे मेल नहीं खाता।

> जिस बीच गांधीजीने भंगियोंसे कहा कि कुछ दिनके लिअे तुम लोग कोअी काम मत करो। अुच्च जातिके लड़के अछूत भंगियोंका काम करनेकी कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। मैलेकी बदबूके मारे स्कूलमें जीना दूभर हो गया। तब गांधीजी स्वयं मलके बरतन अपने सिर पर रखकर ले गये और मैला जमीनमें गाड़ आये। अुनका यह असाधारण साहस संक्रामक सिद्ध हुआ। शीघ्र ही अच्चतम जातियों और अमीर घरोंके लड़के अछूत मेहतरोंका काम करनेका सम्मान प्राप्त करनेमें अेक-दूसरेसे होड़ लगाने लगे।

यह वर्णन वास्तविक नहीं है और बिलकुल कल्पना-प्रसूत है। गांधीजीने भंगियोंसे काम छोड़नेका कभी नहीं कहा और अैसा कोअी दिन नहीं गया जब कि टट्टियोंकी सफाअी न हुअी हो। हम कुछ शिक्षकों और विद्यार्थियोंने अुत्साहके आवेशमें अेक खाअी टट्टी जरूर अुखाड़ फेंकी थी क्योंकि गांधीजीने अुसके विषयमें यह कहा था कि वह पुराने किस्मकी स्वच्छताकी दृष्टिसे अेकदम नामुनासिब और बिलकुल बेकार थी। मैलेके बरतन सिर पर रखकर ले जानेका अुनके लिअे न तो कोअी प्रसंग ही आया और न अुनके पास जिसके लिअे समय ही था। मैं यह नहीं कहता कि वे अैसा कर नहीं सकते थे। दक्षिण अफ्रीकाके जेलोंमें अुन्होंने पाखाना सफाअीका काम कअी बार किया था। और हम आश्रमवासियोंके साथ भी अुन्होंने अुन सबों समय तक किया था। लेकिन मैलेके बरतन हम लोग सिर पर रखकर कभी नहीं ले गये। हमारे पास जिस कामके ज्यादा अच्छे तरीके थे।

प्रसंग संख्या २५ में गांधीजीके मुंहसे यह वाक्य कहलाया गया है — मेरे गुरुदेव हों या और कोअी मेरा खाना जारी रहता है। मुझे यह बात सहज नहीं मालूम होती कि गांधीजीने टैगोरको मेरे गुरुदेव कहा हो। गांधीजी हमेशा कविको गुरुदेव ही कहते थे ठीक वैसे कि कवि अुन्हें महात्मा कहते थे। मेरे गुरुदेव — यह प्रयोग गांधीजीकी अपनी स्वाभाविक मनोवृत्ति नहीं प्रगट करता। मेरे शब्दमें अेक ममतापूर्ण अतिपरिचय और अधिकारका भाव है जो अुनके स्वभावमें नहीं था।*

बंगालके अेक मित्रने मेरी बापूकी झांकियां पुस्तकमें संगृहीत अेक प्रसंगमें तथ्योंकी भूलकी ओर मेरा ध्यान खींचा था। अिसलिअे लेखक किसी घटनाका जो वर्णन दिया गया है अुसे ठीक-ठीक लेखबद्ध करनेमें कितनी भी सावधानी क्यों न रखे वह निश्चयपूर्वक यह दावा नहीं कर सकता कि वर्णित घटना घटी ही होगी। लेकिन सामान्य मनको कहानी बहुत पसन्द है और अपने पूज्यपात्रकी महत्ताको बढ़ानेके लिअे — चाहे वह अपने-आपमें कितनी ही बड़ी क्यों न हो — जरूरत होने पर वह वैसी कहानी गढ़नेमें संकोच नहीं करता।

अिसलिअे अिस्लामके पैगम्बर मुहम्मद साहबके अनुयायियोंने अुनसे सम्बन्धित प्रसंगोंको अिकट्ठा करनेमें जो सावधानी दिखाअी है हर प्रसंगकी सत्यताको अुन्होंने जिस कड़ाअीसे जांचा है अुसके लिअे अुनकी तारीफ करनी होगी और अुनका ऋण मानना होगा। गांधीजीसे संबंधित प्रसंगोंका संग्रह करनेका सबसे अच्छा अुपाय तो यह होगा कि अुनके साथी और समकालीन लोग अुनके विषयमें प्रामाणिक जितना कुछ जानते हों अुसे लिख डालें लेखक और प्रकाशक अुनके पास जो कुछ आये अुसकी जांच करें और अिस संग्रह-कार्यके लिअे समयकी कुछ मर्यादा तय कर दी जाय। अिस मर्यादाके बाद जो कुछ प्रकाशमें आये अुसे बहुत सावधानीपूर्ण जांचके बाद ही स्वीकार किया जाय और अुसकी

* काकासाहबकी यह प्रस्तावना पुस्तककी पहली आवृत्तिके लिअे लिखी गअी थी। अिसके अनुसार हिन्दी अनुवादमें सुधार करके मेरे शब्द हटा दिया गया है।

सत्यता पूरी तरह प्रमाणित करनेकी जिम्मेदारी मुझ पर ही डाली जाय जो मुझे प्रकाशमें लावें।

सिंगापुरके अेक भाअी जो डॉ. आनन्द के. कुमारस्वामीके बड़े प्रशंसक और भक्त हैं, गांधीजीके अैसे विशेष प्रसंग अिकट्ठे कर रहे हैं जो अुनके जीवनकी खासकर गैर-भारतीयोंके सम्पर्कमें प्रगट हुअी विनोद-वृत्ति पर प्रकाश डालते हैं। यह तो हम जानते ही हैं कि अुनमें विनोद-वृत्ति भरपूर थी और आजीवन रही। यहां अुदाहरणके लिअे १९वें प्रसंगको लीजिये जिसमें गांधीजी अपनी शक्तिके सम्बन्धमें किये गये प्रश्नका अुत्तर देते बताये गये हैं। अुनका यह अुत्तर गांधीजीके स्वभावके साथ जैसा मैंने अुन्हें जाना-समझा था मेल नहीं खाता। यह हो सकता है कि अुन्होंने अपने प्रारम्भिक दिनोंमें कभी अैसी कोअी बात लिखी हो। मैं यह नहीं कहना चाहता कि अुत्तरमें जो कुछ कहा गया है वह गांधीजीकी शक्तिका रहस्य नहीं बताता। लेकिन अुन्होंने जिस शैलीमें अुसे अिस तरह कहकर समझाया होगा अिस बात पर मुझे सन्देह है।

अिस पुस्तकमें संगृहीत कुछ प्रसंग तो अेकदम पहली श्रेणीके हैं। अुदाहरणके लिअे ११वें प्रसंगको लीजिये जिसमें गांधीजी डाकियेका अुल्लेख 'मैन ऑफ लेटर्स' कहकर करते हैं और अेन्थनी अीडनको राजनीतिज्ञ बतलाकर राजनीतिज्ञोंकी विशेषताका वर्णन करते हुअे कहते हैं "राजनीतिज्ञ प्रतीक्षा कर सकता है क्योंकि यह अुसका काम है। वह हमेशा तब तक प्रतीक्षा करता रहता है जब तक परिस्थिति अुसे चलनेको मजबूर नहीं कर देती।" या ४१वें प्रसंगको लीजिये जिसमें वे अपने कच्छ पहननेका कारण देते हुअे कहते हैं: "आप प्लस फोर्स पहनते हैं, मैं माअिनस फोर्स पहनना पसन्द करता हूं।" अुनका यह प्रसिद्ध प्रत्युत्तर सचमुच पहली श्रेणीका है। ४१वां प्रसंग गांधीजीके बनिस्बत [illegible] बारेमें ज्यादा बताता है लेकिन पिछलेकी तरह वह प्रथम श्रेणीका है। ५९वां आज और अधिक महत्त्वपूर्ण मालूम होगा जब कि सारा जापान और बाकी दुनिया भी अणुबम — अब तो हाअिड्रोजन बम भी आ गया है — के परिणामोंसे बेचैनी अनुभव कर रही

है। गांधीजी कहते हैं कि प्रार्थनाके माध्यमसे काम करनेवाली आत्माकी शक्ति किसी भी अणुबमकी शक्तिसे कहीं अधिक है। १२५वां प्रकरण बतलाता है कि लोगोंके मन पर गांधीजीका जैसा प्रभाव अुनके जीवन-कालमें था वैसा ही प्रभाव मृत्युके बाद भी कायम है।

गांधीजीके चरित्र-लेखकोंको भिन्न प्रसंगोंका अध्ययन और अुपयोग लाभकारी होगा क्योंकि अुनमें वर्णित छोटी-छोटी घटनायें अुनके जीवनके विभिन्न पहलुओंको जितनी अच्छी तरह प्रगट करती हैं लम्बे लम्बे निबन्ध अुतनी अच्छी तरह नहीं बता सकते। मैं आशा करता हूं कि अिस संग्रहमें वर्णित कुछ प्रसंग स्कूलोंकी पाठ्य-पुस्तकोंमें और दुनियाकी महान सूक्तियोंके और विश्वके महापुरुषोंके चरित्रके प्रसंगोंके संकलनोंमें स्थान पायेंगे।

मैं श्री प्रभुको पढ़नेवाली जनताके सामने गहरी भक्ति और प्रेम पूर्ण श्रमके साथ तैयार किया गया अैसा स्वादिष्ट भोजन परोसनेके लिये फिर अेक बार धन्यवाद देता हूं।

काका कालेलकर

अनुक्रमणिका

है। गांधीजी कहते हैं कि प्रार्थनाके माध्यमसे काम करनेवाली आत्माकी शक्ति किसी भी अणुबमकी शक्तिसे कहीं अधिक है। १२५वां प्रसंग बतलाता है कि लोगोंके मन पर गांधीजीका जैसा प्रभाव अुनके जीवन-कालमें था वैसा ही प्रभाव मृत्युके बाद भी कायम है।

गांधीजीके चरित्र-प्रेमियोंको अिन प्रसंगोंका अध्ययन और अुपयोग लाभकारी होगा क्योंकि अुनमें वर्णित छोटी-छोटी घटनायें अुनके जीवनके विभिन्न पहलुओंको जितनी अच्छी तरह प्रगट करती हैं लम्बे लम्बे निबन्ध अुतनी अच्छी तरह नहीं बता सकते। मैं आशा करता हूं कि अिस संग्रहमें वर्णित कुछ प्रसंग स्कूलोंकी पाठ्य-पुस्तकोंमें और दुनियाकी महान विभूतियोंके और विश्वके महापुरुषोंके चरित्रके प्रसंगोंके संग्रहोंमें स्थान पायेंगे।

मैं श्री प्रभुको पढ़नेवाली जनताके सामने गहरी भक्ति और प्रेम-पूर्ण श्रमके साथ तैयार किया गया ऐसा स्वादिष्ट भोजन परोसनेके लिये फिर अेक बार धन्यवाद देता हूं।

काका कालेलकर

अैसे थे बापू

मौतका सपना

मैं नहीं मानता कि श्री गणेशशंकर विद्यार्थीका बलिदान व्यर्थ गया है। अुनकी वीर-वृत्तिसे मुझे सदा प्रेरणा मिलती थी। मुझे अुनकी कुर्बानीसे अीर्ष्या है। क्या यह आघात पहुंचानेवाली बात नहीं है कि अिस देशने दूसरा गणेशशंकर पैदा नहीं किया? अुनके बाद अुनकी खाली जगह भरने कोअी नहीं आया। गणेशशंकरकी अहिंसा पूर्ण अहिंसा थी। मैं भी अपने सिर पर कुल्हाड़ीके आघात सहता हुआ अिसी तरह शान्तिसे मर सकूं तो मेरी अहिंसा भी पूर्ण होगी। मैं अैसी मौतका सपना सदा ही देखा करता हूं और मैं अिस सपनेको सदा बनाये रखना चाहता हूं। यह मृत्यु कितनी सुन्दर होगी जब अेक ओरसे मुझ पर खंजरका वार होगा दूसरी तरफसे कुल्हाड़ीकी चोट पड़ेगी तीसरी दिशासे लाठीका प्रहार होगा और सब तरफसे लात-घूंसे और गालियां पड़ेंगी और यदि अिन सबके बीचमें मैं अवसरके अनुरूप अूंचा अुठकर अहिंसक और शान्त बना रह सका और दूसरोंको भी वैसा ही आचरण और व्यवहार करनेका अनुरोध कर सका तथा अन्तमें अपने चेहरे पर प्रफुल्लता और होंठो पर मुस्कराहटके साथ मर सका तभी मेरी अहिंसा पूर्ण और सच्ची सिद्ध होगी। मैं अैसे अवसरके लिअे तड़प रहा हूं और यह भी चाहता हूं कि कांग्रेसजन अिस प्रकारके मौकेकी तलाशमें रहें।”

[यह सन्देश महात्मा गांधीने श्री गणेशशंकर विद्यार्थीकी जो १९३१ में कानपुरके हिन्दू-मुस्लिम दंगेमें मारे गये थे शहादतके वार्षिकोत्सवके अवसर पर भेजा था।]

१ जीवन-बूटी

अेक आगन्तुकने गांधीजीसे यह सवाल किया: "क्या आपके जैसोंके जीवनमें विनोद-वृत्तिकी जरूरत है?" अुनका जवाब यह था: "मुझमें विनोद-वृत्ति न होती तो मैंने कभीकी आत्महत्या कर ली होती।"

२ विदाअी-अुपहार

अेक अंग्रेज पत्रकार महात्माजीसे अुनके मरनेके कुछ ही समय पहले मिले थे। अुन्होंने पूछा: "गांधीजी, आपके पास मेरे लिये कोअी चीज है?" अुत्तर मिला: "और तो कुछ नहीं, मेरा प्यार चाहें तो ले लीजिये।"

३ सिंह और मेमना

टाअिम्स ऑफ अिंडिया के नागपुरके प्रतिनिधिने पूछा: "साल भरके भीतर आपका स्वराज्य स्थापित हो जाय तो अंग्रेजोंका क्या होगा?" गांधीजीने जवाब दिया: "सिंह और मेमना दोनों अेकसाथ रहने लगेंगे।"

४ अुनका धर्म

महात्माजीसे मुलाकात करते समय अेक नौजवान अमरीकी मिशनरीने अुनसे पूछा कि आप कौनसा धर्म मानते हैं और भारतके भावी धर्मका क्या स्वरूप होनेकी संभावना है।

अुनका अुत्तर बहुत मार्मिक था। अुनने कमरेमें लेटे हुअे दो बीमार आश्रमवासियोंकी ओर अिशारा करके कहा: "मेरा धर्म सेवा करना है। भविष्यकी चिन्ता मैं नहीं करता।"

५ जब बर्नार्ड शा गांधीजीसे मिले

१९३१ के अन्तिम दिनोंमें जब गांधीजी लंदनमें ठहरे हुअे थे तब जार्ज बर्नार्ड शा अुनसे मिलने आये। अिस मुलाकातका वर्णन करते हुअे शाने कहा — जब मैं गांधीसे मिलने गया तो मैंने देखा कि वे अेक बहुत बड़ी गद्देदार कुर्सी पर बैठे असुविधा अनुभव कर रहे थे। मैंने स्थितिको तुरत भांप लिया। मैंने कहा — आप घरकी तरह यहां भी फर्श पर ही क्यों नहीं बैठ जाते? मैं भी फर्श पर ही बैठ गया और क्षणभरमें हम मित्र बन गये।

६ जन्मदिनका संदेश

२ अक्तूबर, १९३१ को गांधीजीके जन्मदिनके अवसर पर विश्व-धर्म संघ (World Fellowship of Faiths) के संयोजकोंने अुनसे अेक सन्देश भेजनेका अनुरोध किया था। गांधीजीने अुन्हें यह अुत्तर भेजा था —

मैं जो जीवन जी रहा हूं यदि अुसके द्वारा मैं कोअी सन्देश नहीं दे रहा हूं तो लेखनी द्वारा क्या संदेश भेज सकता हूं?

७ शराबकी बुराअी

१९३१ के अन्तिम दिनोंमें जब गांधीजी लंदनमें ठहरे हुअे थे तब अुनके अेक अंग्रेज विद्यार्थीने पूछा — आप अुन लोगोंके प्रति जो शराब पीते हैं अितने अनुदार क्यों हैं?

क्योंकि अिस अभिशापके परिणामोंसे जिन्हें कष्ट होता है अुनके प्रति मैं अुदार हूं — गांधीजीने अुत्तर दिया।

८ जन्म-दिवसकी थैली

२ अक्तूबर, १९४७ को गांधीजीके जन्म-दिवस पर अुन्हें भेंट करनेके लिये अेक भारी थैली अिकट्ठी की गयी थी। अुस पर आँखें नचाते हुअे श्रीमती सरोजिनी नायडूने पूछा — "मान लीजिये यह थैली आपको भेंट न करके मैं लेकर चलती बनूं तो आप क्या करेंगे?"

गांधीजी — "मैं जानता हूं कि तुम यह भी कर सकती हो!" (हंसी)

९ सफलताका रहस्य

मसुरामीके अुत्तरमें कोअी १ मील दूर, शिवालिककी पहाड़ीकी तलहटीमें गांधीग्राम नामक अेक संस्था है जो गांधीजीके बताये हुअे मार्ग पर रचनात्मक कार्यमें लगी हुअी है। ७ अक्तूबर, १९४७ को बंबअीके मुख्यमंत्री श्री बाळासाहब खेरने अुसका अुद्घाटन किया था। अुस अवसर पर महात्माजीने यह छोटासा सन्देश भेजा था — "जहां सत्यका साम्राज्य है वहां सफलता हाथ बांधे खड़ी रहती है।"

१० क्या दुनिया सुधर रही है?

अेक मुलाकातीने पूछा — "दुनिया सुधर रही है या बिगड़ रही है?"

गांधीजीने अुत्तर दिया — "जब तक मेरा परोपकारी अीश्वरमें विश्वास है मुझे यह श्रद्धा रखनी चाहिये कि भले दिखाअी दूसरी ही बात देती हो परन्तु दुनिया जरूर सुधर रही है।"

११ 'तुम्हारा क्या हुआ?'

१[illegible] में जब गांधीजी यरवडा जेलमें थे तब कस्तूरबा कुछ आश्रमवासियों सहित अुनसे मिलने गयी। गांधीजीने और सबोंके साथ साथ जमनालालजी और किशोरलाल मशरूवालाकी भी पूछा। अुन्हें बताया गया कि वे जेल चले गये हैं। यह समाचार सुनकर गांधीजी बहुत ही खुश हुअे मगर अुन्हें अिस बात पर आश्चर्य हुआ कि कस्तूरबा स्वयं अभी तक बाहर ही हैं।

"मेरा नसीब ही नहीं। मैं क्या करूं?" कस्तूरबा बोलीं।

१२ काली बिल्ली

१९३१ में गांधीजी मि. जायड वार्लेसे फर्टमें बुनके घर मिलने गये थे। मि. जायड वार्लेने बुस समयका अेक मजेदार किस्सा सुनाया। ज्यों ही गांधीजी घरमें अपनी कोच पर बैठे त्यों ही अेक काली बिल्ली जो पहले कभी नहीं देखी गयी थी खिड़कीमें से आयी और गांधीजीकी गोदमें बैठ गयी। जब गांधीजी चले गये तो बिल्ली भी गायब हो गयी और फिर कभी लौट कर नहीं आयी। वही बिल्ली अेक बार फिर कुछ समय आयी थी जब कुमारी स्लेड (मीराबहन) मि. जायड वार्लेसे फर्टमें मिलने गयी थीं।

१३ टगोरको जन्म-दिवसका संदेश

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोरको बुनके ८०वें जन्म-दिवस पर महात्मा गांधीकी ओरसे यह सन्देश प्राप्त हुवा

"चार बीसी काफी नहीं हैं। भगवान करे आपकी पांच बीसी पूरी हों। प्रेम।

गुरुदेवका बुत्तर था

"सन्देशके लिये धन्यवाद। परन्तु चार बीसी ही बहुत ज्यादा हैं पांच बीसी तो असह्य हो जायगी।"

१४ महात्माजी और पूंजीपति

अेक बड़े पूंजीपति और व्यवसाय-स्वामीने अेक बार गांधीजीसे यह प्रश्न किया राष्ट्रके कामके लिये आप मुझे चाहते हैं या मेरा धन?"

बुन्हें सीधा जवाब मिला।

मैं व्यवसाय छोड़कर आपके साथ हो जाउं तो आप मुझे क्या काम बतायेंगे?

चरखा" गांधीजीने चरखा चलाते चलाते बुत्तर दिया।

१५ 'अीश्वरका अनमानुस'

दूसरी गोलमेज परिषदके सिलसिलेमें १९३१ के लंदनके निवासकालमें गांधीजीको लेडी अेस्टरने अेक दोपहरके भोजमें आमंत्रित किया था। जब वे शाल ओढ़े और घुटनों तक धोती पहने मेज पर बैठे, तो लेडी अेस्टरने अपनी हमेशाकी विनोदवृत्तिके अनुसार अपने विशिष्ट अतिथिको 'नाथिस्ट* मैन ऑफ वॉर' बताया। अिस मजाकसे प्रसन्न होकर गांधीजी हंसे और फौरन् जवाब दिया "और तुम नाथिस्ट* वोमैन ऑफ वॉर हो!"

१६ चायको नमस्कार!

"गांधीजी अपने तीसरे पहरके चायके प्यालेका मजा लिया करते थे। लेकिन अेक दिन मैंने गंभीरतासे और कुछ मजाकमें अुन्हें यह पूछकर विचारमें डाल दिया कि क्या आपका नियमित रूपसे यह नशीला पेय लिये बिना काम नहीं चल सकता? तुम्हारा क्या मतलब? अुन्होंने जरा चिन्ताके साथ पूछा। मैंने अुत्तर दिया क्यों क्या चाय अुत्तेजक या नशीला पदार्थ नहीं है? जरा सोचकर वे गंभीर होकर बोले है तो जरूर। और अुसी दिनसे चाय निषिद्ध हो गअी। — वेजिटेरियन न्यूज में मि. अेच. अेस. अेल. पोलाक।

१७ बकिंघम महलमें

गांधीजीके पोशाक सम्बन्धी रिवाजोंसे आजाद रहनेकी हद अुस समय हो गअी जब मैंने देखा कि वे अपनी धोती पर कम्बल लपेटे हुअे गोलमेज परिषदके प्रतिनिधियों और दूसरे मेहमानोंके सम्मानमें दिये गये शाही भोजमें राजा और रानीसे मिलनेके लिअे बकिंघम महलकी पगथियों पर चढ़ रहे हैं। मेरा खयाल है कि अिससे पहले कोअी आगन्तुक अिस वेशमें वहां नहीं देखा गया होगा और न आसानीसे यह

* नियमन या मर्यादाको स्वीकार न करनेवाला।

कल्पना ही की जा सकती है कि और किसीको अुस महकमेमें कितनी स्वतंत्रता दी गयी होगी। —सर अमुक कादिर।

१८ जीवन-बीमा

गांधीजीको आगरेके अेक मित्रने पूछा : आपने अपने जीवनका बीमा कराया है?

गांधीजीका अुत्तर यह था : मैंने १९०१ में अपने जीवनका बीमा जरूर कराया था लेकिन थोड़े समय बाद मैंने अुसे छोड़ दिया। क्योंकि मुझे महसूस हुआ कि मैं अीश्वर पर अविश्वास कर रहा हूं और अपने अुन रिश्तेदारोंको जिनके हितमें बीमा कराया गया था अपने पर या अुस रकम पर जो मैं अुनके लिअे छोड़ जाअूंगा आश्रित बना रहा हूं। अुन्हें मैं अीश्वर पर या अपने आप पर आश्रित नहीं बना रहा हूं। बीमा छोड़ते समय मैं जिस राय पर पहुंचा था वह बादके अनुभवसे पक्की हो गयी है।

१९ केबिनमैनकी युक्ति

गांधीजीकी अप्रैल १९४५ की बम्बअीसे दिल्लीकी यात्रामें जब अुनकी स्पेशल गाड़ी पश्चिमी रेल्वेमार्गके बंगापुर स्टेशनके पास पहुंची तो अेक नौजवान मुसलमान केबिनमैनने जो बड़ा ड्यूटी पर था गाड़ीको सिगनल वालेका संकेत न बताकर रोक दिया। फिर वह गांधीजीके दर्शनोंके लिअे दौड़ा-दौड़ा अुनके डिब्बे पर पहुंचा। गांधीजीको सम्बोधन करके वह युवक बोला : कितने वर्षोंसे मैं आपके दर्शनोंकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह अिच्छा मेरी आज पूरी हुअी। कृपा करके अपने दिल्ली-मिशनमें हम लोगोंका ध्यान रखिये।

२० प्रार्थनाकी शक्ति

हिन्दू-मुस्लिम अेकता करानेके लिये महात्माजीने सितम्बर १९२४ में २१ दिनका अुपवास किया था। अुसके दौरानमें जब डॉक्टरने देखा कि अुपवासके बारह दिनके अन्तमें गांधीजी अत्यन्त दुर्बल हो गये हैं, तो अुन्होंने गांधीजीसे शरीरके नष्ट हो जानेकी आशंका प्रगट की। गांधीजीकी आंखोंमें सूर्यके प्रकाशकी-सी मुसकान चमक अुठी और अुन्होंने जितना ही अुत्तर दिया आप प्रार्थनाकी शक्तिको भूल गये हैं।

अन्तमें प्रार्थनाकी शक्तिकी सचमुच विजय हुअी क्योंकि जैसा दुनियाको मालूम है, गांधीजी अुस संकटको पार करके जीवित रहे।

२१ 'आसे पूछिये'

जब गांधीजी १९३१ की गोलमेज परिषदके सिलसिलेमें लंदनमें थे तब श्रीमती युस्टेस माअिल्सने अुनसे पूछा आपको कभी गुस्सा आता है?

श्रीमती बाअीसे पूछिये सीधा ही अुत्तर मिला वे आपको बतायेंगी कि मैं संसार भरसे बहुत अच्छा बरताव करता हूं मगर अुनसे नहीं करता। अुत्तर सुनकर श्रीमती माअिल्स गांधीजीकी विनोद-वृत्ति पर और भी प्रसन्न हो गयी।

वे बोलीं मेरे पति तो मुझसे बहुत अच्छी तरह पेश आते हैं।

तो गांधीजीने पकड़ कर कहा मुझे विश्वास है कि मि माअिल्सने आपको भारी रिश्वत दे रखी है।

२२ अुनकी विनोद-वृत्ति

जिन बातोंको जानकर अनेक अंग्रेज लोगोंको खुशी हुअी अुनमें से अेक यह थी कि जिस बड़े महात्मामें भी विनोद और हंसीकी वैसी ही वृत्ति है जैसी हममें है। मुझे कुछ दूर तक अुनके अपनी मोटरमें बैठाकर ले जानेका सौभाग्य मिला था। रास्तेमें अुन्होंने मुझे अपनी सम्मानसूचक अुपाधिके बारेमें पूछा। वे बोले आपके नामके साथ लगा हुआ यह डी डी का पुछल्ला क्या है? मैंने समझाया कि यह डॉक्टर

मॉड डिवीनिटी*की अुपाधि है जो ग्लासगो विश्वविद्यालयने मेरा सम्मान करनेको मुझे प्रदान की है। अच्छा " अुन्होंने कहा तो आपको श्रीश्वरका सब हाल मालूम है? —कुमारी मॉड रॉयडन

२३ 'जगतका प्रकाश'

जब अछूतों के सुधारके प्रश्नकी चर्चा हो रही थी तब अेक वयस्क युवकने गांधीजीसे पूछा "महाराज जब अुन लोगोंने आपको कन्याकुमारीके मंदिरके भीतर जानेसे रोका तो आप अुसमें जबरदस्ती क्यों नहीं घुस गये? यह अैसा अपमान था जो आपको सहन नहीं करना चाहिये था। महाराज आप तो जगतका प्रकाश हैं? आपको बाहर रखनेवाले वे होते ही कौन हैं?

हां गांधीजीने हंसकर कहा "या तो मैं जगतका प्रकाश नहीं था और अुनका मुझे बाहर रखना ठीक ही था या मैं जगतका प्रकाश हूं और अुस हालतमें मुझे जबरन् भीतर नहीं जाना चाहिये था।

२४ कायरतासे हिंसा अच्छी है

गांधीजी सदा यह बात स्पष्ट करते रहते थे कि अुनका अहिंसा-धर्म वीरोंका धर्म है। लेकिन जहां कायरता और हिंसाके बीच चुनाव करना पड़े वहां अुनकी साफ राय थी कि वे हिंसाको कायरता पर तरजीह देते हैं। अिस विषयकी चर्चा करते हुअे गांधीजीने यंग अिंडिया में अेक लेखमें अिस प्रकार लिखा था अुदाहरणके लिअे जब मेरे सबसे बड़े लड़केने पूछा कि १९०८में जब आप पर सख्तजान घातक हमला हुआ था अुस समय मैं मौजूद होता तो मुझे क्या करना चाहिये था? क्या मैं भाग जाता और आपको मरने देता या जितना भी शरीर-बल मुझमें था और जिसका मैं अुपयोग करना चाहता अुसे काममें लेकर मुझे आपकी रक्षा करनी चाहिये थी? तब मैंने अुससे कहा कि हिंसाका अुपयोग करके भी मेरी रक्षा करना तुम्हारा धर्म था।

* श्रीश्वर तत्त्वका सम्पूर्ण ज्ञान रखनेवाला धर्मशास्त्रका ज्ञाता।

२५ खुद अपने पर हंसी

दिसम्बर १९४ में जब गांधीजी शान्तिनिकेतन गये तो अुन्हें अेक चित्र दिखाया गया। अुसमें वे कविवर रवीन्द्रनाथके साथ अुसी कमरेके सामने बैठे हुये थे जहां विश्वविख्यात गीतांजलि लिखी गअी थी।

जब गांधीजी यह चित्र देख रहे थे तो किसीने कह दिया "बापूजी जब यह चित्र लिया गया था तब आप कुछ खा रहे थे।" गांधीजीने चित्र अपने हाथोंमें लेकर कुछ देर अुसे देखा और खिलखिला कर बोले सुबह ही था और कोअी मेरा खाना तो चलता ही रहता है।

२६ 'थियॉसॉफिस्ट नहीं'

गांधीजीसे यह पूछने पर कि आप कभी थियॉसॉफिकल सोसायटीके सदस्य रहे हैं या नहीं अुन्होंने यह कहा बताते हैं — मैं सदस्य कभी नहीं रहा पर अुसके विश्वबन्धुत्व और अुससे फलित अुसके सहिष्णुताके सन्देशके साथ मेरी सहानुभूति सदा रही है।

अुन्होंने यह भी कहा थियॉसॉफिकल मित्रोंका मैं बहुत ऋणी हूं अुनमें मेरे अनेक मित्र हैं। आलोचक लोग मैडम ब्लावट्स्की या कर्नल ऑल्कॉट या डॉ बेसेण्टके विरुद्ध कुछ भी कहें मानवताको अुनकी देन सदा अूंचे दर्जेकी मानी जायगी। मिस समाजमें भरती होनेमें मेरी रुकावट अुसका गुप्त पहलू — अुसकी गूढ़ विद्या रही है। अुसने मुझे कभी आकर्षित नहीं किया।

२७ अुसका दैनिक भोजन

[illegible] के सम्पादक [illegible] १४ में गांधीजीसे मिलने [illegible] मनगाभानस दैनिक भोजन अुनका प्रश्न करने पर गांधीजीने बताया

[illegible] दैनिक भोजनमें क्या लेता हूं आठ बजे नाश्तेमें मैं १८ औंस बकरीका दूध और [illegible] रहता है दोपहरके भोजनमें अेक बजे मैं [illegible] या और थोड़ा फल लेता हूं। मेरा

शामका खाना ५ और ६ बजेके बीचमें होता है। मैं अेक चम्मच भर बादामकी चटनी बीस तीस खजूर, कच्ची टमाटर और हरी पत्तियोंका सलाद खाता हूं। जिससे बदहजमी नहीं होती। आप देखेंगे कि मैं स्टार्च या अन्न नहीं खाता।

२८. 'आजादीकी कीमत मौत'

आजादीकी कीमत मौत है — यह लगभग भविष्यवाणी जैसा वचन गांधीजीके अुन पत्रोंमें से अेकमें था जो अुन्होंने बीकानेरके डॉ. घोष गुरुदत्तको अपनी मृत्युसे थोड़े ही पहले लिखे थे। डॉ. और श्रीमती घोष गुरुदत्त काफी लम्बे समय तक गांधीजीके सेवाग्राम आश्रमके निवासी रहे थे। और गांधीजी स्वयं काफी लम्बे अर्से तक अुन्हें स्वामी पाखाना-सफाओ और भोजन बनाने आदिकी शिक्षा देते रहे थे और अुनका मार्ग-दर्शन करते रहे थे। जब वे आश्रम छोड़कर जा रहे थे तो अुन्हें गांधीजीकी ओरसे यह विदाओ संदेश मिला था "मेरे जीवनमें जो बात अच्छी लगे अुसीका अनुसरण कीजिये।

२९ 'वन्दे मातरम्'

अगस्त १९४७ में अपने कलकत्तेके निवासकालमें गांधीजीने अपने अेक प्रार्थना-प्रवचनमें वन्दे मातरम्का जिक्र किया। अुसे प्रार्थनाके ठीक पहले अेक महिलाने गाया था। जब गीत शुरू हुआ तो विशाल जनसमूह खड़ा हो गया और भक्तिपूर्वक खड़ा रहा।

महात्मा गांधी अकेले ही बैठे रहे क्योंकि अुन्होंने बादमें बताया मैंने यह सीखा है कि हमारी संस्कृति यह नहीं चाहती कि जब कोओ राष्ट्रीय गीत या भजन गाया जाय तब सम्मानके चिह्नस्वरूप हमें खड़ा होना चाहिये। मेरे खयालसे यह पश्चिमसे आयी हुओ अनावश्यक वस्तु है। आखिर तो महत्त्व मानसिक वृत्तिका है, न कि अूपरी दिखावेका।"

३० सच्चे योगीकी भांति

अपने कोंकणके दौरेमें गांधीजी संयोगवश अेक गांवमें आधी रातको पहुंचे। ग्रामवासी घंटोंसे अुनके आनेकी अुत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने भाषणमें गांधीजीने अुनसे कहा: "मैं नहीं जानता कि आपको कितनी देर तक अिंतजार करते रहनेके लिये मैं आप लोगों पर दया करूं या अपने आप पर। परन्तु हमने वही किया है जो गीताका योगी करता है। साधारण मनुष्योंके सोनेकी जो रात होती है वह योगीके जागनेका दिन होता है। मैं आपको आपके अिस योगाभ्यास पर बधाई देता हूं। परन्तु यदि आप गरीबोंकी सहायता करके और हमारी खादी खरीद कर यह दिखा दें कि आप सच्चे योगी हैं तो आप मेरी बधाईके ज्यादा हकदार होंगे।" गांधीजीके अिन विनोद-वचनों पर लोगोंको प्रसन्नता हुअी और हंसी आअी।

३१ शिष्ट प्रत्युत्तर

जनवरी १९३ में कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर साबरमती आश्रम आये थे। अुन्होंने गांधीजीसे कहा: "महात्माजी, मैं अब ७० वर्षका हो गया हूं और अिसलिये आपसे अुमरमें बहुत बड़ा हूं।"

गांधीजीने हार्दिक मुस्कराहटके साथ कहा: "परन्तु अेक ६० वर्षका बूढ़ा नाच नहीं सकता जब कि ७० वर्षका जवान कवि नाच सकता है।" कविने कहा: "यह सच है।" और बोले: "आप दूसरी नाट्यरास-चिकित्सा की तैयारी कर रहे हैं। शाम को मुझे भी मौका दें।"

गांधीजी बोले: "मगर आपका चाल चलन ठीक नहीं है।" अिस पर आश्रमवासियोंमें जो आनन्द अिन दो महान सपूतोंके विनोद-वाक्यका आनन्द ले रहे थे हंसी गूंज अुठी।

३२ 'शुभ-आगमन' या 'शुभ-गमन'?

अनेक अवसरों पर गांधीजीकी विनोद-वृत्ति अप्रत्याशित ढंगसे प्रकट हो जाती थी। नवम्बर १९३३ में मध्यप्रदेशके दौरेमें अुन्हें लोगोंमें जो वस्तुअें भेंट की गयी थीं अुन पर 'शुभ-आगमन' शब्दके स्थान पर 'शुभ-गमन' लिखा हुआ था। अिसका हवाला देकर गांधीजीने कहा, "चूंकि आप चाहते हैं कि मैं चला जाअूं, अिसलिअे मैं जल्दी ही बैतूल पहुंच जाअूंगा।"

यहींकी बात है। म्युनिसिपल अध्यक्षने अभिनन्दन-पत्र पढ़ा और अुसे अुठा ही लेकर चलने लगे कि गांधीजीने कहा, "आप अिसे नहीं ले जा सकते। अिसे तो मुझे देना है।" अुनकी बातसे श्रोताओंमें बड़ी हंसी हुअी।

३३ प्रधान मंत्रीसे पहले डाकिया

'डेज विद बर्नार्ड शा' के लेखक मि. थेस विन्स्टेनका गांधीजीसे १९३१ में जब वे लंदन गये थे परिचय हो चुका था। अुनके कथनानुसार अेक बार तत्कालीन ब्रिटिश प्रधान मंत्री मि. रैम्जे मैकडोनाल्ड गांधीजीसे किसी जरूरी सलाह-मशविरेके लिअे आये। परन्तु तभी बाजूसे नाअिट्स ब्रिज तक पैदल चलकर अेक डाकिया भी आया था क्योंकि अुसे भारतके महान नेताको प्रणाम करनेकी अिच्छा थी।

"मैं पहले 'मैन ऑफ लेटर्स'* से मिलूंगा," गांधीजीने निश्चयपूर्वक कहा और फिर मि. विन्स्टनको समझाया, "देखिये, राजनीतिज्ञ प्रतीक्षा कर सकता है क्योंकि यह अुसका काम है। वह हमेशा तब तक प्रतीक्षा करता रहता है जब तक परिस्थिति अुसे चलनेको मजबूर नहीं कर देती।"

---

* 'मैन ऑफ लेटर्स' में श्लेष है, अुसका अर्थ है — विद्वान आदमी। यहां अुसका प्रयोग डाकियेके लिअे किया गया है।

३४ पितृत्वकी होड़

१९३१ में जब गांधीजी लंदन गये थे तो किंग्सले हॉलमें ठहरे थे। वहां अुनके हस्ताक्षर लेने बहुत लोग आते थे। गांधीजीके अिन भक्तोंमें अेक भूतपूर्व जल-सैनिक भी था। अिस सिलसिलेमें गांधीजीको अुसका जो परिचय दिया गया था अुसमें यह भी कहा गया था कि अुसने कुछ वर्ष मीराबहनके पिताकी नौकरी की थी और अुसका दामाद गांधीजीको खूब मुहैया कर रहा है।

तुम्हारे कितने बच्चे हैं? गांधीजीने अुससे पूछा।

महाराज आठ हैं। चार लड़के और चार लड़कियां।"

मेरे चार लड़के हैं गांधीजी बोले "अिसलिये मैं तुम्हारे साथ आधी दूर ही दौड़ लगा सकता हूं।" सारा समुदाय अट्टहास कर अुठा।

३५ अुनकी शक्तिका रहस्य

गांधीजीकी शक्तिका रहस्य क्या था? अिसका अुत्तर अेक बार अुन्होंने स्वयं दिया था

रहस्य?
गर्म हृदय
पूरा आत्म संयम
ठंडा दिमाग
अीश्वरका नियमित नाम
शाकाहारी भोजन और मिठाअी-मुरब्बे परहेज
मदिरा धूम्रपान और मसालोंसे परहेज
सादा शाकाहारी भोजन
सब मानव मात्रसे प्रेम।

१६ मनुष्य और मशीन

जब १९११ में गांधीजी बर्मिंघम गये थे तब बर्मिंघमके बिशप अुनसे मिले थे। अुन्होंने विज्ञान और मशीनोंकी बहुत प्रशंसा की। अुन्होंने कहा कि ये मनुष्यको शरीर-श्रमसे मुक्त करनेको बनाये गये हैं, ताकि वह अपना सारा या अधिकांश समय बौद्धिक कार्यमें लगा सके।

गांधीजीने बिशपको अिस पुरानी कहावतके आधार पर कि बेकार हाथोंको शैतान सदा कुछ न कुछ काम पूरा ही देता है याद दिलाया कि अिस बातका कोओी भरोसा नहीं कि औसत आदमी अपने सारे फालतू समयका सदुपयोग ही करेगा। परन्तु बिशपने अिसे स्वीकार नहीं किया। वे बोले देखिये मैं अेक घंटे रोजसे ज्यादा शारीरिक काम नहीं करता। बाकीका अपना समय मैं बौद्धिक कामोंमें लगाता हूं।

गांधीजीने हंसकर कहा मुझे मालूम है परन्तु सभी बिशप बन जायें तो बिशप लोगोंका धंधा ही जाता रहे।”

१७ अेक मिशनरीका अुत्साह

२८ जुलाओी १९२५ को कलकत्तेकी औसाओी युवतियोंकी संस्थाके भवनमें औसाओी मिशनरियोंकी अेक सभामें भाषण देते हुओ गांधीजीने लन्दन और दक्षिण अफ्रीका दोनों जगहोंके औसाअियोंके साथ बंधे अपने सम्पर्कका हाल सुनाया। अुन्होंने कहा

मेरे जीवनमें अेक समय अैसा भी था जब मेरे अेक बहुत सच्चे और घनिष्ठ मित्र अेक महान और भले क्वेकरकी नीयत मुझ पर बिगड़ी थी (हंसी)। अुनका खयाल था कि मैं अितना भला हूं कि मुझे औसाओी हो ही जाना चाहिये। मुझे दुःख है कि मैंने अुन्हें निराश किया। दक्षिण अफ्रीकाके मेरे अेक मिशनरी मित्र अब भी मुझे लिख कर पूछते रहते हैं आपका क्या हाल है? मैं अपने मित्रको सदा यही कहता हूं कि जहां तक मैं जानता हूं मेरा हाल बिलकुल अच्छा है।”

४० हरिजन-सेवा

ठक्करबापा जयन्ती स्मारक ग्रन्थमें लिखते हुअे श्रीमती रामेश्वरी नेहरू बयान करती हैं कि गांधीजी अेक बार वर्धामें हरिजन-सेवक-संघके सदस्योंके समक्ष भाषण दे रहे थे और बता रहे थे कि वे अुनसे हरिजनोंके प्रति कर्तव्य-पालनकी कैसी आशा रखते हैं। सबके ब्राह्मण सदस्योंमें से अेकने जिनका अुनकी अुत्कृष्ट हरिजन-सेवाके कारण बहुत मान था गांधीजीसे पूछा 'जो कुछ हम पहलेसे कर रहे हैं अुसके अतिरिक्त और क्या करनेकी आप हमसे आशा रखते हैं?' जवाबमें तुरन्त यह सवाल आया 'आप विवाहित हैं?' सदस्यने अुत्तरमें हां कहा तो श्रीमती नेहरू कहती हैं कि गांधीजीका चेहरा चमक अुठा और अुन्होंने बड़े प्यारके साथ कहा 'तो आपको अपने पुत्रका विवाह हरिजन कन्यासे कर देना चाहिये। अब आप समझ गये कि मैं आपसे और क्या करनेकी आशा रखता हूं?'

४१ महात्माजी और दर्पण

कैरोल नामक अेक व्यवसायी व्यंग-चित्रकारने गांधीजीकी सायंकालिक प्रार्थनाके बाद नयी दिल्लीकी भंगीबस्तीमें अुन्हें तपोमग्न देखकर अुनका व्यंगचित्र खींचा।

पेरिस विश्वविद्यालयके प्राध्यापक फोकनने जो कुछ समयके लिये वहां गांधीजीसे मिलने आ गये थे वह चित्र गांधीजीको भेंट किया। गांधीजीने अुत्सुक दृष्टिसे अुसे देखा और अुसकी कला पर अत्यन्त प्रसन्नता प्रगट करके बोले 'चित्र है तो अच्छा मगर चित्रकारने मेरे कान अितने लम्बे क्यों बनाये हैं?'

प्राध्यापकने अुत्तर दिया 'अिसलिये कि आपके कान हैं ही अैसे।"

गांधीजी मुस्कराकर बोले 'मैं कभी दर्पण नहीं देखता। अिसलिये मुझे पता नहीं कि मेरे कान अितने लम्बे हैं।'

४२ गरीबोंके बचावका अुपाय

साबरमती आश्रमके निवासियोंको जिन अनेक समस्याओंका सामना करना पड़ता था अुनमें से अेक मलेरियाकी थी। आश्रममें बरसातके बाद हर साल मलेरियाका आगमन होता था। कारण और बचावके अुपायोंके बारेमें डॉक्टरोंकी सलाह ली जाती थी तब अकसर जो अुपाय बताये जाते थे अुनमें अेक यह था कि मच्छरदानीका अुपयोग किया जाय।

सब कैसे मच्छरदानी रख सकते हैं? क्या कोअी अैसा अुपाय नहीं है जो गरीबसे गरीब भी अपना सके? गांधीजीने डॉक्टरोंसे पूछा। वे बोले कि अेक अुपाय है। वह यह है कि शरीरको ठीक ढंगसे ढंक कर रखा जाय और मुंह पर मिट्टीका तेल लगा लिया जाय। गांधीजी आम तौर पर मच्छरदानी लगाते थे। परन्तु ज्यों ही अुन्होंने देखा कि अिसका अैसा अुपाय भी है जिसे गरीब भी अपना सकते हैं त्यों ही अुन्होंने मच्छरदानी हटवा दी और सोनेसे पहले अपने मुंह पर मिट्टीका तेल लगाना शुरू कर दिया!

४३ अिकबाल द्वारा प्रशंसा

विख्यात मुस्लिम कवि अिकबाल गांधीजीके प्रशंसक थे यद्यपि कुछ प्रश्नों पर वे अुनसे सहमत नहीं थे। वे कहा करते थे कि हिन्दुओंकी भावी पीढ़ियां गांधीजीको भगवानका अवतार मान कर अुनकी पूजा किया करेंगी।

[illegible] में जब असहयोग और खिलाफत आन्दोलनोंकी लहर [illegible] थी तब अेक अखबारने [illegible] ने गांधीजीकी तिरंगी [illegible] अेक [illegible] प्रकाशित किया। अुसमें दिखाया गया था कि [illegible] हाथ पर [illegible] पीली पीली अेक चट्टान पर था [illegible] अुसके आस [illegible] समुद्र है। अुस भारत माता का नाम [illegible] दिखाया गया था कि गांधीजी अब अनिवार्य [illegible]

जब चित्रकारने यह व्यंगचित्र देखा तो अुन्होंने अुसके नीचे फारसीकी चार पंक्तियां लिखकर चित्रका सारा भाव बदल डाला। अुन पंक्तियोंका अर्थ यह था

समुद्रके किनारे पर न खड़े रहो क्योंकि यहां जीवनका संगीत कोमल और धीमा है। समुद्रमें कूद पड़ो और लहरोंसे लड़ो। शाश्वत जीवन संग्रामसे ही प्राप्त होता है।

४४ कायदे-आजमको अीदकी बधाअी

सितम्बर १९४४में जब गांधीजी बम्बअीमें थे तब अुन्होंने अीदके दिन *अपनी अीदकी मुबारकबादीके साथ साथ* कायदे-आजम *जिन्नाको* चार चपातियां भी भेजी। अुस वक्त कांग्रेस और लीगके दृष्टिकोणमें तीव्र मतभेदोंके कारण राजनीतिक समस्या अधिकाधिक पेचीदा बनती जा रही थी और अुसे हल करनेकी गरजसे दोनों नेताओंमें जिन्ना साहबके मकान पर गहरी बातचीत जारी थी। जब गांधीजी कायदे आजमकी कोठीसे अुतर कर बिड़ला भवन पैदल जा रहे थे तो अेक पत्र प्रतिनिधिने अुन्हें सुझाव दिया कि वे लीगके अध्यक्षको प्रार्थनामें निमंत्रित करें। गांधीजीने मुसकराते हुअे अुत्तर दिया आप सब प्रभावशाली लोग हैं। आप ही कायदे-आजमको मेरी प्रार्थनामें शरीक होनेका अनुरोध क्यों नहीं करते?

४५ बाकी प्रशंसा

मअी १९३३में गांधीजीने अपनी और अपने साथियोंकी शुद्धिके लिअे २१ दिनके अुपवासकी घोषणा की तो श्रीमती कस्तूरबा और मीराबहन पर वज्रपात-सा हुआ। मीराबहनने बाकी और अपनी ओरसे यह समाचार सुनकर नीचे लिखा सन्देश गांधीजीको भेजा

अुपवासकी खबर आज ही मिली। बा कहलवाती हैं कि अुन्हें बड़ा आघात लगा है और वे जिस निर्णयको बहुत अनुचित मानती हैं। परन्तु आपने किसीकी भी नहीं सुनी तो अुनकी क्या सुनेंगे? वे

अपनी हार्दिक शुभकामनायें भेजती है। मेरे होश-हवास ठिकाने नहीं है, परन्तु मैं जानती हूं कि यह श्रीश्वरकी आवाज है और मुस वर्वमें पीडाके बीचमें भी मैं आनन्दित हूं। महरी प्रार्थनायें। प्रेम —मीराबहन।

गांधीजीकी आंखोंमें हर्षाश्रु भर आये और अुन्होंने जवाबमें यह तार भेजा

बाप कहो कि अुसके पिताने अुस पर जैसा सावी बोझ दिया जिसके बोझसे और कोअी स्त्री होती तो दब कर मर जाती। मैं अुसके प्रेमको अमूल्य समझता हूं। अुसे अन्त तक साहस रखना चाहिये। तुम्हारे लिये तो मेरे पास है ही क्या सिवा जिसके कि भगवानको धन्यवाद दू कि अुसने तुम्हें मुझे दिया। मेरे लिये यह श्रीश्वरका नया निर्णय है। तुम्हें जिस बात पर अन्त तक प्रसन्न रह कर अपनी बहादुरीका सबूत देना चाहिये। प्रेम।

४६ गांधीजीका मजाक

सितम्बर १९३१ की बात है। गांधीजी गोलमेज परिषदमें भाग लेनेके लिये जिंग्लैंड जा रहे थे। रास्तेमें जब वे मार्सेल्समें अुतरे तो रायटरने तारसे समाचार दिया कि वे लोगोंके सामने पहले-पहल प्रगट हुअे तब अुनके विरुद्ध फैले हुअे पूर्वग्रह दूर हो गये। अुनकी सुन्दर मुसकानने सबको मोहित कर लिया और फ्रांसीसी पत्रकारोंके प्रश्नोंकी झड़ीका अुन्होंने नम्रतापूर्वक सहा। रायटरने यह भी कहा गांधीजीने स्वीकार किया कि सत्रह वर्षकी अनुपस्थितिके बाद जिंग्लैंडके निकट पहुंचने हुअे अुन्हें घबराहट महसूस हो रही है। परन्तु अुस घबराहटने मजाक करनेकी अुनकी शक्तिमें कोअी खलल पड़ा दिखाबी नहीं दिया। जब अुनसे पूछा गया कि क्या आप लन्दनके बाजारोंमें पहन कर निकलेंगे तो अुन्होंने अेक फ्रांसीसी पत्रकारको अुत्तर दिया आप अपने ढंगमें प्लस फोर्स * पहनते हैं। मैं माअिनस फोर्स पहनना पसन्द करता हूं।

---

* प्लस फोर्स में गांधीजीका आशय था बहुत लम्बे कपड़े माअिनस फोर्स में अुनका आशय था बहुत छोटे कपड़े।

गांधीजीकी घबराहटने अुन्हें चुंगी-अफसरको यह बता देनेसे भी नहीं रोका “मैं अेक गरीब भिखारी हूं। मेरी पार्थिव सम्पत्तिमें कुल छह चरखे* जेलखानेकी थालियां बकरीके दूधका अेक बरतन छह हाथके बुने कपड़ेके कच्छ और तौलिये तथा मेरी ख्याति है जिसकी बहुत कीमत नहीं हो सकती।

अवश्य ही चुंगी-निरीक्षकने अुन्हें जाने दिया।

४७ मौनका बल

प्रसिद्ध अीसाअी धर्मप्रचारक डॉ॰ जॉन मॉट जब दिसम्बर १९३८ में गांधीजीसे मिलने सेवाग्राम आये तब अुन्होंने गांधीजीसे पूछा “क्या आपको अपनी आध्यात्मिक खोजमें मौन जरूरी मालूम होता है?

अिस प्रश्नका अुत्तर देते हुअे गांधीजीने कहा “थोड़े ही दिन हुअे मैं लगभग दो मास बिलकुल चुप रहा था। अुस मौनके जादूके असरसे मैं अभी तक मुक्त नहीं हुआ हूं। मैंने अुसे आपके आने पर आज खोला है। आजकल मैं रोज शामकी प्रार्थनाके बाद मौन ले लेता हूं और मिलनेवालोंके लिअे अुसे दो बजे खोलता हूं। आज जब आप आये तभी अुसे खोला। अब मौन मेरे लिअे शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरहसे आवश्यक बन गया है। शुरूमें अिसे कामके बोझसे बचनेके लिअे अपनाया था। तब मुझे लिखनेके लिअे समयकी जरूरत थी। जब मैंने कुछ समय अिसका पालन किया तो मुझे अिसका आध्यात्मिक महत्त्व विदित हुआ। मेरे मनमें अचानक बिजलीकी चमककी तरह यह खयाल आया कि यही समय है जब मैं अीश्वरके साथ अुत्तम सम्पर्क साध सकता हूं। और अब मुझे अैसा मालूम होता है मानो कुदरतने मुझे मौनके लिअे बनाया है। असलमें मैं आपको बता दूं कि मैं अपने मौनके लिअे बचपनसे मशहूर हूं। स्कूलमें मैं चुप रहता था और अपने लड़कपनके जमानेमें मुझे मित्र खास घुन्ना जीव समझते थे।”

---

* जाहिर है कि रायटरके संवाददाताकी यह रिपोर्ट गलत थी। गांधीजी अपनी अिंग्लैण्ड-यात्रामें अपने साथ अेक ही चरखा ले गये थे।

४८. 'गांधी सिगरेट'

अेक भाओीने गांधीजीके पास सिगरेटके पैकेटका अेक लेबल भेजा जिस पर अनुका चित्र छपा हुआ था और सिगरेटोंको "महात्मा गांधी सिगरेट" कहा गया था।

अपने नामके असे दुरुपयोग पर गांधीजीको कितना क्षोभ हुआ असका अन्दाज जिस घटना पर अनुकी निम्नलिखित टिप्पणीसे लगाया जा सकता है :

"मेरे नामके जितने भी दुरुपयोग हुअे हैं अनमें मेरे नामको जान-बूझकर सिगरेटोंके साथ जोड़ना जितना अपमानजनक है अतना और कोअी नहीं। अेक भाओीने मेरे पास अेक लेबल भेजा है जिस पर मेरा चित्र छापा गया है। सिगरेटोंको 'महात्मा गांधी सिगरेट' कहा गया है। बात यह है कि मुझे शराबकी तरह धूम्रपान भी भयानक लगता है। धूम्रपानको मैं अेक निन्दनीय कुटेव मानता हूं। जिससे मनुष्यका अन्तःकरण मर जाता है और यह अक्सर शराबसे भी बुरा होता है क्योंकि यह अदृश्य रूपमें काम करता है। यह अैसी आदत है कि अेक बार कोअी मनुष्य अिसमें फंस जाता है तो फिर अिससे पिण्ड छुड़ाना कठिन हो जाता है। यह अेक खर्चीली बुराअी है। जिससे सांसमें बदबू आने लगती है, दांतोंका रंग बिगड़ जाता है और कभी कभी बिमारी फाहा — कैन्सर — भी हो जाता है। यह गंदी आदत है। किसी आदमीने मेरा नाम सिगरेटोंके साथ जोड़नेकी मुझसे अनुमति नहीं ली है। मैं बहुत कृतज्ञ होअूंगा यदि यह अज्ञात व्यापारी जिन लेबलोंको बाजारसे हटा लेंगे अथवा जनता अैसे लेबलोंवाले पैकेट खरीदनेसे अिनकार कर देगी।"

४९ अपमानजनक दृश्य

मार्च १९३ के अैतिहासिक दांडी-कूचके दिनोंमें गांधीजीने भाटगांव (जिला सूरत) में अेक आश्रम-निरीक्षणकी भावनासे पूर्ण भाषण दिया। अुसमें कूचके कुछ साथियोंकी ज्यादतियोंका अिकरार किया गया था। अुस भाषणके दौरानमें गांधीजीने अेक मजदूरका मर्मस्पर्शी हवाला दिया जिसे रातकी कूचके लिअे लिट्समनकी बत्ती ले चलनेको रखा गया था।

हम किसीका बोझा नहीं समझ सकते। मैंने देखा कि आप लोगोंने रातके सफरके लिअे अेक भारी लिट्समनकी बत्तीका बन्दोबस्त किया था और अुसे गरीब मजदूर अपने सिर पर अेक तिपाओीके अूपर रखकर चलता था। यह लज्जाजनक दृश्य था। अुस आदमीको तेज चलने पर विवश किया जा रहा था। मैं अुस दृश्यको सहन नहीं कर सका। अिसलिअे मैंने चाल तेज की और मैं सारे समुदायसे आगे निकल गया। परन्तु यह सब बेकार हुआ। अुस आदमीको मेरे पीछे पीछे दौड़नेको मजबूर किया गया। मेरी लज्जाकी हद हो गयी। अगर यह बोझा ले जाना ही था तो मैं यह देखना पसन्द करता कि हमींमें से कोअी अुसे ले चलता। तब हम तिपाओी और बत्ती दोनोंको ही बता बता देते। कोअी मजदूर अैसा बोझा अपने सिर पर नहीं ले जायगा। हम बेगारका विरोध करते हैं और यह ठीक ही है। परन्तु यह बेगार नहीं तो और क्या थी? अैसी हालतमें अगर हम जल्दीसे अपने तौर-तरीके सुधार नहीं लेंगे तो आपने और मैंने लोगोंके सामने स्वराज्यकी जो तसवीर रखी है अैसा स्वराज्य संभव नहीं होगा।

५० मौ० मुहम्मदअलीका तोहफा

८ अक्तूबर, १९२४ को अर्थात् जिस दिन गांधीजीने दिल्लीमें २१ दिनका अुपवास तोड़ा, अुन्होंने मौलाना मुहम्मदअलीको हिन्दू-मुस्लिम अेकताके चिह्नस्वरूप मौलाना द्वारा दी गयी अेक गायकी भेंट स्वीकार करते हुअे निम्नलिखित पत्र भेजा

मेरे प्यारे भाअी

आप मेरे लिअे भाअीसे भी ज्यादा हैं। मैंने गाय देख ली। मुझे देख सकनेके लिअे मेरा बिस्तर अूंचा कर दिया गया था। जिस कार्यके पीछे जिस प्रेमकी प्रेरणा है अुसका क्या कहना? मैं भगवानसे प्रार्थना करता हूं कि आप दोनों भाअियोंके और मेरे बीचकी यह मुहब्बत हिन्दू मुसलमानोंके अटूट प्रेमका रूप ग्रहण करे, जिससे हमारे अपने अपने धर्मोंका हमारे देशका और मानव-जातिका कल्याण हो। हां, अीश्वर महान है। वह चमत्कार कर सकता है।

सदैव आपका
मो क गांधी"

[यह पत्र स्वयं गांधीजीने लिखा था और जिस पर हस्ताक्षर अुर्दूमें किये गये थे।]

५१ आत्म-बलिदानका महत्त्व

१ ३१ में दूसरी गोलमेज परिषदसे लौटते हुअे गांधीजी अेक दिनके लिअे [illegible] रुके। वहां जिन्हींके डिक्टेटर मुसोलिनीसे अुनका परिचय कराया गया। [illegible] भी गये। वहां जब ऊंचे सूली पर चढ़े हुअे अीसाका प्रसिद्ध चित्र दिखाया गया तो अुसे वे टकटकी लगाकर [illegible] और बहुत प्रभावित हुअे।

[illegible] अवसर बादमें अुस चित्रकी चर्चा करते हुअे [illegible] था [illegible] मनमें सूली पर चढ़े हुअे अीसाकी कुछ [illegible] मनन [illegible] अवसर प्राप्त करनेके लिअे मैं सब [illegible] था। [illegible] अुस दुर्घटनाके जिस

सजीव दृष्टांतसे अपनी आंखें मैं मुश्किलसे अलग कर सका। मैंने वहां फौरन देख लिया कि व्यक्तियोंकी भांति राष्ट्रोंका निर्माण भी केवल बलिदानके द्वारा ही हो सकता है और किसी तरह नहीं। सुख दूसरोंको दुःख देकर नहीं परन्तु अपने आप कष्ट सहन करके प्राप्त होता है।

५२ वैज्ञानिकको प्रत्युत्तर

अेक दिन तीसरे पहर विख्यात बंगाली वैज्ञानिक डॉ. प्रफुल्लचन्द्र राय साबरमती आश्रममें आये। गांधीजीको देखते ही वे बोले: "तो आपने दूध लेना छोड़ दिया?" विटामिनोंकी आवश्यकताके विषयमें और भी कुछ कहा।

गांधीजीने अुनकी बातमें सुधार करते हुअे कहा: "छोड़ा नहीं है, फिलहाल बन्द कर दिया है। परन्तु आपको वनस्पतिजन्योंके बारेमें क्या अपने ही ये शब्द याद नहीं हैं कि 'हम अपने बंगाल केमिकल वर्क्समें ये वनस्पतिजन्य केवल मूर्खोंके लिअे तैयार करते हैं? अपने लिअे तो मुझे पिसी हुअी बढ़िया मिट्टी काफी मालूम होती है।' यही बात वैज्ञानिक सिद्धान्तोंकी है। अुन पर पूरा विश्वास मूर्ख ही रखते हैं; बुद्धिमान अुन्हें सोच-समझ कर मानते हैं। आज ही मैं अेक लेख पढ़ रहा था जिसमें विटामिनोंके सिद्धान्तको चुनौती दी गयी है।"

बंगाली विद्वानको यह मजाक इतना पसन्द आया कि अुन्होंने अुसका खण्डन नहीं किया और दूसरे विषयों पर बात करने लगे।

५३ अुनका 'स्त्री-स्वभाव'

गांधीजीके घनिष्ठ सम्पर्कमें आनेवाले बहुतसे लोगोंने देखा होगा कि जिन स्त्रियोंसे अुनका सम्बन्ध आया अुनमें से अधिकांशकी अपेक्षा गांधीजीमें स्त्रियोचित गुण अधिक थे। अुनके चरित्रके अिस पहलूकी अुनकी प्रशंसा मी और श्रीमती मेच मेस मेक पोलाक दोनोंने की है।

मिस्टर पोलाकने कहा है: "गांधीने निर्विवाद रूपसे अिस सिद्धान्तको प्रमाणित कर दिया है कि अुत्तम पुरुषों और अुत्तम स्त्रियोंमें दोनोंके

भुत्तम गुणोंका सामंजस्य होता है। कोओ स्त्री भुनसे बढ़ कर धीरज या सहिष्णुता नहीं दिखा सकती और न भुनसे अधिक सहनशील और क्षमाशील ही हो सकती है।

श्रीमती पोलाकने कहा है, महात्मा गांधीको भुनके स्त्री-स्वभावके कारण अनेक स्त्रियोंका प्रेम प्राप्त हुआ है। अपनी कल्पनामें मैं महात्माजीका —जैसा कि मैंने दक्षिण अफ्रीकामें कभी बार देखा था—यह रूप देखा करती हूं कि वे अेक कमरेमें जिधर-भुधर टहल रहे हैं भुनकी गोदमें छोटा बच्चा है, लगभग स्त्रीकी तरह अनजाने ही वे भुसे प्यार कर रहे हैं और साथ ही अत्यंत स्पष्टताके साथ महत्त्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्नोंकी चर्चा भी कर रहे हैं।"

५४ गोखलेजीका प्रमाणपत्र

जब गोपाल कृष्ण गोखले दक्षिण अफ्रीका गये थे तब साथमें अेक दुपट्टा भी ले गये थे जो भुन्हें न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडेसे भेंटमें मिला था। गोखले भिस स्मृतिचिह्नको बड़े जतनसे रखते थे और विशेष अवसरों पर ही काममें लेते थे। अैसा अेक अवसर भुस भोजके समय आ गया जो जोहानिसबर्गके भारतीयोंने भुनके सम्मानमें दिया था। दुपट्टेमें सल पड़ गये थे और भुस पर भिस्तरी होनेकी जरूरत थी। धोबीके यहां भेजकर समय पर वापस मंगवानेका समय नहीं था। गांधीजीने अपनी कला आजमानेका प्रस्ताव किया।

गोखलेजी बोले मैं आपकी वकालतकी योग्यता पर विश्वास कर सकता हूं मगर आपकी धोबीकला पर नहीं कर सकता। आप भिसे बिगाड़ दें तो क्या हो? आप जानते हैं मेरे लिअे भिसका क्या महत्त्व है? यह कह कर भुन्होंने गांधीजीको बड़ी खुशीके साथ भुस भेंटका किस्सा सुनाया।

गांधीजीने फिर भी आग्रह किया अच्छे कामका भरोसा दिलाया गोखलेसे भुस पर भिस्तरी करनेकी अनुमति ले ली और काम भितनी खूबीसे किया कि भुनका प्रमाणपत्र प्राप्त किया। गांधीजीने कहा भिसके बाद मैंने परवाह नहीं की कि बाकी दुनिया मुझे प्रमाणपत्र देती है या नहीं।

५५ 'कोअी चीज छोटी नहीं'

१९१५ में कांग्रेसका अधिवेशन बम्बअीमें था। अुस समय आचार्य काका कालेलकर भी गांधीजीके साथ थे। अुस समयका निम्नलिखित किस्सा अुन्होंने बयान किया है, जिससे जाहिर होता है कि छोटी छोटी बातोंमें भी गांधीजीको महत्ता दिखायी देती थी

अेक दिन मैंने देखा कि वे कोअी चीज बड़े जोरोंसे ढूंढ़ रहे हैं।

मैंने अुनसे पूछा बापूजी आप क्या ढूंढ़ रहे हैं?

अुन्होंने अुत्तर दिया मेरी पेंसिल छोटी-सी है।

मैंने अपनी जमकी पेटीमें से अेक पेंसिल अुन्हें देनेको निकाली।

बापू बोले नहीं नहीं। मुझे वही पेंसिल चाहिये जिसे मैं ढूंढ़ रहा हूं।

मैंने अुत्तर दिया बापूजी अभी तो अिस कामसे क लीजिये। आपकी पेंसिल मैं बादमें ढूंढ़ दूंगा।

वे बोले काका आप नहीं समझते। मैं वह छोटी पेंसिल खो नहीं सकता। वह मुझे मद्रासमें श्री अे नटेसनके छोटे लड़केने दी थी। कितने स्नेहसे दौड़कर वह मुझे दे गया था मैं अुसे कैसे गंवा दूं?

हम दोनोंने अुस बराबरी पेंसिलकी तलाश की और बापूको तभी चैन पड़ा जब वह मिल गअी।

पेंसिल मुश्किलसे अेक अिंच लम्बी होगी!

५६ 'आप महात्मा हैं?'

अेक पत्रकारने अेक बार गांधीजीको प्रश्नोंकी अेक जबरदस्त सूची भेजी। पहला सवाल था

"क्या आप सचमुच महात्मा हैं?

गांधीजीका जवाब यह था। मुझे तो अैसा नहीं लगता। परन्तु अितना जानता हूं कि मैं अीश्वरकी सृष्टिके सबसे तुच्छ प्राणियोंमें से हूं।

प्र —यदि अैसा हो तो क्या आप महात्मा शब्दकी व्याख्या करेंगे?

अु —जब मेरा किसी महात्मासे परिचय ही नहीं तो मैं व्याख्या भी नहीं बता सकता।

प्र —यदि आप महात्मा नहीं हैं तो क्या आपने अपने अनुयायियोंसे कभी कहा है कि आप महात्मा नहीं हैं?

मु —मैं जितना जिनकार करता हूं अुतना ही ज्यादा जिस शब्दका मेरे लिओ अुपयोग किया जाता है।

प्र —क्या यह सच है कि पहले आप रेलगाड़ीके तीसरे दर्जेमें सफर करते थे और अब आप स्पेशल ट्रेन और पहले दर्जेके डिब्बोंमें यात्रा करते हैं?

मु —अफसोस! पत्रलेखककी जानकारी सही है। महात्मापन स्पेशल गाड़ियोंके लिओ और पार्थिव शरीर दूसरे दर्जेके पतनके लिओ जिम्मेदार है।

प्र —काअुण्ट टॉल्स्टॉयके साथ आपका क्या सम्बन्ध है?

मु —प्रेम जैसे भक्तका भी जीवनमें अुनका बहुत ऋणी है।

प्र —जब स्वराज्य हो जायगा तब आपकी स्थिति क्या होगी?

मु —मैं अवश्य ही लम्बी और शायद हमेशाकी छुट्टी चाहूंगा।

५७ भारतकी छोटी वीरांगनायें

हरिजन अुद्धार सम्बन्धी अपनी भिक्षा-यात्राओंमें गांधीजी अपनेको माला पहनाने या भेंट देनेके लिओ आनेवाली छोटी-छोटी लड़कियोंसे भी वह जेवर मांग लेते थे जो वे पहने हुओ होती थीं। वे चाहते थे कि लड़कियां न सिर्फ खर्चीली और स्पर्धाकी सौन्दर्य-सामग्रीके बिना काम चलाना सीखें बल्कि आत्म बलिदानकी अग्नि-परीक्षामें से गुजरना भी सीखें जिससे भावी

कि गांधीजीको भेंट स्वीकार कर लेना जरूरी मालूम हुआ। किन्तु अंगूठी अुंगलीसे आसानीसे नहीं निकाली जा सकी। पानी लाना पड़ा और अुंगली पर लगाना पड़ा तब अंगूठी निकाली जा सकी। जब अंगूठी निकाल ली गयी और लड़की अुसे गांधीजीको भेंट कर सकी तब अुसे अत्यंत हर्ष हुआ।

किसी तरह विजगापट्टममें अेक छोटीसी लड़की अुनके गलेमें खादीकी माला डालनेको आयी। अुन्हें मौका मिल गया। अुन्होंने अुसका हाथ पकड़ कर जो चूड़ियां वह पहने हुअे थी वे मांग लीं। जब अुसने अनुमतिके लिअे अपने पिताकी ओर देखा तो पिताने खुशीसे मजूरी दे दी और वह भी त्याग करके बड़ी प्रसन्न हुआी। अुसका अनुकरण आठ वर्षकी अेक और लड़कीने किया। वह गांधीजीके पास चली आयी और अपना हाथ बढ़ाकर अुनसे कहा कि मेरी चूड़ी भी निकाल लीजिये।

५८ गांधीजीके लिअे मंदिर नहीं चाहिये

मेरी अिच्छा थी कि अेक छोटा-मंदिर गांधीजीके नाम पर समर्पित करूं। परन्तु जब मैंने यह विषय (सन् १९४१ में) अुनके सामने रखा तो वे खिलखिलाकर हंस पड़े और फिर गंभीर स्वरमें बोले

यह सुझाव अच्छा है। आप पूरे सद्‌हेतुसे अैसा करना चाहते हैं। आप देखते हैं कि मैं जीवन भर सब प्रकारके अंध-विश्वासोंसे लड़ता रहा हूं जिन्होंने हमारे समाज और धर्मको भ्रष्ट कर दिया है और अुन्हें आजकी पिरी हुआी हालतमें ला पटका है। आपके आश्रममें मन्दिर बनाने और अुसे मेरे नाम पर समर्पित कर देनेसे समय पाकर अुसके चारों ओर नये तरहके अंध-विश्वास पैदा हो जायंगे जिनसे आप लड़ नहीं सकेंगे। अिनसे भिन्न भिन्न जातियों और धर्मोंमें अेकता अुत्पन्न करनेके बजाय आप न चाहते हुअे भी अेक नयी गांधी जाति पैदा कर देंगे। मैं नहीं चाहता कि कोअी अैसी बात की जाय। मगर मैं जिन चीजोंके लिअे जिया हूं अुन पर आपका विश्वास हो तो मैं आपको यह सुझाव दे सकता हूं। आप अपने आश्रममें प्रार्थनाके लिअे अेक स्थान अलग रख दें और अुसके चारों ओर अच्छे फलोंके वृक्ष लगा दें। जाति धर्म या मतका विचार न करके सबको आपके यहां आकर प्रार्थना करनेको निमंत्रित करें। प्रार्थना-

भूमि पर जब आप लोग प्रार्थनाके लिअे जिकट्ठे होंगे तब वृक्षोंसे फूलोंकी जो वर्षा होगी और अुनसे जो ताजगी पैदा करनेवाली सुगंध सुगन्ध आयेगी अुससे भक्तिके लिअे अनुकूल वातावरण अुत्पन्न होगा।

यह सुझाव जितना अधिक ठीक था कि मैंने मन्दिर बनानेका विचार छोड़ दिया। मैंने कृपा-आश्रममें प्रार्थना-भूमिके चौतरफ फूलोंके पेड़ लगा दिये।

—भिक्षु निर्मलानन्द तिरुवेन्नैनल्लर

५९. अणुबमके मुकाबलेमें प्रार्थना

गांधीजीकी मृत्युसे पहले अुनसे मुलाकात करनेवाले आखिरी विदेशी पत्र-प्रतिनिधियोंमें से अेक अमरीकाकी कुमारी मार्गरेट बुर्क व्हाअिट थी। अुन्होंने अुनसे जो प्रश्न किये अुनमें से अेक यह था

अमरीकियोंके मन भावी अनिष्टकी शंकाओंसे खास तौर पर अणुबम-सम्बन्धी शंकाओंसे भरे हैं। आप अणुबमोंके विरुद्ध अहिंसाका अुपयोग कैसे कर सकते हैं?

गांधीजीने अुत्तर दिया जिस प्रश्नका अुत्तर मैं कैसे दूं? अणुबमोंका मुकाबला प्रार्थनामय कर्मसे किया जा सकता है।

प्रश्न जब सिर पर हवाअी जहाज मंडरा रहे होंगे तब आप प्रार्थना करेंगे?

अुत्तर मैं अुसमें निकल आअूंगा और चालकको देखने दूंगा कि मेरे चेहरे पर अुसके प्रति दुर्भावनाका कोअी चिह्न तक नहीं है। अवश्य ही चालक अितनी अूंचाअीसे मेरा चेहरा नहीं देख सकेगा परन्तु मेरे हृदयकी यह आकांक्षा कि अुसे हानि नहीं पहुंचनी चाहिये अुस तक पहुंच जायगी और अुसकी आंखें खुल जायेंगी। जिन हजारोंको हिरोशिमामें अणुबमसे मारा गया [illegible] प्रार्थनाके साथ — अपने हृदयमें प्रार्थनाकी पूरी [illegible] अेक निःश्वास बिना शान्तिपूर्वक मृत्युमें मरते तो युद्ध [illegible] अुस तरह न होता। अब यह प्रश्न है [illegible]। [illegible] शान्ति नहीं है। वह और भी [illegible] हो गया है

गया था। वह अैसे दम्पतिकी पुत्री थी जो कांग्रेसके निष्ठावान कार्यकर्ता थे। अुसे माता-पिताने बचपनसे ही हिन्दीमें बोलना और पढ़ना सिखाया था। जब वह मानपत्र पढ़ना खतम कर चुकी थी और अुसे गांधीजीको भेंट कर रही थी तब अुन्होंने अुससे पूछा कि "तुम जो जेवर पहने हुअे हो वे भी मानपत्रके साथ मुझे दे दो तो?" जिस पर अुसने अपने गलेसे सोनेकी जंजीर अुतार कर अुनके हवाले कर दी। तब गांधीजीने अुसके हाथोंकी चूड़ियोंकी ओर संकेत करके कहा — और जिस चीजका क्या करोगी? अुसने अुन्हें अुतार देनेके लिये अपने हाथ फैला दिये परन्तु जब गांधीजी चूड़ियां निकालने लगे तो अुन्हें अुसके गालों पर आंसू दिखाई दिये। अुन्होंने अुसकी चूड़ियां लौटा दी और अुसके गालों पर हल्की-सी थपथ लगा कर कहा — तू तो रो रही है। मैं रोकर दिया गया दान स्वीकार नहीं कर सकता।

लड़कीके मा-बाप जिस अवसर पर मौजूद नहीं थे। वे नगरमें गांधीजीके ठहरनेका जिन्तजाम करनेमें लगे हुअे थे। जब बादमें वह गांधीजी और दूसरे लोगोंके साथ अुनके निवास-स्थान पर पहुंची तो अुसकी माने जिस घटनाका हाल सुनकर अपनी बेटीसे कहा कि जेवर दे दो। तब निरुपमाने खुशी खुशी अपने हाथोंकी चूड़ियां निकाल कर गांधीजीको भेंट कर दीं। फिर वह अपने कानोंके बुन्दे निकालने लगी परन्तु गांधीजीने यह कह कर रोक दिया — जिन्हें तू रख ले। ये तेरे लिये हैं। जितना काफी है। अुन्होंने अुसके त्याग पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और अुससे पूछा — क्या तू मुझे वचन देगी कि भविष्यमें अपने शरीर पर कोअी आभूषण धारण नहीं करेगी — अुसने तुरन्त वचन दे दिया।

जिस घटनाको हुअे पूरे बीस साल हो गये। निरुपमा अब (अम॰ बी॰ बी॰ अस॰) डॉक्टर बनकर काम कर रही है। अुसने बापूको दिया हुआ अपना वचन पालन किया है। अुसके शरीर पर आभरण अब छल्ला भी नहीं मिलता। बापूने कुछ समय तक अुसके साथ पत्रव्यवहार जारी रखा। अनके पत्रोंमें से दो हिन्दी पत्र जिस प्रकार हैं:

चि निरुपमा,

तुम्हारा खत मिला है
तुम्हारे रुदन को रोकने का
इलाज है तुम अब बालक
है तुम्हारे तीन चार वर्ष
तक शहर में बोलना ही
नहीं अभ्यास करना तक
बड़ी हुई तब अपने
आप बोलोगी और
तुम्हारे समय से तुम्हारी
शांति बढ़ेगी

वर्धा
२२-१२-३५

बापु के
आशीर्वाद

[मूल हिन्दी पत्रोंकी प्रतिलिपि]

चि० निर्मला

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारी भाषा अच्छी है। जेवर अनावश्यक है। जेवरसे लड़कियाँ बाह्य सौंदर्य पर मुग्ध होती है। गरीब मुल्कमें जेवरका शौक कम होना चाहिये। यह सब कारण जेवरके विरोधमें है।

२१-५-३४ बापूके आशीर्वाद

चि० निर्मला

तुम्हारा खत मिला है। तुम्हारे वचनको रोकनेका मिजाज है। तुम अभी बालक हो। तुम्हारे तीन चार वर्ष तक बाहिरमें बोलना ही नहीं। अभ्यास करना। जब बड़ी होगी तब अपने आप बोलोगी और तुम्हारे संयमसे तुम्हारी शक्ति बढ़ेगी।

वर्धा ११-१-३५ बापूके आशीर्वाद

६१ बापूकी मानवता

२ अक्तूबर, १९४७को जब राजधानीमें गांधी जयंती अुत्सव हुआ तब श्री जयरामदास दौलतरामने जो कुछ समय बिहारके गवर्नर थे दो दिलचस्प घटनायें सुनाओ जो यरवडा जेलमें हुआ थीं। वे वहां १९३१ में गांधीजी तथा अन्य लोगोंके साथ अेक कैदी थे। श्री जयरामदासने कहा कि अेक दिन जब गांधीजी सुबहकी सैरको नंगे पैरों निकले तो अुनके पैरों पर अेक चींटा चिपट गया और अुनका खून चूसने लगा। परन्तु अिस खयालसे कि कहीं अुसे चोट न लग जाय या वह मर न जाय गांधीजीने अुसे हटाया नहीं। अुन्होंने चींटेको जितना अुसने चाहा अुतना खून चूस लेने दिया यद्यपि अुसके कारण अुन्हें दो रोज बुखारमें पड़ा रहना पड़ा।

दूसरी घटना यों है। जब गांधीजीने अपने दांतनको साफ करनेके लिये जेलके अेक सिपाहीसे दो तीन नीमकी पत्तियां मंगवाओ तो वह पेड़की अेक पूरी डाली तोड़ लाया। गांधीजीको लगा कि अुन्हें अपनी

६४ स्वागत करनेवाले क्या न करें?

१९२९ के अपने आन्ध्रके दौरेमें गांधीजी जहां कहीं जाते थे वहां होनेवाले सार्वजनिक समारोह अितने अधिक असह्य होते थे कि वे अुन्हें बरदाश्त नहीं कर सकते थे। वे चाहते थे कि जिनके सुपुर्द कार्यक्रमोंकी व्यवस्था हो वे विवेकसे काम लें और तमाम महत्त्वहीन समारोह कम कर दें। अुनके लाभके लिये गांधीजीने कुछ निषेधोंकी अेक सूची जारी की जो अिस प्रकार थी

अिस शरीरको डेढ़ घंटेसे ज्यादाका काम न दो।

सभाओंमें या अन्यत्र भी शोर न मचाओ।

जुलूस न रखे जायं।

केवल प्रदर्शनकी दृष्टिसे कुछ न किया जाय।

अेक दिनमें बहुत ज्यादा कार्यक्रम न रखे जायं।

जहां दौरेके अुद्देश्यके रूपमें रुपया अथवा कार्य न हो अैसी जगहों पर अिस शरीरको न ले जाओ।

किसीकी सनक या अहंकारको संतुष्ट करनेके लिये अिस शरीरको कहीं न ले जाओ।

अिसे बहुत अधिक जगहों पर न ले जाओ।

यह समझनेकी भूल न करो कि यह सिर्फ अेक मिट्टीका ढेला है। मिट्टीका ढेला तो अवश्य है मगर अुसके भीतर अेक कोमल तथा बहुत ही चेतन जीव बैठा है, जो अिस पार्थिव चोलेके साथ की जानेवाली प्रत्येक चेष्टाको देखता रहता है।

६५ अुनके छोटे छोटे मित्र

बहुतसे काम होने पर भी गांधीजी बच्चोंके साथ हिलने-मिलनेके लिअे हमेशा थोड़ासा वक्त निकाल ही लेते थे। जब साबरमती आश्रममें समय ठहरनेके बाद अुन्हें राजनीतिक कामसे कलकत्ते बुलाया । अुन्होंने आश्रमवासियोंसे विदा ली। और अुनकी बातमें । सप्ताहमें अुनका यह अफसोस प्रतिध्वनित हुआ कि वे चाहते अुतनी आजादीके साथ आश्रमके बच्चोंके साथ न रह सके। होंने कहा

बच्चों! यहां तुम लोगोंके बीच रहनेके जिस कालको मैं सदा खुशी और संतोषके साथ याद करूंगा वहां मुझे अेक दुःख भी है। वह दुःख यह है कि मैं जितने दिन तुम्हारे बीच रहा परन्तु मैं आश्रमके बच्चोंके साथ खेल नहीं सका अुनको अलग अलग नामोंसे पहचान नहीं सका और जैसा मैं चाहता था अुनकी व्यक्तिगत मित्रता और विश्वास सम्पादन नहीं कर सका। परन्तु मैं क्या कर सकता था? मुझ पर कामका दबाव कितना भारी था।"

६६ चारों खाने चित्त!

अहमदाबादमें गुजरात विद्यापीठकी तरफसे विद्यापीठके विद्यार्थी दलित जातियोंके बालकोंके लाभार्थ अेक रात्रि-पाठशाला चलाते थे। अुस पाठशाला पर वे बड़ा परिश्रम करते थे और अुसमें ढेढ़ोंके बच्चोंकी काफी अुपस्थिति रहती थी। शिक्षकोंको मेहतरोंके बच्चोंका खयाल आया और अुन्होंने अुनके मां-बापोंको अपने बच्चोंको पाठशाला भेजनेके लिअे राजी कर लिया। परन्तु ज्यों ही वे आये अधिकांश ढेढ़ोंने अपने बच्चे पाठशालासे हटा लिअे। शिक्षकोंने कोअी रास्ता निकालनेके लिअे गांधीजीकी शरण ली।

गांधीजीने कहा "जिसलिअे मैं वहां गया। बहुत कम ढेढ़ोंके बच्चे सभामें आये। अुनमें से अेकने जिसे मैंने टटोला परम्परागत धर्मका आधार लेकर साफ साफ कहा हम मेहतरको कैसे छू सकता हूं? मैंने

नितान्त आवश्यकतासे अधिक प्रकृतिकी अुपज लेनेका हक नहीं है। जिसलिअे अुन्होंने जेलके सिपाहीको अुलाहना दिया कि तुमने अकारण जीवहत्या की।

श्री अमरायदासने कहा कि ये घटनायें बेशक छोटी हैं, परन्तु किसी व्यक्तिकी सच्ची महानता जितनी अैसे छोटे छोटे कामोंमें होती है अुतनी बड़ी बड़ी सिद्धियोंमें नहीं होती। छोटी बातोंका ही मनुष्यके जीवनमें सबसे अधिक महत्त्व होता है और अुन्हींसे पता लगता है कि वह किस धातुका बना है। अिस प्रकार यदि कोअी गांधीजीको अुनके जीवन और अुपदेशोंको जानना और समझना चाहता है तो अुसे अध्ययन करके अिस बातका पता लगानेकी कोशिश करनी चाहिये कि सच्ची मानवता क्या है और वह गांधीजीके दैनिक जीवन और अुपदेशोंमें कैसे प्रकट होती है।

६२ 'गांधीको फांसी लगा देनी चाहिये'

मैन्चेस्टर गार्डियन (ता० १४-७-'४७) के अेक लेखकके कथनानुसार १९२२ में ही अेच० जे० मैसिंघमने लेडी ग्रेगरी और मि० बर्नार्ड शाके साथ हुअी बातचीतके सिलसिलेमें साम्राज्यके छिन्नभिन्न होनेकी भविष्यवाणी कर दी थी।

लेडी ग्रेगरीने अपनी डायरीमें लिखा है कि मैसिंघमने यह राय जाहिर की कि यदि ब्रिटेन भारतको अपने अधीन रखना चाहता हो तो अुसे गांधीको फांसी लगा देनी चाहिये। लेडी ग्रेगरीने अुत्तर दिया कि दूसरा नेता पैदा हो जायगा। जिससे मैसिंघमने जिनकार किया। अुन्होंने कहा — नहीं, सन्तकी जगह जितनी आसानीसे नहीं भरी जा सकती। तब जी० बी० शॉ ने बीचमें टोकते हुअे कहा कि अुन्हें चाहिये कि अीफल टावर जैसा कुछ बनायें और गांधीको अुसकी चोटी पर रख दें, जहांसे फिर वह जनतामें भाषण नहीं दे सकेंगे।

लेडी ग्रेगरीने कहा कि यह तो वैसा ही खतरनाक होगा जैसा मेहदीको अुसकी कब्रसे खोदकर घसीटना था। अपनी डायरीमें वे आगे लिखती हैं — मैसिंघमको अपने अधिकारियोंसे मालूम हुआ है कि भारतको

६४ स्वागत करनेवाले क्या न करें ?

१९२९ के अपने आन्ध्रके दौरेमें गांधीजी जहां कहीं जाते थे वहां होनेवाले सार्वजनिक समारोह अितने अधिक असह्य होते थे कि वे अुन्हें बरदाश्त नहीं कर सकते थे। वे चाहते थे कि जिनके सुपुर्द कार्यक्रमोंकी व्यवस्था हो वे विवेकसे काम लें और तमाम महत्वहीन समारोह कम कर दें। अुनके कामके लिअे गांधीजीने कुछ नियमोंकी अेक सूची जारी की जो अिस प्रकार थी

अिस शरीरको छह घंटेसे ज्यादाका काम न दो।

सभाओंमें या अन्यत्र भी शोर न मचाओ।

जुलूस न रखे जायं।

केवल प्रदर्शनकी दृष्टिसे कुछ न किया जाय।

अेक दिनमें बहुत ज्यादा कार्यक्रम न रखे जायं।

जहां दौरेके अुद्देश्यके रूपमें रुपया अथवा कार्य न हो अैसी जगहों पर अिस शरीरको न ले जाओ।

किसीकी सनक या अहंकारको संतुष्ट करनेके लिअे अिस शरीरको कहीं न ले जाओ।

अिसे बहुत अधिक जगहों पर न ले जाओ।

यह समझनेकी भूल न करो कि यह सिर्फ अेक मिट्टीका ढेला है। मिट्टीका ढेला तो अवश्य है, मगर अुसके भीतर अेक छोटासा बहुत ही नाजुक जीव बैठा है, जो अिस पार्थिव चोलेके साथ की जानेवाली प्रत्येक ज्यादती समझता रहता है।

६५ अुनके छोटे छोटे मित्र

बहुतसा काम होने पर भी गांधीजी बच्चोंके साथ हिलने-मिलनेके लिये हमेशा थोड़ासा वक्त निकाल ही लेते थे। जब साबरमती आश्रममें कुछ समय ठहरनेके बाद अुन्हें राजनीतिक कामसे कलकत्ते बुलाया गया तो अुन्होंने आश्रमवासियोंसे विदा ली। और अुनकी चलते समयकी सभाअुमें अुनका यह अफसोस प्रतिध्वनित हुआ कि वे चाहते थे अुतनी आजादीके साथ आश्रमके बच्चोंके साथ न रह सके। अुन्होंने कहा

"अन्तमें जहां तुम लोगोंके बीच रहनेके अिस कालको मैं सदा खुशी और संतोषके साथ याद करूंगा वहां मुझे अेक दुख भी है। वह दुख यह है कि मैं जितने दिन तुम्हारे बीच रहा परन्तु मैं आश्रमके बच्चोंके साथ खेल नहीं सका अुनको अलग अलग नामोंसे पहचान नहीं सका और जैसा मैं चाहता था अुनकी व्यक्तिगत मित्रता और विश्वास सम्पादन नहीं कर सका। परन्तु मैं क्या कर सकता था? मुझ पर कामका दबाव कितना भारी था!"

६६ चारों खाने चित्त!

अहमदाबादमें गुजरात विद्यापीठकी तरफसे विद्यापीठके विद्यार्थी दलित जातियोंके बालकोंके लाभार्थ अेक रात्रि-पाठशाला चलाते थे। अुस पाठशाला पर वे बड़ा परिश्रम करते थे और अुसमें ढेढ़ोंके बच्चोंकी काफी अुपस्थिति रहती थी। शिक्षकोंको मेहतरोंके बच्चोंका खयाल आया और अुन्होंने अुनके मा-बापोंको अपने बच्चोंको पाठशाला भेजनेके लिये राजी कर लिया। परन्तु ज्यों ही वे आये अधिकांश ढेढ़ोंने अपने बच्चे पाठशालासे हटा लिये। शिक्षकोंने कोअी रास्ता निकालनेके लिये गांधीजीकी शरण ली।

गांधीजीने कहा   अिसलिये मैं वहां गया। बहुत कम ढेढ़ोंके बच्चे सभामें आये। अुनमें से अेकने जिसे मैंने टटोला परम्परागत धर्मका आधार लेकर साफ साफ कहा   ढेढ़ मेहतरको कैसे छू सकता है? मैंने

पूछा अगर मेहतरको छूनेसे देह भ्रष्ट हो जाता है, तो मुख्य धर्मके लोग वेदोंको क्यों छूवें? मुझने झटसे यह प्रत्युत्तर देकर कि हमने मुन्हें अैसा करनेको कभी नहीं कहा मुझे चारों खाने चित्त कर दिया!

६७ दर्पणका क्या काम?

यूनाअिटेड प्रेस ऑफ अिंडियाके शिमला-स्थित सम्वाददाताने अेक बार गांधीजीसे प्रश्न करके नीचे लिखे अुत्तर प्राप्त किये

प्र आप दर्पणमें अपना मुंह कभी भी क्यों नहीं देखते?

अु चूंकि जो मुझसे मिलने आते हैं वे सब मेरा मुंह देख लेते हैं जिसलिअे मुझे दर्पण काममें लेनेकी क्या जरूरत है?

प्र आप जमीन पर क्यों सोते हैं? मोटा गद्दा क्यों नहीं जिस्तेमाल करते?

अु मैं यह सब भारतके करोड़ों गरीबोंमें मिल जानेके लिअे करता हूं।

प्र आप रेलमें सदा तीसरे दर्जेमें क्यों सफर करते हैं?

अु जिसका अुत्तर अूपरवाले जवाबमें आ गया।

प्र आप अपने भोजनमें नमक और मसाले क्यों नहीं लेते?

अु मुझे कोओी भी अैसी बात जो मेरी शारीरिक आवश्यकताके लिअे अत्यन्त जरूरी नहीं है क्यों करनी चाहिये?

६८ गरीब स्त्रीका दान

गांधीजीको अपनी काम और रुपये-पैसेकी अपीलोंके जवाबमें स्त्रियोंकी ओरसे जो सहयोग मिलता था अुससे अुनका दिल सदा आता और हर्षसे भर जाता था। अुनके लिअे कार्यके पीछे रहनेवाली सद्भावनाका महत्त्व था। दूसरी मिटिंगकी अेक सभामें लगभग ७५ वर्षकी अेक गरीब स्त्रीमें देखनेवाली बुढ़िया जिसकी कमर झुकके बोझसे झुक गयी थी परन्तु जिसके मुखमंडल और नेत्रोंमें सच्चाओीकी ज्योति जगमगा रही थी अुनके हाथमें चार आने रख दिये। अुन आनोंमें

था कभी भुलाओी नहीं जा सकती अथवा कोओी चिह्न नहीं था। अुसके तुरंत बाद अेक अधेड़ वयकी गाँववाली महिलाने अुनके हाथोंमें पांच रुपये और अेक पैसा जमा दिया। गांधीजीने अुससे सीधे ही पूछ लिया “किसका दान बड़ा है तुम्हारा या अिस बूढ़ी बहनका?

अुसने साहसके साथ निश्चयपूर्ण अुत्तर दिया दोनों बराबर हैं।

मैं अिस अत्यंत बुद्धिपूर्ण और गहरे जवाबके लिअे तैयार नहीं था। मुझे अपार हर्ष हुआ और मात खानेमें खुशी हुआी” गांधीजीने अिस घटनाका अुल्लेख करते हुअे कहा।

६९ राष्ट्रीय पोशाकका बचाव

पायोनियर ने जिसके मालिक और सम्पादक अुन दिनों यूरोपियन थे गांधीजीकी राष्ट्रीय पोशाककी खिल्ली अुड़ाओी थी। गांधीजीने अुसके ४ जुलाओी १९१०के अंकमें यह अुत्तर दिया था

मैं राष्ट्रीय पोशाक जिसलिअे पहनता हूँ कि वह अेक भारतीयके लिअे अत्यन्त स्वाभाविक और शोभास्पद है। मेरा विश्वास है कि हमारा यूरोपियन वेशकी नकल करना हमारे पतन अपमान और दुर्बलताका चिह्न है और हम अेक अैसी पोशाकको छोड़कर राष्ट्रीय पाप कर रहे हैं जो भारतीय जलवायुके सबसे अधिक अनुकूल है जो अपनी सादगी कला और सस्तेपनके कारण संसारमें अद्वितीय है और जो स्वास्थ्य सबकी सब आवश्यकताओं पूरी करती है। अगर यहाँ रहनेवाले अंग्रेजोंको मिथ्याभिमान और अपनी ही मिथ्या शानका ख्याल न होता तो वे भी बहुत पहले ही भारतीय वेशको अपना लेते। जूते मैं पवित्र स्थानोंमें नहीं पहनता परन्तु अिसमें भी मैं देखता हूँ कि जब कभी समय हो जूते न पहनना अधिक स्वाभाविक और स्वास्थ्यप्रद है।”

७० 'गांधी-कवच'

अेक भाअीको जिन्हें शंकाओं सताया करती थीं गांधीजीने अेक पत्र लिखा था। यह पत्र तो खो गया परन्तु बादमें किसी मौके पर अुसके शब्द याद करके लिख लिये गये। पत्रका पाठ यह है :

मैं आपको अेक कवच देता हूं। जब कभी आपको शंका हो या खुदी बहुत सताने लगे तो यह अुपाय आजमाअिये।

आपने जो गरीबसे गरीब और लाचारसे लाचार मनुष्य देखा हो अुसका चेहरा याद करके अपने आपसे पूछिये कि क्या आप जो कदम अुठानेका विचार करते हैं वह अुस आदमीके लिये किसी कामका होगा? क्या अिससे अुसे कोअी लाभ हो सकेगा? क्या अिससे अुसे अपने खुदके जीवन और भाग्य पर फिरसे काबू प्राप्त हो जायगा? दूसरे शब्दोंमें क्या अिससे हमारे देशके करोड़ों भूखे पेट और भूखी आत्माओंवाले लोगोंको स्वराज्य मिलेगा?

तब आप देखेंगे कि आपकी शंकाओं और आपकी खुदी गायब हो रही है।

—मो० क० गांधी

७१ विद्यार्थियोंको फटकार

लखनअूमें विद्यार्थियोंने गांधीजीको मानपत्र भेंट किया। गांधीजीसे कुछ नैतिक प्रश्नों पर जिनका वातावरणसे कोअी मेल नहीं बैठता था अपनी राय देनेका अनुरोध किया गया। जिरह करने पर विद्यार्थियोंने स्वीकार किया कि मानपत्रका मसौदा तैयार करनेमें पहले या पीछे अुनसे सलाह-मशविरा नहीं किया गया था। सारे मामलेकी अवास्तविकताने गांधीजीको आघात पहुंचाया। अुन्होंने अिसे अनजाने दिया गया अपमान बताया।

अुन्होंने विद्यार्थियोंसे कहा : तुमने मुझे अेक अैसा मानपत्र भेंट किया है जिसमें क्या लिखा है यह मुझे मालूम नहीं है। तुमने अपने मानपत्रमें खादीकी सराहना की है मगर तुम विलायती कपड़े पहनकर आये हो।

तुमने मुझसे प्रश्न पूछे हैं या मुझे निरा ढोंग दिखाओ देता है। जिस तरह तुमने अपना कीमती वक्त बरबाद किया है। मदुराके बाजारकी सफाओ करके या और कोओ प्रामाणिक काम करके और अुसकी कमाओ स्थानीय स्मारक निधिमें देकर तुम अुसका कहीं अच्छा अुपयोग कर सकते थे। ज्ञान जिज्ञासुको ही दिया जा सकता है। परन्तु यह देखते हुअे कि मानपत्रमें क्या लिखा है यह तुम्हें मालूम ही नहीं है, तुम्हें अुत्तर जाननेकी जिच्छा नहीं हो सकती। जिसलिये मैं अुन पर गंभीरता-पूर्वक ध्यान देनेसे अिनकार करता हूं। यदि प्रश्न तैयार करनेवाला जवाब पाना चाहता हो तो अुसे दूसरा मौका तलाश करना चाहिये।

७२ सुखका निवास

दिसम्बर १ ३१ में लन्दनकी गोलमेज परिषदसे भारत लौटते हुअे महात्मा गांधी पेरिस ठहरे थे। वहां अुन्होंने २ में अधिक व्यक्तियोंकी सार्वजनिक सभामें भाषण दिया। जिस सभाका आयोजन स्थानीय बुद्धिजीवी वर्गने किया था। भाषणके अन्तमें अुन्होंने कुछ प्रश्नोंके अुत्तर दिये जिनमें से अधिकांश अुनके ग्रामीण आन्दोलन विषयक थे। जो प्रश्न पूछे गये अुनमें ये भी थे

प्र० — मनुष्यका सुख शासनमें रहता है या धनमें? (हंसी)

अु० — दोनोंमें ही नहीं। वह प्रत्येक मनुष्यके भीतर ही निवास करता है और पूर्णता तथा सच्ची शांतिमें रहता है।

प्र० — क्या सभी मनुष्य पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं?

अु० — हां, पूर्णता स्वयं हमारे भीतर ही विद्यमान है।

प्र० — कुछ वर्ष पहले मैंने आपको युरोपियन वेशमें देखा था। आपने अुसे त्याग क्यों दिया?

अु० — मैं गरीब आदमी हूं और हमारे भारतवासियोंकी भांति युरोपियन वेश धारण नहीं करता। प्रथम तो जिसलिये कि यह हमारे देशकी आबोहवाके बिल्कुल प्रतिकूल है और दूसरे जिस कारण कि अगर हम हिन्दुस्तानी कपड़े पहनते हैं तो हमारे भारतीय मजदूरोंको काम मिलता है।

७३ मनुष्य-स्वभाव मूलमें अेक

प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान रोमां रोलांने लिखा है, जब मैंने अपनी गांधी ही प्रकाशित पुस्तक गांधीको भेजी तो मैंने यह भय प्रकट किया कि शायद मैंने हर जगह आपके विचारोंको अच्छी तरह न समझा हो जिसलिअे आप मुझसे कोअी भूल हुअी हो तो बताअिये जिससे मैं भूले ठीक कर दूं। अुन्होंने मुझे अुस आरोग्य-भवनसे जहां वे बीमारीके बाद आराम ले रहे थे यह अुत्तर दिया

अंधेरी
२२ मार्च १९२४

प्रिय मित्र

मैं आपके कृपापूर्ण पत्रके लिअे कृतज्ञ हूं। आपसे अपने निर्णयमें यत्र-तत्र थोड़ीसी भूल हो भी गअी हो तो क्या हुआ? मेरे लिअे आश्चर्यकी बात तो यह है कि आपने जितनी थोड़ी गलतियां की हैं और अेक दूरस्थ तथा भिन्न वातावरणमें रहकर भी मेरे विचारोंका जितना सही अर्थ करनेमें आप समर्थ हुअे हैं। जिससे फिर अेक बार यह साबित होता है कि मनुष्यका स्वभाव भिन्न-भिन्न वातावरणमें विकसित होने पर भी मूलमें अेक ही है।

—मो क गांधी

७४ सच झूठे

, क अगस्त बंगालके दौरेमें गांधीजी मयमनसिंह लक्ष्मीगंज भी गये थे। लगभग सारी वर्षा हो रही थी और (हरिपदबाबूकी राष्ट्रीय पाठशालाके) विद्यार्थी जिनमें गांधीजी प्रस्थान करनेसे पहले तड़के ही मिलना चाहते थे सबको पानी न बरसे तब और बेरस जावे। जिस मित्र और पास मिलनेमें अधिक नहीं दिया जा सके। गांधीजीने अनसे कहा सच सच बोलना और सदा पालन करना। परन्तु मुझे बताओ कि तुममें से कितने सदा सच बोलते हैं और कभी झूठ नहीं बोलते अपने हाथ अूंचे करो। अच्छा अब मुझे बताओ

कि तुममें से कभी कभी झूठ बोलनेका संयोग किशोरोंके जीवनमें आता है? दो लड़कोंने तुरत अपने हाथ अूंचे कर दिये फिर तीनने और फिर चारने और अन्तमें लगभग सभीने!

गांधीजीने अुनसे विदा लेते हुअे कहा तुम्हें धन्यवाद है। तुममें से जो जानते हैं और मानते हैं कि हम कभी कभी झूठ बोल देते हैं अुनके लिअे जीवनमें सदा सुधारकी आशा रहेगी। जो यह समझते हैं कि हम कभी झूठ नहीं बोलते अुनका मार्ग कठिन है। मैं दोनोंकी सफलता चाहता हूं।

७५ देशसेवा कैसे करें?

दूसरी गोलमेज परिषदके सिलसिलेमें गांधीजी १९३१ के अुत्तरार्द्धमें विलायत गये थे। अपने अुस प्रवास-कालमें वे अेक बार श्री और श्रीमती पारधीके अतिथिके नाते भोज पर अपने कुछ देशबन्धुओंसे मिले थे। अुनमें से किसीने अुनसे पूछा कि भारतकी सेवा करनेका अुत्तम मार्ग क्या है? अुन्होंने अुत्तर दिया

अपनी बुद्धिको वहांके-गांव-गांवोंमें फुलानेके बजाय अपने देशकी सेवामें लगा दीजिये। अगर आप डॉक्टर हैं तो भारतमें काफी बीमारी है जिसमें आपकी सारी डॉक्टरी दवाओंकी जरूरत होगी। यदि आप वकील हैं तो भारतमें मतभेद और झगड़े हैं। झगड़ोंको बढ़ानेके बजाय आप अुन्हें मिटाअिये और मुकदमेबाजी बन्द कराअिये। अगर आप अिंजीनियर हैं तो अैसे आदर्श घर बनाअिये जो हमारे यहांके लोगोंकी आवश्यकताके अनुरूप और सविधाके भीतर हों और फिर भी हवा और प्रकाशसे पूर्ण तथा स्वास्थ्यप्रद हों। कोअी अैसी चीज नहीं जिसे आपने सीखा हो और जिससे लाभ नहीं अुठाया जा सकता हो।

७६ गांधी और थोरो

कुछ हलकोंमें यह खयाल फैला हुआ है कि महात्मा गांधीको सविनय आज्ञाभंग (Civil Disobedience) का विचार थोरोकी रचनाओंसे मिला है। अिसे स्वयं गांधीजीने निराधार बताया है। अिस सम्बन्धमें लिखे गये अेक प्रश्नके अुत्तरमें अुन्होंने १० सितम्बर, १९३५ को अेक पत्र भारत सेवक समितिवाले श्री पी० कोदण्डरावको जो अुस समय अमरीकामें थे लिखा था। अुसमें अुन्होंने कहा था :

यह बयान गलत है कि मैंने अपना सविनय आज्ञाभंगका विचार थोरोके लेखोंसे लिया है। सविनय आज्ञाभंग पर थोरोका निबंध जब मुझे मिला अुससे पहले दक्षिण अफ्रीकामें सरकारी सत्ताका विरोध काफी आगे बढ़ चुका था। परन्तु अुस समय वह आन्दोलन निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive Resistance) के नामसे मशहूर था। चूंकि वह अपूर्ण था अिसलिअे मैंने गुजराती पाठकोंके लिअे सत्याग्रह शब्द गढ़ लिया था। जब मैंने थोरोके महान निबंधका शीर्षक देखा तो मैं अंग्रेजी पाठकोंको अपना संग्राम समझानेके लिअे थोरोका शब्द काममें लेने लगा। लेकिन मैंने देखा कि संग्रामका पूरा अर्थ सविनय आज्ञाभंग शब्दसे भी व्यक्त नहीं होता। अिसलिअे मैंने सविनय विरोध (Civil Resistance) शब्द अपनाया। अहिंसा तो हमारे संग्रामका अविभाज्य अंग सदैव ही रही।

७७ अहिंसाका पदार्थपाठ

१९४७ के मध्यमें अपने नोआखाली जिलेके स्मरणीय दौरेमें गांधीजी रामपुरमें अमसर मियां नामक अेक मुसलमान ग्रामवासीके घर पर कुछ मिनटके लिअे ठहर गये थे। वहां गांधीजीका हार्दिक स्वागत किया गया और मुस्लिम बहनोंने अनेक मालाओं पहनाओं। घरके बच्चोंने गांधीजीको घेर लिया और गांधीजीने अनकी पीठ थपथपाकर कहा : तुम सब मेरे दोस्त हो।

अिस पर अमसर मियांने गांधीजीको अेक कुल्हाड़ी अुठाकर दिखलाकर कहा : दक्षिण गांधीजी अिस ग्राममें दो प्रकारकी पत्नियां हैं। क्या यह आश्चर्यकी बात नहीं है? अुन्होंने पूछा।

गांधीजी हंसे और बोले जिसमें आश्चर्यकी कोओ बात नहीं। यह सब ीश्वरकी सृष्टि है। अेक ही वृक्षकी ये दो भिन्न भिन्न प्रकारकी पत्तियां अेक ही देशके हिन्दुओं और मुसलमानोंकी तरह हैं। लेकिन देखो ये दोनों अेक ही वृक्ष पर साथ साथ कैसी फल-फूल रही हैं? ये हमें बताती हैं कि जैसे ये दो प्रकारकी पत्तियां अेक ही पेड़ पर रह रही हैं वैसे ही हमें भी अेक ही भूमि पर दो सगे भाअियोंकी तरह रहना चाहिये।

मुस्लिम ग्रामवासी गांधीजीके अुत्तरसे बड़े खुश हुअे और बोले कि गांधीजीने जो कुछ कहा है वह बिलकुल ठीक है। हिन्दू-मुसलमानोंको अेक ही देशके सगे भाअियोंकी तरह रहना चाहिये।

७८ आत्महत्याका निमंत्रण

अेक अंग्रेज पत्रलेखकने गांधीजीको विटामिन्स (ता १५-२-२९) में छपे हुअे Cheer Up (खुश हो जाओ) शीर्षक अेक लेखकी कतरन भेजी। लेखमें ब्रिटेन द्वारा विजित लोगोंके वृक्षके व्यापारी जहाजोंके और निर्यात मालके ब्योरेवार आंकड़े थे और अंतमें यह घोषित थी कि हमारा व्यापारी जहाजी बेड़ा संसारमें सबसे बड़ा है। वह भारतको हर साल दस लाख पौण्डकी मल-सामग्री पहुंचाता है और वहांसे अंग्रेज हिस्सेदारों रुपयेका लेन-देन करनेवाले साहूकारों और अधिकारियोंको प्रतिवर्ष कोअी तीन करोड़ पौण्ड मिलते हैं।

पत्रलेखकने अुक्त कतरन पर निम्नलिखित टिप्पणी लिखी थी

अगर मददृष्टि गांधी यह सब हाल्त देख पाये तो शायद वह अपने ही चरखेसे अपना गला काट ले।

जिस पत्र पर गांधीजीकी टीका यह थी

मैंने निश्चय किया है कि अभी कुछ समय तक अपना गला न काटूं। मैं यह देखना चाहता हूं कि संसारका सबसे बड़ा व्यापारी जहाजी बेड़ा जो करोड़ों गज कपड़ा ब्रिटेनसे भारतमें लाता है वह सबका सब चरखे द्वारा अुत्तम हो। भारतको सिर्फ अपनी नींद छोड़नी होगी।

७९ जेलका अेक अनुभव

जब गांधीजी यरवडा जेलमें थे अुन दिनों जेलखानेके सुपरिन्टेन्डेन्ट कर्नल डाल्टिमन बहुत चाहते थे कि गांधीजी मक्खन लें। और मक्खन रोटीके साथ लेनेके लिअे अुन्होंने गांधीजीके लिअे काफी बड़ी मात्रामें आटा मिलवा दिया। फिर जो कुछ हुआ अुसका वर्णन १९२४ के शुरूमें गांधीजीने अपनी रिहाओके बाद अिस प्रकार किया था

थोड़ी आजमाअिशके बाद मुझे महसूस हुआ कि मुझे न आटेकी जरूरत है, न मक्खनकी। मैंने कह दिया कि आटा वापिस ले लिया जाय और मक्खन देना बन्द कर दिया जाय। कर्नल डाल्टिमन सुननेको तैयार नहीं थे। जो दे दिया सो दे दिया। शायद बादमें मैं खा जाअूं। मैंने दलील दी कि यह सब सार्वजनिक धनकी बरबादी है। मैंने जोरसे कहा कि मुझे जनताके रुपयेके अुपयोगका अुतना ही खयाल है जितना स्वयं अपने रुपयेका। अुनके मुंह पर अविश्वाससूचक मुसकुराहट दिखाअी दी। तब मैंने कहा: बेशक यह मेरा रुपया है।

तुरन्त प्रत्युत्तर मिला: आपने सार्वजनिक कोषमें कितना रुपया दिया है? मैंने नम्रतापूर्वक अुत्तर दिया: आप तो केवल राज्यसे मिलनेवाले वेतनका कुछ प्रतिशत ही देते हैं, जब कि मैं अपना सारा परिश्रम बुद्धि और सब कुछ देता हूं। अिस पर बड़ी जोरकी अर्थपूर्ण हंसी हुअी। परन्तु मैं अप्रतिभ नहीं हुआ क्योंकि मैंने जो कुछ कहा वही मैं मानता था।

८० रामनामका मंत्र

मेरा भतीजा बीमार था। अुसके रिश्तेदार अुसके अिलाजके लिअे दवाका आश्रय न लेकर मंतर-जंतरका आश्रय लेते थे। जिनसे कोअी लाभ हुआ हो अैसा नहीं कहा जा सकता। अुसकी माताजीने भी जरूर अिस बीमारमें काम लिया होगा। अब आप रामनामकी बात करते हैं। क्या यह बात आप जानते नहीं हैं? अेक पत्रलेखकने महात्माजीसे पूछा। अुनका जवाब यह था:

मैं जितना न किसी समय अिस प्रश्नका अुत्तर अबसे पहले दे चुका हूं। परन्तु फिर दे देना अच्छा ही होगा। मेरा [illegible] मुझे याद है

मेरी मां मुझे औषधियां देती थी परन्तु अुसका जादू-टोनेमें विश्वास जरूर था। मेरे बहुतसे पठित मित्रोंका भी अिसमें विश्वास है। मेरा नहीं है। और चूंकि मैं अिन बातोंको नहीं मानता अिसलिअे मैं निर्भय होकर कह सकता हूं कि मेरी कल्पनाके रामनाममें और जंतर-मंतरमें कोअी सबंध नहीं है। मैंने कहा है कि हृदयसे रामनाम लेनेका अर्थ अेक अतुलनीय सत्तासे सहायता प्राप्त करना है। अुस सत्तामें सब प्रकारकी पीड़ा मिटानेका सामर्थ्य है। परन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि यह कहना आसान है कि रामनाम हृदयसे निकलना चाहिये परन्तु सचमुच अैसा कर सकना बड़ा कठिन है। फिर भी मनुष्य जिन्हें प्राप्त कर सकता है अुनमें यह सबसे बड़ी चीज है।

८१ 'अशुद्ध' कौन है?

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके भूतपूर्व अध्यक्ष श्री सी विजयराघवाचार्यके दामाद श्री तथाचार्यने महात्मा गांधीको जो 'खुली चिट्ठी' भेजी थी अुसके अुत्तरमें अुन्होंने निम्नलिखित पत्र लिखा था। अिस खुली चिट्ठी में श्री तथाचार्यने हरिजनोंको मन्दिर प्रवेशकी अिजाजत देनेसे पहले अुनकी शुद्धि की आवश्यकता पर जोर दिया था

प्रिय मित्र

जिसे आपने खुली चिट्ठी का नाम दिया है वह मुझे मिल गयी है। मैं स्वीकार करता हूं कि आपकी दलील मुझे जंची नहीं। मेरा दृढ़ विचार है कि शुद्धि और प्रायश्चित्त सवर्ण हिन्दुओंको करना है, न कि हरिजनोंको क्योंकि अुनकी बाहरी अस्वच्छताके लिअे भी सवर्ण हिन्दू ही जिम्मेदार हैं।

भीतरसे तो हमें पता नहीं कि कौन अशुद्ध है परन्तु हम अपने पिछले अनुभवसे यह नतीजा निकाल सकते हैं कि विशेषाधिकार-प्राप्त और सबल लोगोंके दिल दमिना और घृणाके शिकार बन जानेसे अधिक अशुद्ध होते हैं।

आपका

मो क गांधी"

८२ गांधीजी और साम्यवादी

साम्यवादियोंका न केवल गांधीजीके सिद्धान्तोंसे मतभेद था परन्तु वे जिस शताब्दीके तीसरे दशकमें कांग्रेसकी सभाओंमें बहुत मुखाद भी करते थे। परन्तु चूंकि गांधीजीके मनमें अुनके प्रति कोअी दुर्भाव नहीं था जिसलिये वे सदा साम्यवादियोंका हृदय जीतनेका प्रयत्न करते थे। जब वे १९२९ में मेरठमें थे तब अुन्होंने वहांकी जेलमें रखे गये साम्यवादी कैदियोंसे मिलनेकी प्रबल अिच्छा प्रगट की। जिन लोगों पर प्रसिद्ध मेरठ षड्यंत्रके सिलसिलेमें मुकदमा चलाया जा रहा था।

जब वे जेलमें पहुंचे तो कैदियोंको अेक जैसे मुलाकातीको देखकर आश्चर्य हुआ जिसके आनेकी अुन्हें कमसे कम आशा थी। अुन्होंने गांधीजीका अिन शब्दोंके साथ अभिवादन किया साफ बात यह है कि हमें आपके आनेकी आशा नहीं थी।

गांधीजीने अुत्तर दिया अवश्य ही आपको आशा नहीं होगी। आप मुझे नहीं जानते। आपके साथ मेरा मतभेद हो सकता है। आप कांग्रेसकी सभाओंमें अुपद्रव भी मचा सकते हैं। परन्तु मेरा धर्म मुझे यह सिखाता है कि मैं विशेष प्रयत्न करके भी अपने विरोधियोंके प्रति आदर प्रगट करूं और जिस प्रकार अुन्हें प्रत्यक्ष दिखा दूं कि मैं अुनका बुरा नहीं चाहता।"

८३ 'अहिंसक' शहद

गांधीजीको अपने मित्रोंमें 'अहिंसक शहद' का विज्ञापन करनेका शौक था। अेक बार जब अुन्होंने अेक मित्रसे अैसे शहदका जिक्र किया तो अुसने अुनसे पूछा कि जिस शब्दसे आपका मतलब क्या है। गांधीजीका जवाब यह था

वैज्ञानिक मधुमक्खी-पालकों द्वारा वैज्ञानिक ढंगसे निकाला हुआ शहद। वे मक्खियां पालते हैं और अुन्हें मारे बिना अुनसे शहद जिकट्ठा करवाते हैं। जिसीलिये मैं अिस निर्दोष या अहिंसक शहद कहता हूं। यह अैसा अुद्योग है जिसमें विस्तारकी बड़ी गुंजाजिश है।

अिसमें शंका प्रगट की — लेकिन क्या आप अिसे सर्वथा अहिंसक कह सकते हैं? आप मक्खीसे वैसे ही शहद छीन लेते हैं जैसे बछड़ेसे दूध।"

गांधीजी बोले — आप ठीक कहते हैं। परन्तु दुनियाका काम पूरी तरह तर्कसे नहीं चलता। स्वयं जीवनमें कुछ न कुछ हिंसा रहती ही है और हमें कमसे कम हिंसाका मार्ग पसन्द करना पड़ता है। आप मानेंगे कि शाकाहार तकमें हिंसा है। अिसी तरह मुझे शहद चाहिये तो मुझे मक्खीसे दोस्ती करके जितना भी शहद वह पैदा करके दे सकती है अुतना अुससे पैदा करवाना है। साथ ही यह बात भी है कि वैज्ञानिक मक्खी-पालनमें मक्खीको अुसके शहदसे पूरी तरह कभी वंचित नहीं किया जाता।

८४ कालीका मन्दिर

१९२८की समाप्तिके आसपास अेक नारी-कार्यकर्ताने चाहा कि गांधीजी अुनके साथ कलकत्ते जायं। कार्यकर्ताका तर्क यह था कि अगर हम कलकत्तेका कायापलट कर सकें तो सारे भारतका कर देंगे। गांधीजी वहां चले जायें और अपनी सारी प्रवृत्तियोंका केन्द्र वहीं बना लें। परन्तु अुन्होंने अेक दुःखपूर्ण दृश्यका अुद्घाटन किया जिसे अुन्होंने पिछले कअी बरसोंसे अपने हृदयमें छुपा रखा था। वह दृश्य था कालीका मन्दिर। अुन्होंने कहा — मेरी कठिनाअी यह है। मैं अुसे सह नहीं सकता। मेरी आत्मा अुस हृदयहीन अमानुषिकताके प्रति विद्रोह करती है जो वहां कालीके नाम पर हमेशा चलती है। मुझमें बल होता तो मैं मन्दिरके द्वार पर आसन जमा देता और अुनसे सत्याग्रह कर देता कि अेक भी निर्दोष पशुकी बलि चढ़ानेसे पहले अुन्हें मेरा गला काटना होगा। परन्तु मैं जानता हूं कि मेरे लिअे अिस समय अैसा करना अपने हृदयका दावा साबित किया होता, क्योंकि मैं अभी तक जीभकी लिप्सा पर पूर्ण विजय प्राप्त नहीं कर पाया हूं। और जब तक मैं अैसा न कर सकूं तब तक मुझे अपने दीनताका भार वहन करना ही होगा।

सुनकर मौलाना अेकदम कह अुठे — यह बिलकुल बापूके लायक ही है! मैं अिसे सुननेसे पहले ही सिद्ध कर दे सकता था। वे अैसे आदमी ही नहीं जो किसीके विचार और कार्यकी स्वतंत्रतामें बाधक हों और अिसीलिअे वे हमारे डिक्टेटर बननेके लिअे सबसे योग्य हैं।

८८ दूसरोंके पापकी सजा अपनेको

जो लोग गांधीजीके अनुयायी होनेका दावा करते थे या अुनकी देखरेखमें रहते थे वे यदि अपनी प्रतिज्ञाका पालन करनेमें चूकते या कुछ पाप करते तो गांधीजी अुन्हें कोअी सजा न देकर हमेशा अपनेको दण्ड देते थे। दक्षिण अफ्रीकाके फिनिक्स आश्रममें और साबरमती आश्रममें वहांके कुछ आश्रमवासियोंके नैतिक पतनके लिअे जो अुपवास किये थे वे सर्वविदित हैं। स्वामी भवानीदयालने जो कुछ वर्ष तक फिनिक्स आश्रममें गांधीजीके साथ रहे थे बापूके अिस प्रकार दूसरोंके खातिर आत्म ताड़ना करनेके अेक विशेष अुदाहरणका वर्णन किया है। अेक बार कुछ युवा आश्रमवासी जो हालमें ही अेक महीने तक बिना नमकका भोजन लेनेकी प्रतिज्ञा करनेके बाद आश्रममें भरती हुअे थे सादे भोजनसे अितने अूब गये कि अुन्होंने डर्बनसे मसालेदार और स्वादिष्ठ भोजन मंगवाकर चुपकेसे खा लिया। अुनमें से अेकने जो अिस भोजनमें शरीक हुआ था बापूको अिसकी सूचना दे दी। शामकी प्रार्थनामें जब बापूने अुनसे अेक अेक करके प्रश्न किया तो सबने दृढ़तासे अिनकार कर दिया और सूचना देनेवालेको झूठा बताया। स्वामीजी कहते हैं — अिस पर बापूने बड़े जोरसे अपने ही गालोंको पीटना शुरू कर दिया और कहा — तुमसे सचाअी छुपानेमें कसूर तुम्हारा नहीं मेरा है क्योंकि अभी तक मैंने सत्यका गुण प्राप्त नहीं किया है सत्य मुझसे दूर भागता है। वे अपनेको ताड़ना देते ही रहे। यह बरदाश्तके बाहरकी बात थी अिसलिअे अुक्त आश्रमवासी अेक अेक करके सामने आये और अुन्होंने सब बात स्वीकार कर ली।

८५ 'दुनियाका सबसे बड़ा प्रयोग'

गांधीजीने हमें डरा दिया था। अुनका प्रयोग अितिहासमें सबसे बड़ा प्रयोग था और अुसमें सफल होनेमें बालभरकी ही कसर रही थी। यह बात लॉर्ड लॉयडने खानगीमें १९२२ में — जब गांधीजी ६ सालकी कैदकी मियादमें से १८ मास जेलमें बन्द रह चुके थे — स्वीकार की थी। लॉर्ड लॉयड १९१८ से १९२३ तक बम्बअीके गवर्नर थे और यह बात अुन्होंने प्रसिद्ध अमरीकी पत्रकार मि॰ ड्रयू पियर्सनके सामने स्वीकार की थी जब वे अुनसे पूना मिलने गये थे। लॉर्ड लॉयडके साथ मि॰ पियर्सनकी मुलाकातका समाचार अेडीलेड आस्ट्रेलियाके अखबार 'दि अेडवर्टाअिज़र' में छपा था और अुसमें मि॰ पियर्सनने लॉर्ड लॉयडका अुल्लेख अुनका नाम लेकर नहीं अुन्हें भारतका अेक अुच्चतम अधिकारी बताकर ही किया था।

गवर्नरने मि॰ पियर्सनको जेलमें गांधीजीसे मुलाकात करनेकी अिजाजत देनेसे साफ अिनकार कर दिया और कहा, "गांधीको जेलमें बन्द रखनेका अेक ही तरीका है कि अुसे जिन्दा गाड़ दिया जाय। मगर हम लोगोंको यहां आकर अुसके बारेमें शोर मचाने देंगे तो वह शहीद बन जायगा और जेल दुनियाके लिये मक्का हो जायगी। हमने गांधीको अिसलिये तो कैद नहीं किया कि अुसके सिर पर कांटोंका ताज रखकर अुसे शहीदका सम्मान दें।"

८६ बापू और बा

१९१५ के शुरूमें भारत लौट आनेके बाद जब गांधीजी कस्तूरबाके साथ मद्रास गये थे तब वे अनुभवी पत्रकार श्री जी॰ अे॰ नटेसनके मेहमान हुअे थे। जैसा मालूम होता है कि श्री नटेसनने कस्तूरबाको अनेक अवसरों पर [illegible] लेकर किस बात पर गांधीजीका ध्यान दिलाया। श्री नटेसनने [illegible] अिसके लिये ठहरे नहीं अुन्होंने तुरन्त [illegible] अुस अवसरका [illegible] ही मान लिया हुआ रोष है। और यह [illegible] न जानती [illegible] कि मैं अपने पतिके लिये कीमती कपड़े [illegible]

श्री म्टेसनके मजाकमें यह कहने पर कि आप तो निर्दय पति हैं गांधीजीने फौरन यह प्रत्युत्तर दिया देखिये आप मुझ पर ज्यादती कर रहे हैं। अगर मैं मित्र और दूसरे मामलोंमें अुसकी विच्छाओंके सामने झुकने लगूं तो जिसका यह मतलब होगा कि मैं अपने सिद्धान्तोंको तिलांजलि दे दूं। वह मेरे विचार पूरी तरह जानती है और मेरे रहन-सहनके ढंगसे पूर्णतया परिचित है। मैंने कभी बार अुससे प्रार्थना की है कि वह मुझसे अलग रहकर अपनेको असुविधासे बचा ले और अपने बच्चोंके साथ सुखसे रहे। परन्तु वह तैयार नहीं होती। वह पतिपरायणा हिन्दू पत्नीकी भांति जहां कहीं मैं जाबूं वहीं मेरे पीछे पीछे चलनेका आग्रह रखती है।

८७ मौ० मुहम्मदअलीको सन्देश

१९२१ में जेलखानेसे छूटनेके बाद मौलाना मुहम्मदअली बड़ी दुविधाकी अवस्थामें पड गये। अेक तरफ तो अुन पर स्वराज्यवादियोंका असर पड़ रहा था क्योंकि अधिकांश स्वराज्यवादी अुनके निकटतम और प्रियतम मित्र थे। दूसरी तरफ गांधीजीके प्रति अुनकी वफादारी थी और गांधीजी अुस समय भी यरवडा जेलमें थे। जिसलिअे जब देवदास गांधी अुनसे मिले तब अुन्हें यह जाननेकी अुत्सुकता थी कि बापूने अुनके लिअे कोअी सन्देश भेजा है या नहीं। सन्देश भेजा गया था और वह जिस प्रकार था

मैं आपको कोअी सन्देश नहीं भेज सकता क्योंकि मैं कैदी हूं। मैंने जेलखानेसे सन्देश भेजनेका सदा ही विरोध किया है। परन्तु मैं कह सकता हूं कि मेरे प्रति आपकी वफादारीसे मुझ पर गहरा असर हुआ है। फिर भी मैं आपसे कहूंगा कि आप पर मेरे प्रति रही आपकी वफादारीका जितना असर नहीं होना चाहिये जितना देशके प्रति आपकी वफादारीका। मेरे विचार बहुत सुपरिचित हैं। मैंने जेल जानेसे पहले अुन्हें प्रगट कर दिया था और तबसे अुनमें काफी परिवर्तन नहीं हुआ है। मैं आपको विश्वास दिला दूं कि अगर आप मुझसे भिन्न मत रखना पसन्द करेंगे तो आपके और मेरे बीच सम्बन्धोंमें रत्तीभर भी फर्क नहीं पड़ेगा।

सुनकर मौलाना अेकदम कह अुठे — यह बिलकुल बापूके लायक ही है! मैं अिसे सुननेसे पहले ही सिद्ध कर दे सकता था। वे अैसे आदमी ही नहीं जो किसीके विचार और कार्यकी स्वतंत्रतामें बाधक हों और अिसीलिअे वे हमारे डिक्टेटर बननेके लिअे सबसे योग्य हैं।

८८ दूसरोंके पापकी सजा अपनेको

जो लोग गांधीजीके अनुयायी होनेका दावा करते थे या अुनकी देखरेखमें रहते थे वे यदि अपनी प्रतिज्ञाका पालन करनेमें चूकते या दुष्ट पाप करते तो गांधीजी अुन्हें कोअी सजा न देकर हमेशा अपनेको दण्ड देते थे। दक्षिण अफ्रीकाके फिनिक्स आश्रममें और साबरमती आश्रममें अुन्होंने कुछ आश्रमवासियोंके नैतिक पतनके लिअे जो अुपवास किये वे सर्वविदित हैं। स्वामी भवानीदयालने जो कुछ वर्ष तक फिनिक्स आश्रममें गांधीजीके साथ रहे थे बापूके अिस प्रकार दूसरोंके खातिर आत्मताड़ना करनेके अेक विशेष अुदाहरणका वर्णन किया है। अेक बार कुछ युवा आश्रमवासी जो हालमें ही अेक महीने तक बिना नमकका भोजन लेनेकी प्रतिज्ञा करनेके बाद आश्रममें भरती हुअे थे सादे भोजनसे अितने अुकता गये कि अुन्होंने डर्बनसे मसालेदार और स्वादिष्ठ भोजन मंगवाकर चुपकेसे खा लिया। अुनमें से अेकने जो अिस भोजनमें शरीक हुआ था बापूको अिसकी सूचना दे दी। शामकी प्रार्थनामें जब बापूने अुनसे अेक अेक करके प्रश्न किया तो सबने जिम्मेदारीसे अिनकार कर दिया और सूचना देनेवालेको झूठा बनाया। स्वामीजी कहते हैं — अिस पर बापूने बड़े जोरसे अपने ही गालोंको पीटना शुरू कर दिया और कहा "मुझसे सचाअी छुपानेमें कसूर तुम्हारा नहीं मेरा है, क्योंकि अभी तक मैंने सत्यका गुण प्राप्त नहीं किया है, सत्य मुझसे दूर भागता है।" वे अपनेको ताड़ना देते ही रहे। यह बरदाश्तके बाहरकी बात थी अिसलिअे सब आश्रमवासी अेक अेक करके सामने आये और अुन्होंने सब बात स्वीकार कर ली।

८९ 'कैदी नं० १७३९'

जब महात्मा गांधी नवम्बर १९१३ में फ्लमफोन्टीन जेलमें दक्षिण अफ्रीका सरकारके कैदी थे तब अुनके जेलकार्ड पर, जो अब भी लोकमल गोविन्दवल्लभ मलकानीके पास है, और बाताके साथ यह ब्योरा भी लिखा हुआ था

नं १७३९
नाम मोहनदास करमचन्द गांधी
धर्म हिन्दू
अुम्र ४१
पेशा वकालत
सजाकी तारीख ११-११-११
रिहाअीकी तारीख १०-११-१४
सजा हुअी २ पौण्ड या ३ महीने (चारों अपराधोंमें से प्रत्येक पर)।

गांधीजीको नेकचलनीके लिये ९ नंबर मिले थे। चूंकि अुन्होंने जुर्माना अदा नहीं किया था अिसलिये अुन्हें पूरी सजा काटनी पड़ी थी। कार्ड पर अुनके अंगूठेकी निशानियां लगी हुअी हैं।

कार्ड पर अुनको जेलमें जो भोजन दिया जाता था अुसके बारेमें ये शब्द भी लिखे हुअे हैं धार्मिक सिद्धान्तके कारण शाकाहारी भोजन दिया गया। खुराक १२ केले १२ खजूर, ३ टमाटर और १ नीबू हर बार, २ औंस जैतूनका तेल और ३ चुनी हुअी मूंगफलियां।

९० अखबारी झूठ

जब भारतके भूतपूर्व वाअिसराय लॉर्ड अर्विन (जो बादमें लॉर्ड हैलीफेक्स कहलाये) संयुक्त राज्य अमरीकामें ब्रिटिश राजदूत होकर गये तो लंदनके अखबार सिन्वर पोस्ट में अेक लेखकने अुनके विषयमें यह मनगढ़न्त किस्सा लिखा था

वे (लॉर्ड अर्विन) भारत गये और पांच साल रहे। वे मोहनदास क० गांधीसे मिले और भारतके अुस दुबले-पतलेके सम्बन्धमें जितना धार्मिक

अुत्साह हो सकता था अुसकी अपेक्षा अधिकतर धार्मिक अुत्साह दिखाकर अुन पर विजय प्राप्त की।

अेक बार लॉर्ड अरविनसे अेक लम्बी बातचीतमें मात खानेके बाद अुस पर अपना मंतव्य जाहिर करते हुअे महात्माने यह कहा था कि आप अैसा मसीहसे तर्क नहीं कर सकते।

समय समय पर गांधीजी जो भूख हड़तालें किया करते थे अुनमें से अेकके समय लॉर्ड हेलीफेक्सने युक्तिपूर्वक कहा गांधी अब अैसी भाषामें बोल रहे हैं जिसे भारतके लोग समझते हैं। अगर मैं अभी दिल्लीकी सरकारी अिमारतोंके मुख्य मार्गमें पहुंच जाअूं और फर्श पर बैठकर अुस वक्त तक कुछ भी खानेसे अिनकार कर दूं जब तक भारतीय अविनय कानून भंग आन्दोलनके विषयमें समझौता न हो जाय तो चंद रोजमें झगड़ा खतम हो जाय। हां ये चन्द रोज बीतनेसे पहले ही लंदनके मेरे अुदार अनुदार और मजदूर दलोंके साथी मुझे घर बुला लेंगे और मेरे वहां पहुंचने पर मेरे लिअे अेक काल-कोठरी तैयार रखेंगे।"

जब प्रसिद्ध भारतीय पत्रकार ख्वाजा अहमद अब्बासने अुपरोक्त कहानी की तरफ महात्माजीका ध्यान दिलाया तो अुन्होंने ख्वाजाको सेवाग्रामसे यह लिखा

आपका निशान बनाया हुआ हिस्सा बिलकुल झूठ है। लॉर्ड अिरविनके बारेमें जो कहा गया है वह भी झूठ है। हमारी मुलाकात विशुद्ध राजनीतिक मुलाकात थी।

९१ कच्छ कैसे आया?

गांधीजीने पूरी पोशाक जो वे तब तक पहनते रहे थे कैसे छोड़ी और कच्छ ही पहनना क्यों शुरू कर दिया जिसका हाल अुन्होंने अेक मुलाकातके दौरानमें बताया था। अुन्होंने कहा

१९२१ में मौलाना मुहम्मदअली और मैं जब दक्षिणके दौरे पर जा रहे थे तब अुन्हें वाल्टेयरमें गिरफ्तार कर लिया गया। बेगम मुहम्मद अली भी हमारे साथ सफर कर रही थी। अुनसे मौलानाको जुदा कर दिया गया। मुझ पर जिसका गहरा असर हुआ। बेगम साहबाने अुदासीको

बहादुरीके साथ बरदाश्त किया और मद्रासमें सभाओंमें गयीं। मैंने अुन्हें मद्रासमें छोड़ दिया और मदुरा तक गया। रास्तेमें मैंने हमारे डिब्बेमें जिन लोगोंको देखा अुन्हें कुछ खयाल ही नहीं था कि क्या घटनायें हुअी हैं। लगभग निरपवाद रूपमें वे सब बढ़िया विदेशी वस्त्रोंमें सुसज्जित थे। मैंने अुनमें से कुछके साथ बातचीत की और खादीकी वकालत की। कारण मेरे पास भली वस्तुओंकी रिहाअी करानेका खादीके सिवा और कोअी अुपाय नहीं था। अुन्होंने सिर हिलाते हुअे कहा हम अितने गरीब हैं कि खादी नहीं खरीद सकते। वह बहुत महंगी है। मैं अुनके कथनकी सचाअीका सार समझ गया। मैं कुर्ता टोपी और पूरी धोती पहने हुअे था। जिन लोगोंने तो आंशिक सत्य ही कहा था जब कि करोड़ों लोग जो अपनी चार अिंच चौड़ी और लगभग अुतने ही फुट लम्बी लंगोटीके सिवा मजबूरन् नंगे रहते हैं अपने हाथ-पैरों द्वारा नग्न सत्यको प्रकट कर रहे थे। अगर मैं सभ्यताकी हदमें रहते हुअे अपने पहनावेमें से जितना कपड़ा कम कर सकता था अुतना न करता और जिस प्रकार अर्धनग्न जनसाधारणके और भी बराबर न बन जाता तो मैं अुन्हें क्या भारभर जवाब दे सकता था? मदुराकी सभाके बाद दूसरे दिन सुबह ही मैंने अपना यह निश्चय पूरा किया।

१२ 'ताजके सच्चे हकदार ये हैं'

गांधीजी दक्षिण अफ्रीकासे भारत लौटे अुसके थोड़े ही समय बाद अप्रैल १९१५ में मद्रासमें अुन्हें और कस्तूरबाको अेक मानपत्र भेंट किया गया। अुसका अुत्तर देते हुअे गांधीजीने कहा

अध्यक्ष महोदय, जिस मानपत्रमें जो भाषा अिस्तेमाल की गयी है यदि मैं और मेरी पत्नी अुसके चौथे हिस्सेके भी हकदार हैं तो आप अुन लोगोंके लिअे किस भाषाका अुपयोग करेंगे जिन्होंने दक्षिण अफ्रीकामें हमारे पीड़ित देशभाअियोंके खातिर अपने प्राण गंवा कर अपना काम पूरा किया? नागप्पन और नारायणस्वामी जैसे सत्रह-अठारह वर्षके लड़कोंके लिअे आप किस भाषाका प्रयोग करना चाहेंगे जिन्होंने शुद्ध श्रद्धासे मातृभूमिकी अिज्जतके लिअे तमाम तकलीफें तमाम कष्ट और

तमाम अपमान बहादुरीसे बरदाश्त किये ? अुस सबह् वर्षकी प्यारी लड़की बस्सिअम्माके बारेमें आप कौनसी भाषा काममें लेना चाहते हैं जो मेरिस्सबर्ग जेलसे हाड़-पंजर बनकर और बुखारकी हालतमें छूटी थी और फिर महीने भरके बाद ही अुसकी शिकार बनकर चल बसी थी ? यह दुर्भाग्य है कि मुझे और मेरी पत्नीको प्रकाशमें रखकर काम करना पड़ा है और हम जो काम कर पाये अुसे आपने बेहद बड़ा चढ़ा रूप दे दिया। आप जो ताज हमारे सिर पर सौंपना चाहते हैं अुसके सच्चे हकदार वे हैं।

अुन्होंने आगे कहा आपने जिन विशेषणोंकी हम पर प्रेमपूर्वक किन्तु अवमझासे वर्षा की है अुन सबके हकदार वे नौजवान हैं। अुस सग्राममें केवल हिन्दू ही नहीं थे अुसमें मुसलमान पारसी औसाओ तथा भारतके सगजब हर भागके प्रतिनिधि थे। अुन्होंने हम सब लोगोंके सामने जो खतरा मुह बाये खड़ा था अुसे देख लिया था और यह भी समझ लिया था कि भारतीयोंके नाते अुनका भाग्य क्या होगा और अुन्होंने—केवल अुन्होंने पशुबलके मुकाबलेमें अपने आत्मबलको खड़ा किया।

९३ डॉक्टरसे द्वन्द्वयुद्ध

आगाखां महलकी नजरबन्दीके जमानेमें गांधीजीको मलेरिया बुखार हो गया था। परन्तु दिल्लीके अधिकारियोंने बम्बअी सरकारकी यह प्रार्थना स्वीकार नहीं की कि गांधीजीको कलकत्तेके विख्यात चिकित्सक (और अब बगालके मुख्यमंत्री) डॉ बी सी रायके निकालमें रख दिया जाय। डॉ राय अुस समय संयोगवश बम्बअीमें ही थे। बहुत पत्र व्यवहारके बाद डॉ रायने किसी आगाखां महलमें गांधीजीसे मिलनेकी अनुमति प्राप्त कर ली गयी।

डॉ राय परन्तु, महात्माजी आप समझते हैं मैं किसका अिलाज करने आया हू ? मोहनदास क गांधीका नहीं परन्तु अुस व्यक्तिका अिलाज करने आया हू जो मेरी दृष्टिमें ४ करोड आदमियोंका प्रतिनिधि है। कारण मैं अनुभव करता हू कि वह मर गया तो ४ करोड मर जायगे और वह जीवित रहा तो ४ करोड जीवित रहेंगे।

जिसका कोअी अुत्तर नहीं मिला। गांधीजीके पास झुक जानेके सिवा कोअी चारा नहीं था। कुछ देर ठहरकर वे बोले, "बहुत अच्छा डॉ. विधान, आपकी जीत हुअी। आप मुझे जो दवा देना चाहें दीजिये। मैं ले लूंगा। परन्तु मुझे आश्चर्य है कि आपने औषधिके बजाय कानूनका अध्ययन क्यों नहीं किया। आपमें जितनी विलक्षण कानूनी सूझ है।"

डॉ. रायने गर्वके साथ कहा, "ओीश्वरने मुझे डॉक्टर अिसलिअे बनाया है कि वह जानता था कि अेक दिन अैसा आयेगा जब मुझे मुल्कके सबसे प्रिय पुत्र हमारे महात्मा गांधीकी चिकित्सा करनेका सौभाग्य प्राप्त होगा।"

"फिर भी आप वकीलकी तरह ही दलील कर रहे हैं," गांधीजीने कहा।

९४ कंजूस बापू

सेवाग्राम आश्रमके भोजनालयमें अेक तख्ती है जिस पर बापूकी ओरसे यह सूचना दी गअी है: "मुझे आशा है कि सब लोग आश्रमकी सम्पत्तिको स्वयं अपनी और गरीब जनताकी सम्पत्ति समझेंगे। नमक भी जरूरतसे ज्यादा नहीं परोसा जाना चाहिये। पानी भी व्यर्थ खर्च नहीं करना चाहिये।" मैं अिस मितव्ययिताका साक्षी रहा हूं जब मैं सन् १९१९ में पहले-पहल बम्बअीके मणिभवनमें गांधीजीके साथ हुआ। अुस समय मेरा अेक काम यह था कि गांधीजीके लिखाये या बताये मुताबिक पत्र लिखूं। अेक बार अुनके आदेश प्राप्त करनेके बाद मैंने पत्र लिखनेका कागज अुठाया। मैं पत्र शुरू ही करनेवाला था। परन्तु बापू मेरी गतिविधि ध्यानसे देख रहे थे। अुन्होंने तुरन्त मुझे अुलाहना देते हुअे टोका, "क्या आधेसे काम नहीं चलेगा?" और फिर आधा ही लिया गया।

युद्ध आरम्भ होनेसे पहले भी जब कागज न तो महंगा था न दुर्लभ, बापू कभी अेक तरफ लिखे हुअे कागजको रद्दीमें डालने नहीं देते थे। अैसे सारे इकतरफा लिखे कागज आश्रमके भारी पत्रव्यवहारमें से ध्यानपूर्वक छांट लिये जाते हैं। व अुनसे मिसलोंका अच्छा नमूना बनाने

और दूसरे कामोंके लिये कागजकी पिछली तरफका अुपयोग करते हैं। वे पत्र लिखनेके अेक कागजकी आधी बराबर पर्चियां काटकर अुन पर सभी आश्रमवासियोंको अुतने ही अलग अलग व्यक्तिगत पत्र लिखते हैं और अुन सबको अेक ही लिफाफेमें भेज देते हैं।

अिसलिये बापू न सिर्फ आश्रमवासियोंके ही बापू हैं किन्तु भारतके करोड़ों नर-नारियोंके बापू हैं, दरिद्रनारायणके पुजारी हैं। वे अनाजका अेक दाना या पानीकी अेक बूंद भी बरबाद करना बरदाश्त नहीं कर सकते। ये अुद्गार श्री अप्पासाहब पटवर्धनने अुपरोक्त घटनाका वर्णन करते हुअे प्रकट किये हैं।

१५ मद्रासमें गांधीजी

१९१५ में दक्षिण अफ्रीकासे लौटनेके बाद गांधीजी मद्रासमें स्वर्गीय श्री जी. ए. नटेसनके मेहमान होकर रहे थे। अुन्होंने अपने संस्मरणोंमें अुन दिनोंकी अेक घटनाकी याद दिलाओ है। अुनके मद्रासके निवास कालमें गांधीजीको डॉ. अेनी बेसेंटने अपने मुख्य केन्द्र अड्यार आनेका निमंत्रण दिया था। जब गांधीजी अड्यार पहुंचे तो थियोसॉफीकल सोसायटीकी सुन्दर भूमि पर अुनका स्वागत किया गया और प्राचीन तथा मनोहर शिष्टाचारके साथ अुनकी आव भगत की गयी। गांधीजीको अस पूजनीया महिलाके प्रति जिसने भिन्न देशकी सेवामें अपना जीवन पूरी तरह समर्पित कर दिया था, अत्यन्त आदर और भक्तिभाव था। डॉ. बेसेन्ट अिस विशिष्ट अतिथिको सम्मानके साथ सभा-भवन और कुछ अन्य कमरोंमें घुमाया और फिर अुन्हें अेक बारेमें कमरेके पास ले गयीं जिसमें [illegible] थी। डॉ. बेसेन्ट अेक प्रकारसे पश्चिमी [illegible] आदी थीं। परन्तु गांधीजीके लिये [illegible] और दूसरोंके लिये [illegible] अलग प्रबन्ध था।

[illegible] जब गांधीजीने यहां ठहरनेका कार्यक्रम [illegible] तय किया तो गांधीजीने अपने डेरे पर लौट जानेका आग्रह किया। श्री नटेसन कहते हैं कि मैंने गांधीजीकी

अिस बात पर अपना विरोध प्रगट किया और बताया कि अिससे डॉ॰ बेसेन्टको गहरी पीड़ा होगी और वे मुझसे भी बहुत नाराज होंगी। लेकिन गांधीजी अपने निश्चय पर दृढ़ रहे। श्री नटेसन कहते हैं कि बहुत रात गये गांधीजीने अखबारके मुफ अपनोंसे लिया की।

१६ भिक्षा और आचरण

जब गांधीजी अपने सिंधके दौरेमें कोट्री पहुँचे तो वहांकी कांग्रेसके मंत्रीने अुस अवसर पर अुन्हें २ रुपयेकी थैली भेंट करते हुअे अिस छोटी रकमके लिअे नगरके कार्योंकी तरफसे क्षमा मांगी और यह आशा प्रगट की कि गांधीजी रकमकी तरफ न देखकर अुसके पीछे जो भावना है अुसे देखेंगे और आचरणकी जगह भिक्षाको स्वीकार कर लेंगे। गांधीजीने अिसकी आलोचना करते हुअे कहा कि आचरणकी जगह भिक्षाको तभी माना जा सकता है जब आचरणमें भरसक अधिकसे अधिक कुर्बानी दिखायी दे। हैदराबादके अिन १२ विद्यार्थियोंने ६५ रुपये भेंट किये वे ऐसी दलील दे सकते हैं मगर आप लोगोंने अपनी दानशक्तिके हिसाबसे कुछ भी नहीं दिया है। अिसलिअे मैं आपकी दलीलको स्वीकार नहीं कर सकता और आशा रखता हूं कि अपना चन्दा बढ़ाकर आप अब भी अपनी लाज रखेंगे।

अिस गंभीर अपीलका श्रोताओं पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा क्योंकि मुखियोंने अुसके जवाबमें तुरन्त अपनी थैली २ रुपयेसे बढ़ाकर ५ रुपयेकी कर दी।

१७ नामशूद्रकी श्रद्धा

१९२५ में गांधीजीके पूर्व बंगालके दौरेके दिनोंमें ढाकामें लगभग ७ वर्षके अेक बूढ़े नामशूद्र (अछूत) को अुनके सामने लाया गया। वह गलेमें गांधीजीका चित्र पहने हुअे था और ज्यों ही अुसने गांधीजीको देखा वह अुनके पैरोंमें गिर गया और खूब रोते हुअे बार बार अपनी पुरानी कमरकी बीमारीसे अच्छा हो जानेके लिअे अुन्हें धन्यवाद देता रहा। अुसने कहा कि जब और सब अुपाय बेकार हो गये तो मैंने गांधीजीका

नाम लेना शुरू कर दिया और अेक दिन देखा कि मेरा सारा रोग जाता रहा।

गांधीजीने कहा: "मैंने नहीं, अीश्वरने ही तुम्हें अच्छा किया है।"
परन्तु अुसे कैसे विश्वास होता? अुसके लिअे तो गांधीजीके चित्रके रूपमें ही अीश्वरने दर्शन दिये थे। अुसके साथ बहस करना व्यर्थ था। गांधीजीने कहा: "मगर भाअी मेरे, तुम अपने गलेसे यह चित्र तो कृपा करके हटा दो।" अुसने वैसा ही किया और अीश्वरका नाम लेता हुआ चुपचाप चला गया। शायद अुसे यकीन हो गया कि जिस आदमीने अुसको अच्छा करनेकी जिम्मेदारी लेनेसे अिनकार कर दिया वह अवश्य ही गांधी महाराज नहीं हो सकते जिन्होंने अुसे अच्छा किया था!

१८ दक्षिण अफ्रीकाका विचित्र पुरुष’

स्वर्गीय श्रीमती सरोजिनी नायडूने महात्माजीके साथ अपनी पहली मुलाकातका वर्णन अिस तरह किया है:

प्रथम महायुद्धके पहलेकी बात है। हमने यह अफवाह सुनी कि दक्षिण अफ्रीकासे अेक अजीब आदमी विलायत आ रहा है। अुसके आनेके बारेमें लोग बड़ी दिलचस्पी ले रहे थे। अुसका नाम गांधी था।

लन्दनके अेक बहुत मामूली केन्सिंग्टन मुहल्लेमें मैं अेक मकानकी सीढ़ियां चढ़कर अेक खुले द्वारकी देहली पर खड़ी हुअी तो देखती हूं कि अेक आदमी फर्श पर काले कम्बल पर बैठा है। अुसके चारों ओर अजीब-सी छोटी छोटी पटियां रखी हैं और वह लकड़ीके कटोरेमें से [illegible] [illegible] किसी अजीब-सी चीजके टुकड़े निकाल निकाल कर खा रहा है।

अुसने आंख अुठाकर देखा और कहा: "अच्छा आप हैं?" मैंने कहा: "जी हां।" अुसने पूछा: "खाना खाअियेगी?" मैंने कहा: "हरगिज नहीं। सच मानो यह भयंकर दिखाअी देता है।" अिस प्रकार हंसते हंसते हमारी मित्रता हो गअी, जो अिन सारे वर्षों तक बनी रही, बढ़ती गअी और गहरी होती गअी है।

९९ वचन-पालन

१९२१ में अपने सिन्धके दौरेमें गांधीजीने नौशहरो और पड़ोसी गांवोंके लोगोंको वचन दिया था कि जब मैं हैदराबाद जाते हुओ पडीदन रेलवे स्टेशनसे गुजरूंगा तब आप लोगोंसे मिलूंगा। परन्तु जब बहुत रात गये गाड़ी वहां पहुंची तो अुन्हें यह खयाल नहीं रहा कि यह वही जगह है जहां अुन्हें अिन भले लोगोंसे मिलना था। वे अितने थक गये थे कि स्वयं पूछताछ न कर सके और श्री जयरामदास दौलतराम भी जो अुनके साथ अुसी डिब्बेमें थे अुनसे यह कहनेकी हिम्मत नहीं कर सके कि ये वही लोग हैं जिनसे मिलनेका अुन्होंने वादा किया था। बादमें जब गांधीजीको अपनी भूलका पता लगा तो अुन्होंने नौशहरोके लोगोंको तार दिया और अुसमें अपनी गलती पर अफसोस जाहिर किया और वचन दिया कि अगली बार जब सिन्ध आअूंगा तब आपसे मिले बिना नहीं रहूंगा। आठ वर्ष बीत जाने पर भी अुन्हें अपना वादा याद रहा। (१९२९ की अपनी मुलाकातके समय) गांधीजीने नौशहरोकी अेक सार्वजनिक सभामें अिस घटनाका भावपूर्ण अुल्लेख किया और अीश्वरको धन्यवाद दिया कि अुसने अुन्हें अितने दिन जिन्दा रखकर अपना वचन पालन करनेमें समर्थ बनाया।

१०० गुप्तचरोंको 'सप्रेम'

दिसम्बर १९३१ में लन्दनकी गोलमेज परिषदसे भारत वापिस आते समय विलायती छापेके पहले स्कॉटलैण्ड यार्डके जिन दो हट्टे कट्टे गुप्तचरोंने गांधीजीके बीच मार्गके यूरोपीय प्रवास-कालमें दिन-रात अुनकी रक्षा की थी अुन्हें गांधीजीने सप्रेम अपने हस्ताक्षर-युक्त चित्र भेंट किये थे। यह अुनकी अिस यात्राका अन्तिम कार्य था। अिन गुप्तचरोंके नाम श्री विलियम अिवान्स और श्री विलियम जे. रोजर्स थे और अुन्हें भारत-मंत्री श्री सैम्युअल होरने शिष्टताके तौर पर गांधीजीके साथ भेजा था। क्योंकि महात्माजीने यह अिच्छा प्रकट की थी कि कोअी अुन्हें दुश्मन नहीं बल्कि मित्रोंमें बताये। ये मित्र जैसा कि अुन्होंने कहा था

अुन्हें कृपाके भारसे मार डालेंगे। दोनों मुत्सद्दियोंको गांधीजीसे बड़ी ममता हो गयी थी। गांधीजीने जब अुन्हें हस्ताक्षर करके अपने चित्र दिये तो अुनके अिस कार्यसे अुन पर गहरा असर हुआ और जब मुत्सद्दियोंने यह वचन दिया कि भारतसे मैं आप दोनोंके लिअे योग्य अेक अेक बढ़ियासे बढ़िया अंग्रेजी हाथ-घड़ी भेजूंगा तब तो वे गद्गद ही हो गये।

१०१ पाटौदीका किस्सा

जब नवाब पाटौदी आखिरी बार गांधीजीको प्रणाम करने गये तो अुनके कथनानुसार गांधीजीने सामयिक समस्याओंकी चर्चामें परिवर्तन करनेकी ख्वाहिशसे अचानक मजाक करते हुअे कहा कि मैंने आपसे अेक क्रिकेटका मैच खेलनेका निश्चय कर लिया है। आप मेरी चुनौती स्वीकार करेंगे? मैंने अुत्तर दिया कि स्वीकार तो कर लूंगा मगर अिस शर्त पर कि जब मैच खतम हो जायगा तब आप मुझे अपनेको राजनीतिमें चुनौती देने देंगे। मेरा प्रस्ताव मंजूर हो जाने पर मैंने गंभीर मुद्रा बनाकर कहा कि जहां मुझे यह भरोसा है कि आप मुझे क्रिकेटमें हरा देंगे वहां मुझे यह भी भरोसा है कि मैं आपको राजनीतिमें हरा दूंगा। गांधीजी प्रसन्न बालककी तरह हंसे और प्रेमसे मेरी पीठ पर थप लगा कर (हिन्दीमें) बोले नवाब साहब आपने तो अर्थमें मुझे बाजी मार लिया। कैसे बड़े आदमी थे वे! अुनके जैसा भारी आदमी हम फिर देखनेको नहीं मिलेगा।

१०२ अखबारवालोंको मूक भाषण

जब [illegible] १९४७ मध्यम [illegible] नाम [illegible] अखबारवालोंकी अेक [illegible] गांधीजीका सवाल [illegible] थी। [illegible] महूरकी नजर [illegible] दिन बाद [illegible] प्रताप आये [illegible] मौनदिन था [illegible] वाले [illegible] लिखना [illegible] थी। [illegible] अेकने आपकी [illegible] गांधीजीका [illegible] दिया

हमें बिस मूक मुलाकातसे सन्तोष नहीं है। हम बुस दिनकी मुत्सुकतासे प्रतीक्षा कर रहे हैं जब आप फिरसे बिलकुल तन्दुरुस्त होकर हमसे पहलेकी तरह बातें करेंगे। हमी नहीं सारा भारत और संसारका सारा हिस्सा आपको सुननेका बिन्तजार कर रहा है। — प्रेस।

अेक भी शब्द न कहकर गांधीजीने बुस पर्चेके नीचे यह लिख कर अखबारवालोंके प्रवक्ताको लौटा दिया

"आमीन! अीश्वर हमारी वैसी सहायता करे। करार यह है कि दोनों ओरसे मौन रखा जाय। बिस मौनसे आप जो चाहें समझ सकते हैं।

१०३ 'मजेदार झूठ'

सरदार वल्लभभाजीने जब वे गांधीजीके साथ सेवाग्राममें ठहरे हुअे थे अेक दिन बुनसे पूछा "अखबारोंका कहना है कि लॉर्ड लिनलिथगोने अपने भाषणकी अेक प्रति आपके पास पहले ही भेज दी थी। यह सुझावोंके खातिर किया था या फेरबदलके लिअे?

यह अैसी मजेदार झूठ है जिसे न सुझावोंकी जरूरत है, न फेरबदलकी। यह तो अेकदम रद करनेके काबिल है।

सरदारने हंसकर कहा "परन्तु आपको सभी देवताओंको प्रसन्न करनेकी कला मालूम है। जिस लेखमें आपने वाअिसरॉयके भाषणकी तारीफमें अेक-दो शब्द कहे हैं बुसीमें आपने जयप्रकाश और समाजवादियोंकी प्रशंसामें भी कुछ कहा है!

गांधीजीने हंसीमें शरीक होकर कहा "हां हां। मेरी माने मही तो सिखाया था। वह मुझे हवेली (विष्णु-मंदिर) में जानेको भी कहती थी और शिवालय जानेको भी। और आपको यह सुनकर मजा आयगा कि जब हमारा ब्याह हुआ तो हमें पूजा करनेको न केवल सारे हिन्दू मन्दिरोंमें ही बल्कि अेक फकीरके पूजास्थान पर भी ले जाया गया था!

१०४ नकलकी कलामें नापास

जब गांधीजी हाअीस्कूलके प्रथम वर्षमें थे तब परीक्षाके समय अेक अैसी घटना हुअी जो अुल्लेखनीय है। शिक्षा-विभागके निरीक्षक मि. जाअिल्स निरीक्षणके लिअे आये हुअे थे। अुन्होंने अंग्रेजी हिज्जोंकी जांच करनेके लिअे लड़कोंको पांच शब्द लिखवाये थे। अिन शब्दोंमें अेक Kettle था।

मोहनदासने अुसके हिज्जे गलत लिखे थे। शिक्षकने अुन्हें अपने बूटकी नोकसे बतानेकी कोशिश की परन्तु अुनकी समझमें कुछ न आया। यह अुनकी समझमें ही नहीं आ सकता था कि शिक्षककी यह अिच्छा है कि वे अपने पड़ोसी विद्यार्थीकी स्लेटसे नकल कर लें क्योंकि वे समझते थे कि शिक्षक तो वहां अुन्हें नकल करनेसे रोकनेके लिअे निगरानी कर रहे हैं।

नतीजा यह हुआ कि अुनके सिवा सब लड़कोंके प्रत्येक शब्दके हिज्जे सही पाये गये। केवल वे ही बुद्धू ठहरे। शिक्षकने बादमें अुन्हें यह बुद्धूपन समझानेकी कोशिश की लेकिन बात अुनके मन नहीं अुतरी। वे नकल करने की कला कभी नहीं सीख सके।

१०५ दुःखदायी बात

१९०६ के अन्तमें जब गांधीजी लन्दनमें ठहरे हुअे थे और ब्रिटिश साम्राज्यके मातहत दक्षिण अफ्रीकाके अपने देशवासियोंकी वकालत कर रहे थे तब अुनके अेक दांतमें दर्द अुठ खड़ा हुआ। वे अपनी दक्षिण अफ्रीकी [illegible] के नामसे [illegible] अुनके मांसाहारी मित्र डॉ. जोशिया ओल्डफील्ड [illegible] मिलने आये। गांधीजीने [illegible] बाहर आकर डॉक्टरसे पूछा [illegible] दांत परेशान कर रहा है क्या आप अुसे निकाल सकते [illegible] जिसके बाद जो हुआ वह स्वयं डॉक्टरकी जबानी ही सुन लेना बेहतर होगा

मैंने अनके मुंहकी जांच की तो मालूम हुआ कि अेक जबड़े और [illegible] है और अुसे निकालना जरूरी है।

[illegible] डॉक्टरके पास जाअिये।

अुन्होंने अुत्तर दिया मेरे पास समय नहीं है। अगर आप अभी और यहीं अिसे निकाल दें तो मैं बड़ा अहसान मानूंगा क्योंकि अिससे मेरी अेकाग्रताकी शक्तिमें बाधा पड़ती है।

मैं बाहर गया विमानी मुबार की और कौन आया। अुन्होंने समितिसे क्षमभरके लिये क्षमा मांग की और सोनेके कमरेमें जाकर जरा भी बड़-बड़ या आह तक किये बिना अेक बैसे कठिन दांतका निकलवाना बरदाश्त कर लिया जिससे अधिक कठिन दांत मैंने कभी नहीं निकाला। मैं खुद तो बेहोशीकी दवा सूंघे बिना मुझे हरगिज न निकलवाता। वे कुछ मिनट चुपचाप बैठे रहे मुझे धीमी आवाजमें हृदयसे धन्यवाद दिया और समितिमें वापस चले गये।

१०६ सोला टोप

धूपसे बचनेके अुपायके रूपमें सोला टोपके प्रति गांधीजीका प्रबल पक्षपात था। अुनका खयाल था कि यह टोप अग्र देशोंको पश्चिमी सभ्यताकी अेक वास्तविक देन है। अुन्होंने अिस विषय पर अपने विचारोंकी चोषणा अिस प्रकार की

मेरा संकीर्ण राष्ट्रवाद टोपके विरुद्ध विद्रोह करता है परन्तु मेरा गुप्त विश्ववाद सोला टोपको यूरोपकी थोड़ीसी देनोंमें से अेक मानता है। टोपके विरुद्ध जबरदस्त राष्ट्रीय घृणा न हो तो मैं सोला टोपको लोकप्रिय बनानेके लिये किसी सभाका अध्यक्ष बननेको तैयार हो जाअूं। मेरी रायमें शिक्षित भारतने (यहांके जलवायुमें) अनावश्यक अस्वास्थ्यकर और भद्दी पतलूनको अपना कर और सोला टोपको अपनानेमें आम तौर पर संकोच करके गलती की है। परन्तु मैं जानता हूं कि राष्ट्रीय रुचि-अरुचियोंका निर्णय बुद्धिसे नहीं होता। स्वर्गीय हाजीसेठर यह जोखिम तो अुठा लेते कि मुसके बावरेके कारण दुश्मन अुसे पहचान लें और आसानीसे अपना शिकार बना लें मगर अुस भद्दे बावरेको छोड़नेके लिये वह तैयार नहीं होगा। मुझे आशा नहीं कि भारतवर्ष सोला टोपको आसानीसे अपनायेगा। वह सचमुच अैसा छाता है जिसे आसानीसे नहीं भी ले जा सकते हैं और जो सिरको तो ढक लेता है मगर अुसके जानेमें अेक हाथका

रोकनेकी जरूरत नहीं होती। कलकत्तेका पुलिसवाला तेज धूपसे बचनेके लिये अपनी कमरपेटीमें छाता रखकर अपने यूरोपियन साथीके मुकाबले दोहरा घाटेमें रहता है। यहां मैं पाठकोंका ध्यान टोपके अेक देसी और कारगर मसकरणकी तरफ दिला दूं, जिसे मल्लबारके गरीब किसान काम तौर पर पहनते हैं। यह बिना बर्तेका छाता है जो पत्तोंका बना होता है। और अुसके बीचमें छालका अेक ढांचा होता है जो सिर पर पूरा बैठ जाता है। यह सस्ता है पूरी तरह काम देता है और टोपका मामूली भी नहीं है फिर भी सममग अुतना ही अुपयोगी है।

१०७ सही जीवनका पाठ

गांधीजीने साबरमती आश्रमकी अेक प्रार्थना-सभामें कहा [illegible] आज मुझे आपको अेक प्रेमी बेवकूफीका अुदाहरण देना है जिसमें हम तीन व्यक्ति बराबरके जिम्मेदार हैं। या यों कहना चाहिये कि मेरा हिस्सा सबसे बड़ा है क्योंकि आश्रमके मुखियाकी हैसियतसे मुझसे आप सबमें [illegible] अधिक [illegible] रखनेकी आशा रखी जाती है।

[illegible] आश्चर्य हुआ कि अैसी क्या बात हो सकती है। यहां गांधीजीने बहुत सजीव और अपने रिवाजके अनुसार अतिशयोक्तिपूर्ण ढंगसे अपनी [illegible] व्यापार वर्णन किया। आश्रममें गांधीजीके कमरेमें नदीके सामनेवाली दीवार और छतके बीच जालीका अुजालदान था। यह हवा आनेके लिये रखा गया था मगर अुसमें होकर सूर्यकी किरणें सीधी [illegible] पर आती थी। [illegible]लिये अुन्होंने अेक आश्रमवासीसे कहा [illegible] पर [illegible] रगानेका [illegible] किया। अुसने किसी औरसे कहा और [illegible] गाय बहनोंका मैं आया। अुसने दूसरी [illegible] पर [illegible] [illegible] अच्छा रहेगा। अुसने गांधीजीसे [illegible] गांधीजी सहमत हो गये। परन्तु बहनोंके [illegible] नयाल आया कि मैंने ठीक नहीं [illegible] [illegible] दिया [illegible] ध्यान करने लगे। अुन्होंने [illegible] शामिल [illegible] और फिर [illegible] दिया [illegible] और अुसमें

प्रार्थना-सभाको बताया "हमने दरिद्रताका व्रत लिया है। हम अैसा नहीं कर सकते। मुझे यह सूझना चाहिये था कि अेक कपड़ेका टुकड़ा वही काम देता जो यह किवाड़ जिस पर दो रुपये और बढ़अीकी तीन घंटेकी मेहनत खर्च होगी। पुट्ठे या कपड़ेके टुकड़े पर कुछ भी खर्च न होता और दो कीलोंसे कोअी भी अुसे लगा सकता था। अिन छोटी छोटी बातोंमें ही हमारे सिद्धान्तोंकी परीक्षा होती है। जिनकी वृत्ति गरीबोंकी है अुन्हींको स्वर्गका राज्य मिलता है। अिसलिअे हमें हर कदम पर अपनी आवश्यकताओं और जरूरतें गरीबोंकी दृष्टिसे घटाना सीखना चाहिये और सचमुच गरीबोंकी वृत्ति धारण करनेकी कोशिश करनी चाहिये।

१०८. बनियोंको फटकार

फरवरी १९२७ में जब गांधीजी अपनी महाराष्ट्रकी यात्राके सिलसिलेमें धूलिया पहुंचे तो स्थानीय व्यापारियोंने जो ज्यादातर बनिये थे अुन्हें अपना अेक बिलकुल अलग मानपत्र और थैली भेंट करनेका आग्रह किया और मानपत्रमें यह दावा किया कि गांधीजी स्वयं वैश्यवर्णके होनेके कारण अुन्हींके आदमी हैं। परन्तु अुन्होंने अपने जातिभाअी का मान बढ़ाया नहीं लगाया था। गांधीजीने अपने अुत्तरमें अुन्हें जो कुछ कहा वह यह था

भारतको ब्राह्मणों क्षत्रियों या शूद्रोंने नहीं गंवाया है। अुसे वैश्योंने गंवाया है और वैश्य ही अुसे फिरसे प्राप्त कर सकते हैं। भारतीय अितिहास अैसे बनियोंके अुदाहरणोंसे भरा है जिन्होंने भारतको हानि पहुंचा कर अंग्रेज व्यापारियोंकी सहायता और सेवा की। जो व्यापारी यहां व्यापारकी तलाशमें आये थे वे अपने व्यापारकी रक्षा करनेके लिअे क्षत्रिय बन गये और व्यापारके आधार पर अपना राज्य कायम रखनेको ब्राह्मण बन गये। हमारा वर्णाश्रम-धर्म यह नहीं कहता कि बनिया क्षत्रिय बनकर अपनी मां-बहनोंकी अिज्जतके लिअे लड़ नहीं सकता और न यह कहता है कि बनिया ब्राह्मणकी भांति ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता या शूद्रकी तरह सेवा नहीं कर सकता। अंग्रेजोंमें ये सब गुण अिकट्ठे हो गये और

भुसकी बिस करामातसे वंचित होकर हम अपना धर्म भूल गये हम कायर बन गये हमने बनियेका असली काम कृषि गोरक्षा और वाणिज्य भुला दिया और मातृभूमिके प्रति हम विश्वासघाती बन गये। आप अब फिरसे सच्चे वणिक बनकर सारा राष्ट्रीय व्यापार पुनः अपने हाथमें करके स्थितिको सुधार सकते हैं। मैं चाहता हूं कि हम भगवद्गीतामें वर्णित आदर्श वैश्य अर्थात् असे वैश्य बन जायं जिनका स्वाभाविक धर्म अपने देशके लिये गोरक्षा खेती और व्यवसाय करना है।

१०९ अेक अखबारी गप

अेक प्रसिद्ध अंग्रेज पत्रकार जॉर्ज स्लोकोम्बने १९३ में गांधीजी द्वारा छेड़े गये नमक-सत्याग्रह आन्दोलनकी खबरें योग्यतापूर्वक भेज कर विलायत जनताकी नजरोंमें अच्छा नाम कमाया था। परन्तु भुन्होंने गांधीजीके बारेमें अेक असाधारण मनगढ़न्त किस्सा भी फैलाया। भिसे भुन्होंने 'भुत्तम आधार' जाहिर किया भुसकी बिना पर भुन्होंने अेक कल्पित मुलाकातका वर्णन प्रकाशित किया जिसमें कहा गया कि कलकत्तेके सरकारी भवनमें महात्माजी और ब्रिटिश युवराज (आजकलके ड्यूक ऑफ विंडसरके) मिले और गांधीजीने भारतके भावी सम्राट् के चरणोंमें साष्टांग प्रणाम करके भुनसे भारतवासियोंके प्रति भुदारताका व्यवहार करनेकी याचना की।

भिस प्रकाशनका भुत्तर गांधीजीकी तरफसे अेक पत्र द्वारा भेजा गया जिसमें भुन्होंने और बातोंके साथ साथ यह भी कहा था मि स्लोकोम्ब मुझे आपसे आशा थी कि आप ज्यादा बुद्धिमानीका परिचय देंगे। भिस किस्सेमें तो आपकी कल्पना-शक्तिकी भी अच्छी साख नहीं जमती। मैं गरीबसे गरीब मजूरके आगे भारतके अन्दर दलित अछूतके आगे झुक सकता हूं। झुकनेमें शरीक होनेके कारण घुटने टेक दूंगा भुसके पैरोंकी धूल भी सिर पर धारण कर लूंगा। परन्तु मैं युवराज तो क्या सम्राट्के सामने भी साष्टांग प्रणाम नहीं करूंगा। भिसका सीधा-सादा कारण यह है कि वे अेक अभिमानी ताकतके प्रतिनिधि हैं। मुझे हाथीसे कुचला जाना मंजूर हो सकता है मगर मैं भुसके आगे साष्टांग

नमस्कार नहीं करूँगा। हाँ, चोटीको कटवाने का हुक्म देने पर मैं अुसके सामने नत हो जाअूँगा।

११० माताको दिया हुआ वचन

मैट्रिक पास करनेके बाद जब गांधीजी बैरिस्टरीका अध्ययन करनेके लिअे अिंग्लैंड जानेको जहाजमें सवार हुअे तो अेक अंग्रेज सहयात्रीने जो अुनसे अुम्रमें बड़ा था अुनकी ओर आकृष्ट होकर अुनसे बातचीत शुरू की। गांधीजी अपनी आत्मकथा में कहते हैं, अुसने मुझसे पूछा कि मैं क्या खाता हूँ, क्या काम करता हूँ, कहाँ जा रहा हूँ, शरमीला क्यों हूँ अित्यादि। अुसने मुझे खाना खानेके लिअे मेज पर आनेकी भी सलाह दी। मांससे परहेज करनेके मेरे आग्रह पर वह हँसा और जब हम लाल समुद्रमें थे तब मित्रभावसे बोला, यहाँ तक तो यह सब ठीक था लेकिन बिस्केकी खाड़ीमें आपको अपना निर्णय बदलना पड़ेगा। और अिंग्लैंडमें तो अितनी ठंड पड़ती है कि वहाँ मांसके बिना जिन्दा रहना नामुमकिन है।

मैंने कहा, लेकिन मैंने सुना है कि लोग वहाँ मांस खाये बिना भी रहते हैं।

वह बोला, विश्वास रखिये यह बिलकुल झूठ है। जहाँ तक मैं जानता हूँ वहाँ कोअी भी मांसाहार किये बिना जिन्दा नहीं रहता। आप देखिये मैं शराब पीता हूँ मगर आपसे पीनेको नहीं कहता। परन्तु मेरा यह खयाल जरूर है कि आपको मांस खाना चाहिये, क्योंकि अिसके बिना आप वहाँ जी नहीं सकते।

आपकी कृपापूर्ण सलाहके लिअे मैं आपका कृतज्ञ हूँ परन्तु मैंने अपनी माँको मांस न छूनेका शपथपूर्वक वचन दिया है अिसलिअे मुझे खानेका मैं खयाल भी नहीं कर सकता। अगर अुसके बिना काम चलना असम्भव होगा तो मैं भारत लौट जाअूँगा, मगर वहाँ रहनेके लिअे मांस नहीं खाअूँगा।

गांधीजी यह भी कहते हैं कि जब अुन्होंने बिस्केकी खाड़ीमें प्रवेश किया तब अुन्हें मांस या मदिराकी जरूरत मालूम नहीं हुअी।

१११ अेक अंग्रेज नर्सका अुलाहना

१९२४ में यरवडासे छूटकर आनेके बाद गांधीजीने अपने जेल-जीवनका वर्णन करते हुअे बाहरी जगतको जेलखानेकी भीतरी घटनाओंके बारेमें कअी दिलचस्प और अज्ञात बातें बताअीं। अुन्होंने लिखा

मेरी अंग्रेज नर्स बड़ी दक्ष थी। अुसे मैं जालिम कहता था क्योंकि वह विविध प्रेमपूर्ण तरीकोंसे यह आग्रह करती थी कि मैं जितनी खुराक और नींद लेता था अुससे अधिक लूं। मैं हाअुस सर्जन और अुस नर्सकी देखरेखमें खानगी वार्डमें सही-सलामत पहुंचा दिया गया अुसके बाद अुसने होठों पर मुस्कुराहट और आंखोंमें शरारतके साथ मुझसे कहा जब मैं आप पर अपने छातेसे छाया किये हुअे थी तब यह सोचकर मुझे मुस्कुराहट आये बिना नहीं रही कि आपके जैसे प्रत्येक ब्रिटिश वस्तुका भयंकर बहिष्कार करनेवाले आदमीके प्राण अेक ब्रिटिश सर्जनने ब्रिटिश औजारोंकी मददसे और ब्रिटिश दवाअियां देकर तथा अेक ब्रिटिश नर्सने अपनी सेवाओं द्वारा बचाये हैं। क्या आप जानते हैं कि जब हम आपको यहां लाये तब आप पर छाया करनेवाला छाता ब्रिटेनका बना हुआ था?

११२ 'मेरे लिअे प्रार्थना करो'

फरवरी १९२४ में यरवडा जेलसे छूट कर आनेके बाद जब गांधीजी अस्पतालमें स्वास्थ्यलाभ कर रहे थे तब वहां हमेशा आनेवालोंमें अेक बूढ़ा सेवा-निवृत्त अंग्रेज सैनिक भी था। वह हर दूसरे दिन फूलोंका गुलदस्ता लेकर आता और अबाधित रूपमें बापूके कमरेमें चला जाता। अुसे रोकना सर्वथा असंभव था। वह बापूके पास सबीरकी तरह दौड़ा जाता, अुनसे हाथ मिलाता और कुछ शब्दोंमें हर्ष और अुत्साहका सन्देश देता और चला जाता। "गुड डे सर, मैं देखता हूं कि आप अलबत्ता बहुत अच्छे हैं। मुझे मालूम है आप अवश्य अच्छे हो जायंगे। आपकी अुम्र क्या है? पचपन साल। अरे यह तो कुछ भी नहीं। आप जानते हैं मैं ८२ बरसका हूं। आप अच्छे हो जाअिये, अवश्य हो जाअिये।"

अेक दिन वह ठहर गया और अुसने पूछा, "मि. गांधी, मैं आपकी कुछ सेवा कर सकता हूं?"

बापूने कहा, "नहीं, मेरे लिअे प्रार्थना कीजिये।"

"सो तो करूंगा ही। परन्तु बताअिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं? जरूर बताअिये। मुझे आप अपना साथी समझिये।"

बापूने मुस्कराकर अुत्तर दिया, "विश्वास रखिये, मेरे मित्रोंमें कअी अंग्रेज हैं जिन्हें मैं सगे भाअीसे भी अधिक समझता हूं।"

अुस आदमी पर अिसका गहरा असर हुआ और वह गांधीजीको यह विश्वास दिलाकर चला गया कि वह दिनमें तीन बार प्रार्थना करता है कि भगवान गांधीजीको अुसके जैसी अुम्र दे। अुसने यह भी कहा कि बहुतसे अंग्रेज अुनके लिअे प्रार्थना करते हैं और कअी अंग्रेज अुनका कुशल-क्षेम पूछते रहते हैं।

११३ अविस्मरणीय स्मृतियां

मि हरमन कैलनबैक कोअी २१ वर्षके वियोगके बाद गांधीजीसे मअी १९३७ में मिलने आये। अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकामें गांधीजीके साथकी कुछ अविस्मरणीय स्मृतियोंका वर्णन करते हुअे श्री महादेव देसाअीको बताया कि अेक बार हमारी सैरके समय भयंकर तूफान आया। मूसला धार पानी गिर रहा था और बिजली और तूफानके मारे दूसरा कोअी शब्द सुनाअी नहीं देता था। जब हम अेक सड़कको पार कर रहे थे तो अेक ट्रामगाड़ी हम दोनोंको लगभग छूती हुअी सपाटेसे निकल गअी। अुस दिन केवल सद्भाग्य ही था कि हम मारे नहीं गये। अुस अवसर पर बापूने कहा   यह मौत शानदार होती। मरनेका डर नहीं था क्योंकि तब हम दोनों अपने आदर्शोंके अनुसार जीनेका भरसक प्रयत्न कर रहे थे। और प्रयत्न करते करते मरनेसे अधिक शानकी बात और क्या हो सकती है? यह अैसी चीज है जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मुझे अब भी दिखाअी देता है कि वह ट्रामगाड़ी हमारे पाससे गुजर रही है और हम अुससे टकरा कर गिरनेसे बाल-बाल बच गये हैं। अुस वार्तालापमें ही मैंने यह निश्चय किया था कि अगर कोअी आदमी अैसा है जिसके लिअे मैं प्राण तक निछावर कर सकता हूं तो वह गांधी है। मगर मैं यह भी स्वीकार कर लेता हूं कि मुझमें और किसीके खातिर प्राण देनेका साहस नहीं है।

मि कैलनबैकका गांधीजीके साथके जीवनकी अेक और भी असाधारण घटना याद थी। १९१४ में जब वे दोनों जहाज द्वारा [illegible]की यात्रा कर रहे थे तब गांधीजीको पता चला कि मि कैलनबैकके पास दो कीमती दूरबीन हैं। गांधीजी जानते थे कि अुनके मित्रको दूरबीनका शौक है परन्तु दोनों बहुत समयसे शौकीन चीजें छोड़ देने और सादा जीवन व्यतीत करनेकी प्रतिज्ञा ले चुके थे। मि कैलनबैकने बताया कि गांधीजीको जब यह मालूम हुआ कि वे कीमती दूरबीनें अनकी अनमनिक बिना लगायी गअी हैं तो अुन्हें बहुत दुःख हुआ। मि कैलनबैकने यह भी बताया कि अन्होंने मुझसे दूरबीन समुद्रमें फेंक देनेको कहा। मैंने कहा कि मेरा जी नहीं मानता। आप जिनका

क्षमा तो मेरे मांगे बिना ही आपकी तरफसे मिली हुअी है। परन्तु मैंने मूर्खकी तरह अिस बातका विरोध किया नहीं अब मैं करूँगा। अब आप जब चाहें और जिस डॉक्टरसे चाहें मेरी परीक्षा करा लीजिये बशर्ते कि सरकार अिजाजत दे दे। मैं समझता हूँ कि अिस परीक्षाका परिणाम प्रकाशित नहीं होना चाहिये क्योंकि अुसका राजनीतिक अुपयोग होनेका डर है। मुझे यह भी कह देना चाहिये कि डॉक्टरी परीक्षा हुअी भी तो मुझसे अुपवासके आरम्भ पर असर पड़नेकी संभावना नहीं है। और बातें मिलने पर करेंगे। यह तो सिर्फ अपनी आत्माको अुस अशुद्धिसे मुक्त करनेके लिये लिखा है जो कल अुसमें अुपकैसे घुस गयी थी। आपका और घरवालोंको प्रेम। —बापू

परन्तु दूसरे दिन राजाजी मुझसे मिलने आये और कहने लगे कि माफी मांगनेकी तो कोअी बात ही नहीं थी। दोष तो आपकी अपेक्षा हमारा अधिक था और अब हमने परीक्षा न करानेका निश्चय कर लिया है।

— हरिजन में महादेव देसाअी

११८ कोढ़ियोंके साथ

स्व. श्री महादेव देसाओी श्री महात्माजीके सेवाग्रामके जीवनके रेखाचित्रोंमें यह लिखकर छोड़ गये हैं

"सेवाग्राम आश्रमके बीमारोंमें अेक कोओी पंडित भी हैं। वे मरहठवाड़ेमें हमारे साथ राजनीतिक कैदी थे। यह रोग अुन्हें वहीं लगा था या वहां जिसका निदान हुआ था — मुझे ठीक याद नहीं है। वे संस्कृतके प्रगाढ़ पंडित हैं और संस्कृतमें जिस तरह बात करते हैं मानों वह अुनकी मातृभाषा हो। बरसों तक अनाथकी तरह भटकते रहनेके बाद और जो बालक रोग अब बहुत आगे बढ़ी हुआी स्थितिमें है अुसकी ग्लानिके मारे अनिश्चित कालके लिअे अुपवास तक करनेके बाद वे अेक दिन यहां आ पहुंचे। अुनका कहना था कि मेरी हड्डियां अब यहीं गिरेंगी मैं जानता हूं कि मुझे यहां शरण मिलेगी और निकालने पर भी मैं यहांसे नहीं जाअूंगा।

गांधीजीने कहा मैं आपको कैसे अिनकार कर सकता हूं? अगर मैं क्षय-पीड़ित डाक्टरको रख लेता हूं तो आपको क्यों न रखना चाहिये? डाक्टरकी देखभालके लिअे वा है। बाक्टरो देसाओीसे लड़का प्रेम है और मुझे विश्वास है कि अुनकी देखभाल की जायगी। परन्तु आपकी देखभाल मैं न करूंगा तो कौन करेगा? मैं अपने झोंपड़ेके पास ही आपकी झोंपड़ी बनवा दूंगा। अुसे आप अपना निवासस्थान बना लीजिये। यहां कोओी नहीं रह जायगा तब भी कमसे कम आप तो यहीं रहेंगे।

११९ कस्तूरबाके बचावमें

वे ही डब्ल्यू अेस अर्विन साहब जिन्होंने धमकी दी थी कि अगर स्थानीय अधिकारियोंने गांधीजीको चम्पारन जिला छोड़ देनेको विवश न किया तो वे और अुनके बिहारके निलहे साथी कानून अपने हाथमें ले लेंगे जिनने आठेलन पर अुतर आये थे कि अुन्होंने कस्तूरबाजी भी (जो चम्पारनके दौरेमें गांधीजीके साथ गयी थीं) कलकत्तेके स्टेट्समैन को भेजे अेक पत्रमें अत्यन्त अपमानजनक उल्लेख किया। यह पत्र अुस अखबारके १२ जनवरी १९१८के अंकमें प्रकाशित हुआ था। जिस पर गांधीजीने मोतीहारीसे १५ जनवरीको अुस अखबारको अेक पत्र भेजा। जिस प्रस्तावनाके बाद कि मि अर्विनने मजारकी अेक सरलतम

स्त्री पर (और यह मैं यह मेरी पत्नी है तो भी कहता हूं) अशोभनीय आक्रमण किया है। आगे लिखते हुअे गांधीजीने अपने पत्रमें कहा

जो सभ्य अपनी निर्दोष पत्नीके बारेमें भी कहूं जिसे अुस अन्यायका कभी पता भी नहीं लगेगा जो आपके पत्रलेखकने अुसके साथ किया है। अगर मि० अर्विनको अुससे परिश्रम प्राप्त करनेका सम्मान और सुख प्राप्त होगा तो अुन्हें जल्दी ही मालूम हो जायगा कि श्रीमती गांधी सीधी-सादी और लगभग निरक्षर स्त्री है। मुझे अुनके बताये हुअे दोनों बाजारोंका कुछ भी पता नहीं है और चंद दिन पहले तक मुझे भी पता नहीं था। यह पता मुझे मि० अर्विनने जिसका जिक्र किया है अुस प्रतियोगी बाजारके कायम होनेके कुछ दिन बाद लगा है। फिर अुन्हें यह भी विश्वास हो जायगा कि श्रीमती गांधीका अुसके कायम होनेमें कोअी हाथ नहीं था और वह अैसे बाजारकी व्यवस्थाकी बिलकुल क्षमता नहीं रखती। और आखिरी बात अुन्हें तुरन्त यह मालूम हो जायगी कि श्रीमती गांधीका समय जिन देहातमें स्थापित किये गये स्कूलको चलानेवाले शिक्षकोंके लिये खाना बनाने और अुनकी सेवा करनेमें दवा-दारू बांटनेमें और साधारण स्वास्थ्यके नियमोंका ज्ञान करानेकी दृष्टिसे देहातकी स्त्रियोंके बीच घूमने-फिरनेमें व्यतीत होता है। मैं यह भी बता दूं कि श्रीमती गांधीने भाषण देने और अखबारोंको चिट्ठियां लिखनेकी कला नहीं सीखी है।

११७ पतित बहनें

स्त्रियोंके पावित्र्यको गांधीजीने हमेशा अेक अत्यन्त पुनीत वस्तु माना है। पतित बहनोंसे अुनका साक्षात्कार १९२१ में कोकोनाडामें ही हुआ। अुसके बाद वे जिस विषय पर अक्सर सोचते रहे कि अुनकी दशा सुधारने और जिस सामाजिक पतनमें पुरुषकी पशुताने अुन्हें ढकेल दिया है अुससे अुनका अुद्धार करनेके लिये क्या अुपाय किये जा सकते हैं।

आसामके अपने अनुभव वर्णन करते हुअे गांधीजीने लिखा

कोकोनाडामें अुस विशाल सभाके बाद ही जब मैं रातमें ९ बजेके करीब अपने बंगले पर लौटा तो कुछ स्त्रियां और लड़कियां मुझसे

निकलने आयी। जब मैंने प्रवेश किया तब रोशनी बहुत धीमी थी। अुनकी गतिविधि और दृष्टिमें कुछ असाधारणता-सी थी। किसी कारणसे यह मामूली अभिवादन कि तुम कातती हो? मुझे तिलक स्वराज्य कोषके लिअे क्या दोगी? मेरे मुंहसे निकल नहीं रहा था। अिसके विपरीत मैंने अपने मेजबानसे पूछा कि ये महिलायें कौन हैं। अुन्हें भी मालूम नहीं था। अुन्होंने पूछा और थोड़े संकोचके बाद अुत्तर मिला हम नर्तकियां हैं। मुझे अैसा लगा कि धरतीके पेटमें समा जाअू। मेरे मेजबानने यह कहकर मुझे सान्त्वना देनेकी कोशिश की कि अिस तरहका जीवन आरम्भ करनेसे पूर्व अेक धार्मिक संस्कार किया जाता है। अिससे मेरे लिअे स्थिति और भी खराब हो गअी। अिससे अिस निन्दनीय वस्तुको सम्मानका आवरण प्राप्त हो जाता है। मैंने अुनसे जिरह की। अुन्होंने अत्यंत शिष्ट शब्दोंमें कहा कि वे दर्शन करने आयी हैं। तुम और कोअी क्या करना चाहोगी? हां यदि अुससे हमारा गुजारा हो जाय। अुनकी बातको वहीं खतम कर देनेको मेरा जी नहीं माना। मुझे अपने पुरुष होने पर शर्म आयी। अगले पड़ावके स्थान राजमहेन्द्रीमें दूसरे ही दिन मैंने अिस सवालको सीधा छेड़ा। यह जन्मके अनुभवोंमें अेक सबसे दुखद अनुभव था। मेरा अनुमान है कि यह पाप शेष भारतमें भी किसी न किसी रूपमें सब जगह फैला हुआ है। मैं अितना ही कह सकता हूं कि अगर हमें आत्मशुद्धिके द्वारा स्वराज्य लेना है तो हम स्त्रियोंको अपनी वासनाका शिकार न बनायें। दुर्बलोंकी रक्षाका धर्म यहां विशेष जोरके साथ लागू होता है। मेरी दृष्टिसे भारतके अर्थमें स्त्रियोंके सतीत्वकी रक्षा सम्मिलित है। जब तक हम अपनी स्त्रीजातिका अपनी माताओं बहनों और पुत्रियोंकी तरह सम्मान करना नहीं सीखेंगे तब तक भारतका पुनरुद्धार नहीं होगा। जिन पापोंसे हमारे मनुष्यत्वका हनन होकर हम पशु बन जाते हैं अुनसे हमें अपनेको शुद्ध कर लेना चाहिये।

११८. लक्ष्मीसे दो बात

अपने पुत्र देवदासके विवाह-संस्कारके समय महात्मा गांधीने अपनी पुत्रवधू श्रीमती लक्ष्मीदेवीको जो श्री राजगोपालाचार्यकी पुत्री है सम्बोधन करते हुओ ये शब्द कहे

लक्ष्मी तुम्हें मुझे बहुत कहनेकी आवश्यकता नहीं। मुझे विश्वास है कि देवदास तुम्हारे लिओ योग्य पति साबित होगा। जबसे मैंने तुम्हें देखा और जाना है मैंने महसूस किया है कि तुम 'यथा नाम तथा गुण' हो। तुम्हारे विवाहसे अुस स्नेहके बन्धन दृढ़ होने चाहिये जो मेरे और राजाजीके बीच बढ़ता रहा है। जिस मनोके वातावरणमें यह विवाहोत्सव हो रहा है अुस पर मुझे जोर देनेकी आवश्यकता नहीं है। असलमें यह अेक धार्मिक वस्तु है भगवान करे यह तुम दोनोंके लिओ कर्तव्य-पालनका बेहतर जरिया साबित हो। यदि मुझे यह मालूम न होता कि यह विवाह धर्मानुकूल है और अुस कुछ तपस्याका फल है जो तुम दोनोंने हमारी मंजूरी और आशीर्वाद प्राप्त करनेके लिओ की है तो मेरा अिससे कोअी वास्ता न होता। मुझे ये चन्द शब्द कहनेके लिओ बड़ा प्रयत्न करना पड़ा है परन्तु मैंने अपने लिओ यह जरूरी समझा कि तुम्हें आशीर्वाद दूं और चेतावनी भी दे दूं कि तुम अपने अूपर बड़ी जिम्मेदारी ले रही हो। परमात्मा तुम्हारी रक्षा करे। रक्षा वही करता है क्योंकि वही अेक पिता माता मित्र और सब कुछ है। तुम्हारा जीवन मातृभूमिकी और अुसके द्वारा मानव जातिकी सेवामें समर्पित हो। तुम दोनों सदा विनम्र रहना और सदा ईश्वरसे डर कर चलना।

फिर अुन्होंने अपने पुत्र देवदाससे कहा

तुमने राजाजीसे अेक लाड़ला रत्न छीन लिया है। तुम अुसके योग्य बनना और अुसे संभाल कर रखना। यह सचमुच लक्ष्मी है। अुसकी वैसी ही देखभाल रखना और रक्षा करना जैसी भलाओी और सौन्दर्यकी देवी लक्ष्मीकी रखी और की जाती है। दोनों दीर्घजीवी बनो और धर्मका अनुसरण करो। दोनो धर्मके लिओ जीना और अवसर पड़ने पर धर्मके लिओ प्राण निछावर करनेका साहस रखना।

भाजसे तुम्हारा जीवन देशके लिये और भी अधिक समर्पित हो और तुम कभी आलस्य और विषय-सुखके अधीन न बनो — यही मेरा आशी र्वाद है यही मेरी प्रिय आशा और शिक्षा है।

११९ बापूकी अहिंसाका अेक अुदाहरण

बापूका सदा यह विश्वास रहा कि भलाअीसे भलाअी और बुराअीसे बुराअी पैदा होती है। अिसलिअे अगर बुराअीका जवाब वैसी ही बुराअीमें नहीं मिलता तो वह काम करना बन्द कर देती है और पोषणके अभावमें मर जाती है। अुनका अनुभव भी यही था। दक्षिण अफ्रीकाकी जिन जिन जेलोंमें गांधीजी रहे अुनके सब कर्मचारी जो पहले अुनके प्रति शत्रुभाव रखते थे बादमें अुनके मित्र हो गये क्योंकि अुन्होंने बदला नहीं लिया। अुनकी कटुताका जवाब बापूने हमेशा मिठाससे दिया।

जेलका अेक गोरा सिपाही गांधीजी पर सन्देह करता था। अुसका खयाल था कि हर कैदी पर शक करना अुसका कर्तव्य ही है। चूंकि गांधीजी छोटीसे छोटी बात भी सुपरिन्टेन्डेन्टकी जानकारीके बिना नहीं करना चाहते थे अिसलिअे अुन्होंने अुससे कह दिया था कि अगर कोअी कैदी पाससे निकलते हुअे मुझे सलाम करेगा तो मैं बदलेमें सलाम करूंगा और जो खाना मैं नहीं खा सकता वह सब अपने कैदी-वार्डरको दे दिया करूंगा। सुपरिन्टेन्डेन्टके साथ हुअी अिस बातचीतका बोरे सिपाहीको कुछ पता नहीं था। अेक बार अुसने अेक कैदीको गांधीजीको सलाम करते और गांधीजीको सलामका जवाब देते देख लिया। हालांकि अुसने दोनोंको सलाम करते देखा था फिर भी अुसने सिर्फ कैदीसे ही टिकट ले लिया। अिसका अर्थ यह था कि वह अुसकी रिपोर्ट करेगा। गांधीजीने अुसी समय सिपाहीसे कहा कि मेरी भी रिपोर्ट करो क्योंकि मैं भी अुतना ही दोषी हूं। परन्तु सिपाही अिसके लिअे राजी नहीं हुआ।

गांधीजी कैदीकी रक्षा तो करना चाहते थे परन्तु सिपाहीको अुसकी मनमानीका दण्ड नहीं दिलवाना चाहते थे। अिसलिअे अुन्होंने सुपरिन्टेन्डेन्टसे सलामवाली घटनाका तो जिक्र कर दिया मगर अुस बात-

चीतका नहीं किया जो अुनके और सिपाहीके बीच हुअी थी। सिपाहीको सचमुच आश्चर्य हुआ मगर अिससे भी अधिक अुसे यह विश्वास हो गया कि गांधीजी अुसके प्रति दुर्भाव नहीं रखते। अुसी क्षणसे अुसने गांधीजी पर सन्देह करना बन्द कर दिया।

१२० 'अंग्रेज बनिया'

आप ब्रिटिश शोषणके परिणामस्वरूप भारतके दरिद्र होनेकी बातें करते हैं पर क्या यह सच नहीं है कि किसानोंके दुःखका असली कारण बनियोंकी लूट और विवाह तथा मौतके अवसर पर पैसेका अपव्यय है? और आपका अन्तिम अभियोग यह है कि ब्रिटिश सरकार फिजूलखर्ची करती है। परन्तु देशी राजाओंकी फिजूलखर्चीके बारेमें आपका क्या कहना है? ये प्रश्न श्रोताओंमें से अेकने गांधीजी पर अुस सभामें बरसाये थे जो लन्दनमें [illegible] हॉलमें हुअी थी और जिसमें भिन्न भिन्न सम्प्रदायोंके प्रतिनिधि आये थे। यह अुन दिनोंकी बात है जब गांधीजी १९३१ के अन्तिम भागमें दूसरी गोलमेज परिषदके सिलसिलेमें विलायत गये थे। गांधीजीका अुत्तर यह था:

भारतीय बनियेकी ब्रिटिश बनियेसे तुलना नहीं की जा सकती। और अगर हम [illegible] काम लेने लगें तो भारतीय बनिया कोड़ोंसे मार [illegible] जानेका हकदार होगा। परन्तु अुस हालतमें अंग्रेज बनिया तो गोली मार दिये जानेका हकदार होगा। भारतीय बनियेके व्यापारमें [illegible] कुछ भी नहीं है जो ब्रिटिश बनिया

करनेकी सनकको संतुष्ट करनेके लिये अेरहमीसे जो करोड़ों रुपये बरबाद किये जाते हैं अुसकी तुलनामें कुछ भी नहीं है। रुपयोंकी यह बरबादी तब की गयी है जब कि देशमें असंख्य लोग भूखसे मर रहे थे।”

१२१ ‘हरिजन’ नामकी अुत्पत्ति

अछूतों के लिये गांधीजीने हरिजन नामका प्रयोग कैसे शुरू किया अिसका वर्णन श्री अेस आर वेंकटरमनने ठक्करबापा जयन्ती स्मारक-ग्रंथ में किया है। वे कहते हैं

दिसम्बर १९३३ में जब गांधीजी मद्रास गये तब हरिजन नेताओंने अुनसे मिलकर कहा कि अुन्हें हरिजन शब्द पर आपत्ति है। गांधीजीने अुन्हें यह अुत्तर दिया

आप कहते हैं कि दलित वर्गोंसे सलाह नहीं ली गयी। लेकिन अुन्होंने मुझसे सलाह ली थी। यही खास चीज है। मैंने भारतके समस्त भाग देखे हैं। मुझसे पूछा जाता है कि हम हरिजन क्यों कहे जाते हैं? हमारा स्थायी और अच्छा नाम क्यों नहीं होना चाहिये? यह नाम बनावटी है। अुनकी दलील यह थी कि अीश्वरके लिये हमें कुछ न कहिये। किसी समय अिस शब्दका विशेष अर्थ था। अेक सारी जाति ही अिस नामसे पुकारी जाती थी। अगर अब यह शब्द काममें नहीं लिया जाता तो अिसका मतलब यह नहीं कि हृदय-परिवर्तन हो गया है। केवल कानोंको यह बुरा लगना भर बन्द हो गया है। अिस नये नामकी सिद्धि मिलती ही है। जैसा मैंने कहा यह मेरा गढ़ा हुआ नहीं है। अेक अछूतने मुझसे दलील की कि हमें अैसे नामसे न पुकारा जाय अिसके साथ हमेशा निरादरका अर्थ जुड़ा रहेगा। अुसने बिलकुल अुचित कहा कि दलित नाम मुझे गुलामीकी याद दिलाता है। मैंने पूछा मेरे पास सुझानेको कोअी नाम नहीं है। तुम सुझाओगे? तब अुस भाअीने हरिजन नाम सुझाया। अुसने अपने समर्थनमें गुजराती कवि नरसिंह मेहताका प्रमाण दिया जिसने अपने ग्रंथोंमें अिस शब्दका प्रयोग किया है। मैंने अुसे तुरंत अपना लिया। मुझे यह तामिल [illegible] । क्या

हरिजन जिसका पर्याय नहीं है? जो जातिसे बहिष्कृत हैं वे अीश्वरके प्यारे हैं। दलित वर्गके लिये हरिजन शब्दका प्रयोग करनेमें भी नहीं बर्ग है।

१२२ विद्यार्थियोंके लिये हरिजन-कार्य

जब गांधीजी यरवडा जेलके १९३३ वाले अपने अस्पृश्यता-विरोधी अुपवासके बाद पर्णकुटी पूनामें फिरसे स्वास्थ्यलाभ कर रहे थे तब हाओीस्कूलके विद्यार्थियोंकी अेक मंडली अुनसे मिलने आओी। अुन्होंने कहा कि हम हरिजनोंकी सेवा करना चाहते हैं परन्तु हमारे पिता हमें नहीं करने देते। बापूजीने हंसकर कहा कि अुनसे तुम्हें लड़ना चाहिये परन्तु यह भी कहा तुम अुनसे कैसे लड़ सकते हो?

अुन्होंने विद्यार्थियोंसे पूछा जब तुम कोअी चीज कराना चाहते हो तो क्या करते हो? तुम रोते हो। क्यों नहीं बात है न?

विद्यार्थियोंने हंसकर कहा जी हां!

गांधीजीने कहा "तो रोओो और चिल्लाओो। (हंसी)

अेक विद्यार्थी बोला हमारे पिता सरकारी नौकर हैं जिसलिये वे अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनमें भाग नहीं ले सकते हैं।"

गांधीजीने फौरन अुत्तर दिया यह राजनीतिक कार्य नहीं है। सरकारी नौकर भी बहुतसी बातें कर सकते हैं। वे चन्दा दे सकते हैं अपने घरोंमें अछूतोंको नौकर रख सकते हैं और हरिजन लड़कों और लड़कियोंकी परवरिश कर सकते हैं। जिसमें कोअी राजनीति नहीं है।"

दूसरे विद्यार्थीने पूछा स्कूलोंमें हम अुनकी सेवा कैसे कर सकते हैं?

गांधीजी स्कूलोंमें तुम कुछ नहीं कर सकते। वहां तुम विद्या सीखने जाते हो। वहां अपने छोटे छोटे विद्यार्थियोंको परेशान न करो लेकिन स्कूलके समयसे बाहर तुम बहुत कुछ कर सकते हो।

प्रश्न किस प्रकार?

गांधीजी जहां अछूत रहते हैं वहां जाओो अुनसे मिलो-जुलो अुनके साथ सेवा और दया कि अुनके बच्चों सफाओी होती है या नहीं।

और साथ मिलकर अनके घरोंको बुहार दो। अन्हें साफ रहना सिखाओ। अपने व्यवहारसे अन्हें दिखा दो कि तुम अछूतपनको नहीं मानते। अन्हें दिखा दो कि तुम्हें अनसे प्रेम है। अनके साथ अपने सगे भाअियोंका-सा बरताव करो।

अन्तमें अन्होंने कहा "तुम बहुत छोटे हो। दिन-दिन तुम्हारा ज्ञान और ठीक ढंगसे काम करनेका कौशल बढ़ेगा।

विद्यार्थियोंने गांधीजीको धन्यवाद दिया, आश्रममें अर्पण की और अपने घर चले गये।

१२३ अनकी 'पुत्रियां'

समय-समय पर भिन्न-भिन्न लोग गांधीजीसे अपना रिश्ता बताया करते थे। जिसमें अनका मुद्देश्य अपना स्वार्थ साधना ही होता था। कभी बार अैसे मामलोंकी ओर गांधीजीका ध्यान दिलाया जाता था। वे अिसे सामुदायिक आपत्तिसे पैदा होनेवाले भारी खतरोंमें से अेक खतरा समझते थे। यहां अेक अैसी घटनाका अुल्लेख किया जाता है

मैंने पत्रोंमें अभी-अभी अेक सूचना पढ़ी है कि अेक लड़की मेरी पुत्री होनेका ढोंग रचकर अुसके आधार पर लोगोंसे तरह तरहकी मान-ममता प्राप्त कर रही है। मुझे अच्छी और समझी हजारों लड़कियोंको अपनी पुत्रियां माननेमें कोअी आपत्ति नहीं। मुझे तो अिसमें गर्व ही होता। वे मेरी और देशकी प्रतिष्ठा बढ़ायेंगी। पुत्रियां भी अन्हें अपना सतत बढ़ते हुओ परिवारकी धर्मपुत्रियां मान लेंगी। लेकिन जैसी स्थिति है अुसमें मुझे अनेक बार कही हुअी यह बात फिर दुहराना पड़ रही है कि पुत्रीका पिता होनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त नहीं हुआ है। अेक छोटीसी अछूत लड़की जरूर है जिसे मैं गर्वपूर्वक अपनी धर्मपुत्री कहता हूं। वह मेरे लिये सुख लाती है और मुझे आशा है कि जब वह बड़ी हो जायगी तब अपने भावी सेवाक्षेत्रमें सत्य और मधुरताको ले जायेगी। अभी तो वह साक्षात् शैतान है। वह खेलना ही खेलना जानती है कामसे अुसका कोअी वास्ता नहीं। वह आश्रमके बच्चोंके

बिना मुश्किलसे ही काम करती है। अुसके मां-बापके घर पर नहीं डंडा मुझे ठीक रखता था। मगर यह सात सालकी प्यारी भालसी लड़की मुझे अपना पिता मानती है तब मुझे कोअी आपत्ति नहीं होती। कुछ वयस्क लड़कियां भी हैं जो मेरी पुत्रियां होनेका दावा करके मुझे सुख देती हैं। परन्तु वे मुझसे जिस मापदण्डके अनुसार जीवन व्यतीत करनेकी आशा रखती हैं वैसा करना मेरे लिअे वे कठिन बना देती हैं। अुन्हें सदा यह ख़तरा रहता है कि कहीं मैं अुनके लिअे बदनाम पिता न साबित होअूं। लेकिन मैं भारतकी तमाम लड़कियोंको सूचित कर देता हूं कि अुनके जबरन् मुझे अपना पिता माननेसे मैं बदनाम होनेकी जोखिम नहीं अुठाअूंगा। हां अूपर जिन वयस्क लड़कियोंका मैंने अुल्लेख किया है — जिनके नाम भी मैं दुनियाके आगे प्रगट करनेका साहस नहीं कर सकता — अुनके जैसी तमाम लड़कियोंको बेशक मैं धर्मपुत्रियां बनानेकी अिच्छा रखता हूं।

परन्तु अेक लड़की जबरदस्ती मुझे अपना पिता कहती है यह तो अेक निर्दोष-सी बात हुअी। मैंने सुना है कि अुदयपुरके अेक मोतीलाल पचोली नामक सज्जन मेरे शिष्य होनेका दावा करते हैं और राज पूतानेकी रियासतोंके देहातियोंमें मद्य-निषेधका और न जाने किस किस बातका प्रचार करते हैं। समाचार है कि अुन्होंने अपने आसपास अेक सशस्त्र दल जमा कर लिया है और वे जहां जाते हैं वहां अपना राज्य या कुछ अैसी ही चीज स्थापित कर रहे हैं। वे चमत्कारिक शक्ति रखनेका दावा भी करते हैं। समाचार है कि अुन्होंने या अुनके भक्तोंने कुछ ध्वंसात्मक कार्य भी किया है। मैं चाहता हूं कि लोग हमेशाके लिअे यह समझ लें कि मेरा कोअी शिष्य नहीं है। कमसे कम अभी तो कांग्रेस और खिलाफत कमेटियोंसे अलग मेरा कोअी अस्तित्व नहीं है। मेरी सारी प्रवृत्ति अिन दो संगठनोंके मारफत होती है। कोअी मेरे नाम पर काम नहीं कर रहा है किसीको लिखित अधिकारके बिना मेरा नाम अिस्तेमाल करनेका अधिकार नहीं है।

१२४ 'गांधी चाचा'

जब गांधीजी १९३१ में दूसरी गोलमेज परिषदके सिलसिलेमें विलायत गये और लंदनमें ठहरे हुअे थे तब वे शहरके ओीस्ट अेण्डमें किंग्सले हॉलमें कुमारी म्यूरियल लेस्टरके मेहमान बनकर रहे थे। किंग्सले हॉलसे सटा हुआ अेक बाल-भवन था। अुसके छोटे-छोटे विद्यार्थियों और गांधीजीके बीच जल्दी ही अतिस्नेहका बंधन स्थापित हो गया था। अुन सबके लिअे वे 'गांधी चाचा' हो गये थे। यह नाम पहले-पहल अुन्हें तीन वर्षके अेक नन्हे मुन्नेने दिया था फिर तो वह चल पड़ा। गांधीजीकी विलायत यात्राके वर्णनमें श्री महादेव देसाअीने गांधीजीकी वर्षगांठ पर कुछ बच्चों द्वारा लिखे गये निबन्धोंके नमूने दिये हैं। अेक दस वर्षसे कम अुम्रकी लड़कीका निबन्ध यह था

असीसीके सन्त फ्रांसिसको लोग असीसीका छोटा गरीब आदमी कहते थे। वे हर तरहसे ठीक गांधी जैसे थे।

दोनोंको प्राणियोंसे अर्थात् बच्चों, पक्षियों और फूलोंसे प्रेम था। गांधी भी कच्छ पहनते हैं और जब सन्त फ्रांसिस पृथ्वी पर थे तब वे भी यही पहनते थे।

गांधी और सन्त फ्रांसिस दोनों धनी व्यापारियोंके पुत्र थे। अेक दिन रातको जब सन्त फ्रांसिस अपने अनुयायियोंके साथ खाना खा रहे थे तो अेक गरीब भिखारियोंका समूह आया। वे दौड़कर बाहर गये और अपने बढ़िया कपड़े और अपना रुपया-पैसा अुन्होंने गरीबोंको दे दिया और ठीक गांधीकी तरह पुराने टाटके कपड़े पहन लिये।

असीसीके सन्त फ्रांसिसने अपने कुछ अनुयायी साथ ले लिये। अुन्होंने देशकी टोलियां बनाअी। गांधीने भी ठीक अैसा ही किया। अुन्होंने अपना सारा वैभव और सुखपूर्ण जीवन गरीब भाअियोंके खातिर त्याग दिया है।

गांधी जब लंदन आने लगे तो अुनके देशके लोगोंने अुन्हें पहननेके लिअे कपड़े दिये। इस किंग्सले हॉलके आसपास बच्चोंको अुन्होंने बताया था कि अुनके पास अपनी छोटी धोतियां (कच्छ) धोनेतकके लिअे भी काफी रुपया नहीं है।

"सोमवारको वे अेक दिनका मौन रखते हैं क्योंकि यह मुख मोमाका धर्म है। गांधीको मुलकी वर्षगांठ पर लड़कीसे शिलीमों मोम बत्तियाँ और मिठाअियोंकी भेंट मिली। वे बकरीके दूध सूखे मेवों और फलों पर रहते हैं।

अेक दस वर्षके लड़केने भी मिश्रण लिखा था जिसे यहां ज्योंका त्या अनुवाद किया जाता है

मि गांधी अेक भारतीय हैं जिन्होंने १८९ में लंदनमें कानूनके विद्यार्थीके रूपमें शिक्षा पाओ थी। अुन्होंने अपने देशकी हालत सुधारनेके लिअे यह काम छोड़ दिया।

वे भारतीय गोलमेज परिषदके लिअे मिग्लैण्ड आये हैं। वे भारतके लिअे फिरसे व्यापार प्राप्त करनेकी कोशिश करने आये हैं। वे प्रयत्न कर रहे हैं कि ब्राह्मण लोग अछूतों को अपने मन्दिरोंमें आने दें। ये अछूत कोओी ६ लाख लोग हैं जो यह नहीं जानते कि भरपेट भोजन क्या होता है। गांधीने अपनी सारी सम्पत्ति छोड़ दी है और अेक अत्यंत गरीब भारतीय बननेकी कोशिश कर रहे हैं। जिसीलिअे वे कम्बल पहनते हैं।

अुनका भोजन बकरीका दूध कम और सागभाजी है। वे मांस-मच्छी नहीं खाते क्योंकि वे जीवहिंसाको नहीं मानते। गांधी अेक मीसाओी हिन्दुस्तानी हैं।

मि गांधी अपनी रुओी खुद कातते हैं। वे मिग्लैण्डमें रोज अेक घंटा कताओी करते हैं और अस्पतालमें वे तब भी कातते थे। वे लंकाशायरकी कपड़ेकी मिलें देखकर अभी लौटे हैं।

वे रविवारकी शामके ७ बजेसे सोमवारकी ७ बजे शाम तक प्रार्थना करते हैं और यदि आप अुनसे बात करें तो वे अुत्तर नहीं देते। जब वे मिलने निकले तो मेरे घर भी आये। मेरी मा बिस्तरी कर रही थी। परन्तु अुन्होंने कहा बन्द न कीजिये क्योंकि मुझे खुद भी यह काम करना पड़ता है। मैंने अुनसे हाथ मिलाया है। इसको मा पुत्रवाली के लिअे भारतीय सभ्य भोमस्का है।

डम्प्न जे मार्टी सेविल्के २१ बीर्वांलिम रोड बो लंदन श्री १ १ — —३१।

१२५ महात्माजीकी मृत्युसे मां-बेटीका झगड़ा निपटा

अेक ओर अेक बुढ़िया और दूसरी ओर अुसकी पुत्री और जामाताके बीच बुढ़ियाके पतिकी सम्पत्ति पर बहुत दिनोंसे ज़ोरका झगड़ा चल रहा था। वह ११ फरवरी १९४८ को चित्तौड़की ज़िला अदालतमें नाटकीय ढंगसे ख़तम हो गया। न्यायाधीशने दोनों पक्षोंको कुछ दिन अपने सामने हाज़िर होनेका आदेश दिया था। अुन्हें यह अंतिम आशा थी कि दोनों पक्षोंके बीच मैं समझौता करा सकूंगा। जब वे पेश हुअे तो न्यायाधीशने अुन्हें समझाया कि लड़ते रहने और मुक़दमेबाज़ीमें अपना रुपया बरबाद करनेमें अुनकी कितनी मूर्खता है। अुसने आपसमें समझौता कर लेनेकी अुनसे गंभीरतापूर्वक अपील की। परन्तु अपील व्यर्थ सिद्ध हुअी।

तब न्यायाधीशने अपनी मेज़ पर झुक कर फ़रीक़ोंको दुःखपूर्वक पूछा कि क्या तुमने महात्मा गांधीका नाम सुना है? न्यायाधीशकी बैठकके पीछेवाली दीवार पर लगे हुअे महात्माजीके चित्रको देखकर अुन्होंने कहा जी हां।

फिर जो हुआ वह अिस प्रकार था

न्यायाधीश क्या तुम्हें मालूम है कि महात्माजी गरीबों अज्ञानियों और मूर्खोंके लिअे जिये और मरे थे?

मु —जी हां।

न्यायाधीश तुम्हें मालूम है कि सारा संसार आज महात्माजीकी मृत्यु पर रो रहा है?

मु —जी हां।

न्यायाधीश सारी दुनिया अुनके लिअे क्यों रो रही है?

मु —क्योंकि वे सबको प्रेम करते थे और महात्मा थे।

न्यायाधीश तुम्हें अुनसे प्रेम नहीं?

मु —जी हम सबको अुनसे प्रेम है।

न्यायाधीश तुम जानते हो कि महात्मा गांधीकी आत्मा तुम सबको ये मूर्खतापूर्ण झगड़े करते देखकर रोयेगी?

मु —अब हम नहीं लड़ेंगे। हम अपने झगड़े छोड़ते हैं।

न्यायाधीशके सुझाव पर लड़की और उसके पतिने बुढ़ियाको साष्टांग प्रणाम किया और उसने उन्हें छातीसे लगाकर आशीर्वाद दिया। इस सारे समयमें मां बेटी और जंवाई तीनों रो रहे थे और अेक-दूसरेसे क्षमा-याचना कर रहे थे। अन्तमें जो निपटारा हुआ उसमें मांको अपने मरने तक अपने पतिकी सम्पत्तिका उपभोग करनेकी इजाजत दी गयी और उसके बाद सम्पत्तिकी स्वामिनी लड़कीको घोषित किया गया।

१२६ धर्मपुत्रकी मृत्यु

दिसम्बर १९२० की बात है। नागपुरके कांग्रेस सप्ताहमें अेक दिन ३[illegible] वर्षका अेक मारवाड़ी युवक महात्मा गांधीके सामने आया और बोला, "आपसे मैं कुछ मांगना चाहता हूं।" "मांगो, जो मेरे वशका होगा अवश्य मिलेगा," गांधीजीने कुछ आश्चर्यसे उत्तर दिया। नौजवानने कहा, "आपके पुत्र देवदासकी तरह मुझे भी अपना पुत्र समझिये।" गांधीजीने जवाब दिया, "मंजूर। बात इतनी ही है कि मैं कुछ नहीं दे रहा हूं। देनेवाले तो तुम हो।"

यह युवक जमनालाल बजाज थे। वे शुरूसे अमीर घरमें पैदा तो नहीं हुअे थे, मगर [illegible]ने उन्हें बचपनमें ही इतनी दौलत दे दी थी जो अधिकांश लोगोंको सपनेमें भी नहीं मिल सकती।

इस आत्म-समर्पणका असर गांधीजी पर भी जमनालालजीसे कम गहरा नहीं हुआ। ११ फरवरी १९४२ को उनके अपने इस अद्वितीय धर्म पुत्रके अवसान पर शोक प्रगट करते हुअे गांधीजीने ता० २९-२-'४२ के 'हरिजन' में इस आशयका लिखा था :

मैं कह सकता हूं कि मुझसे पहले कभी किसी मानवको उनके जैसा पुत्र प्राप्त होनेका सौभाग्य नहीं मिला। इस अर्थमें अवश्य ही मेरे अनेक पुत्र-पुत्रियां हैं कि उन्होंने मेरा कुछ काम किया है। परन्तु जमनालालजीने अपना कुछ भी न रखकर सर्वस्व मुझे अर्पण कर दिया था। मेरी कोई भी प्रवृत्ति शायद ही अैसी होगी जिसमें मुझे उनसे पूरे मनसे सहयोग न मिला हो और जिसमें वह सहयोग अत्यन्त मूल्यवान साबित न हुआ हो। भगवानने उन्हें [illegible] बुद्धि दी थी। वे व्यापारियोंमें

तुम लोगों पर काफी पहलेसे सोचा हुआ भाषण बोलनेके बजाय प्रश्नोंके अुत्तर देनेमें बिताना चाहता हू। जिसके लिये तुम मुझे क्षमा करोगे। अुन्होने कहा

मैने तुमको साथी विद्यार्थी कहकर सम्बोधन किया है। यह कोरी शिष्टाचार नही है। मै वास्तवमें अपनेको विद्यार्थी समझता हू और अगर तुम बुद्धिमान हो जैसा कि मै हू (हंसी) तो तुम भी अुत्तर-जीवनमें अपनेको विद्यार्थी समझना।

गांधीजीने भाषण जारी रखते हुअे कहा जीवनके अपने विविध अनुभवोंमें मै हमेशा जिस नतीजे पर पहुचा हू कि हमारा विद्यार्थी-जीवन तब शुरू होता है जब हम कॉलेज और विश्वविद्यालय तथा कानूनके शिक्षा-भवन छोड देते है। जैसा समझा जाता है कि वहां हम अपने शालकी दुर्गोके द्वारा अपने अध्ययनसे बंधे रहते हैं और अध्ययन करते रहते हैं लेकिन हकीकत यह है कि जब हम अुस चार दीवारीसे बाहर निकलते हैं तब जो कुछ हमने सीखा होता है वह लगभग सारा भूल जाते हैं।

वास्तवमें तो अुत्तर-जीवनमें हमें बहुतसी सीखी हुअी चीजें भूलनी होती है। कथित विद्यार्थी-जीवन विद्यार्थीके वास्तविक जीवनकी महज तैयारी होता है। जब तुम कॉलेजमें या और कहीं होते हो तो तुम्हारे कुछ निश्चित विषय होते हैं। वैकल्पिक विषयोंको भी तुम्हें अेक खास ढबसे पढ़ना पड़ता है, क्योंकि तुम्हारी दृष्टि वहां सचमुच संकुचित होती है। लेकिन यह मंजिल पार हो जानेके बाद तुम गगन विहारी पक्षीकी भाति स्वतंत्र हो जाते हो और तुम्हारी अुड़ान जितनी अूची होगी अुतना ही तुम्हारा बल बढ जायगा। जिस प्रकार मै अब भी विद्यार्थी हू क्योंकि मै दुनियादारीमें पारंगत नही हुआ हू। (तालियां)

जब तुम जिधर-अुधर ठोकरें खाते हो और अपने बल पर चलनेको छोड दिये जाते हो तब मामला कठिन हो जाता है। अैसी स्थितिमें अगर तुम अपने आपको अध्ययनमें लगा दो सतत खोजके काममें अर्पित कर दो तो तुम्हारे हर्षका पार नही रहेगा। अुस अध्ययनसे मिलनेवाले सुखकी कोअी सीमा नही होगी। मेरा अध्ययन शुरूसे आखिर तक सत्यकी

था। परन्तु २ तारीखको ११ बजे बुसके हृदयकी गति अचानक रुक गयी। पद्मसिंह् १२ वर्षका अेक लड़का छोड़कर चल बसा।

मौत या बुससे छोटी दुर्घटनाओंसे मुझे अधिक आघातके सिवा कुछ नहीं होता। परन्तु यह लिखते समय तक भी मैं बिस आघातके प्रभावसे मुक्त नहीं हुआ हूं। मेरे खयालसे बिसका कारण यह है कि मुझे पद्मसिंहकी मृत्युके अपराधमें भागीदार होनेका भान है। मैंने देखा है कि लगभग निरपवाद रूपमें मोटर ड्रायवर गरम-मिजाज शीघ्र बुत्तेजित होनेवाले अधीर और बुठते ही भड़क बुठनेवाले होते हैं जितना पेट्रोल बिसके साथ बुन्हें रोज सम्पर्कमें आना पड़ता है। मेरी मोटरके ड्रायवरमें बिन सब बुटियोंका काफीसे अधिक अंश था। बिस बीचमें पे गुजरनेके लिबे मोटर बड़ोआइ कर रही थी बुसे देखते हुबे यह कहा जा सकता है कि वह मोटर बहुत जोरसे चला रहा था। मुझे या तो पैदल चलनेका आग्रह करना चाहिये था या मोटरको कुछ समय तक पैदल चाल पर चलानेका आग्रह रखना था जब तक हम भीड़से बाहर न निकल जाते। परन्तु हमेशा मोटरकी सवारी करनेसे मेरी भावनाओंमें स्थूलता आ गयी मालूम होती है और गम्भीर दुर्घटनाओंसे बचे रहनेसे पैदल चलनेवालोंकी सुरक्षाके प्रति अेक प्रकार किन्तु असभ्य बुदासीनता पैदा हो गयी है। आघातका कारण शायद अपने बिस अपराधका यह भान ही है। पद्मसिंहके लिबे जो किया जा सकता था सो किया गया। पंडित गोविन्दवल्लभ पन्तने मुझे विश्वास दिलाया है कि बुसके लड़केकी अच्छी देखभाल की जायगी। पद्मसिंह पर अस्पतालमें जैसा ध्यान दिया गया बुससे अमीरोंको भी बीर्ष्या हो सकती है। बुसने स्वयंको बीश्वराधीन मान लिया था और बुसे शान्ति थी। परन्तु बुसकी मृत्यु मेरे लिबे अेक सबक है और आशा है कि मोटर चलानेवालोंके लिबे भी वह शिक्षाप्रद होगी। यद्यपि मेरी अपनी असमर्थताके लिबे मेरी इसी बुम्रमें आ सकती है फिर भी मैं अपना यह विश्वास अवश्य दोहराबूंगा कि मोटरकी सवारीमें कितनी ही सुविधायें हों तो भी वह यातायातका अप्राकृतिक साधन है। जिनजिनके वो बिसे काममें लेना हुआ बुनको चाहिये कि अपने ड्रायवरों पर काबू रखें और यह समझ लें कि गति ही जीवनका सब कुछ नहीं है और अन्तमें आदर

समय मीरोंके हृदयको मूर्छाकी स्थितिमें से गुजर रहा है। अुसमें बहुतसी बातें अैसी सीखी हैं जो व्यर्थ और अकल्याणकारी हैं। पश्चिमका और विशेषतः आपके ही देशका अवलोकन करके मैंने दो मुख्य बातें सीखी हैं पहली सफाअी दूसरी अुत्साह। मेरा पक्का विश्वास हो गया है कि जब तक मेरे देशवासी सफाअी नहीं सीखेंगे तब तक अुनकी प्रगति नहीं होगी। आपके देशवासियोंमें विलक्षण अुत्साह है। यह अुत्साह अधिकतर सांसारिक वस्तुओंके लिये रहा है। अगर भारतवासी ठीक दिशामें अुतना ही अुत्साह रख सकें तो अुन्हें बड़े बड़े वरदान मिलेंगे।

मि. गांधी राष्ट्रवादकी जो भावना चारों ओर फैली हुअी है अुसे देखते हुअे कृपा करके बताअिये कि अीसाअी धर्म भारतको अुत्तम सहायता क्या दे सकता है? अुन्होंने अुत्तर दिया

हमें सबसे ज्यादा जरूरत है सहानुभूतिकी। जब मैं अफ्रीकामें बुरी हालतमें था तब मुझे अिस बातका पता लगा। मुझे कुछ गहरे पातालकी कुंजें खोजने पड़े थे। शुद्ध बहती हुअी धारामें तलाश करनेके लिये मुझे गहरी खुदाअी करनी पड़ी थी। जो लोग यहां मेरे देशवासियोंका अध्ययन करने आते हैं, वे केवल अूपर अूपरसे बातोंको खुरचते हैं। अगर वे सहानुभूतिके साथ गहरी खुदाअी करनेकी कोशिश करें तो अुन्हें यहां शुद्ध और स्वच्छ जीवन-स्रोत मिलेगा।

और मि. गांधी कृपया यह भी बताअिये कि आप पर सबसे अधिक प्रभाव किस पुस्तक या व्यक्तिका पड़ा है? अवश्य ही मैं यह सुननेको तैयार था कि वे वेदों और कअी दूसरी भारतीय पुस्तकोंके बारेमें कुछ कहेंगे जिनसे अीसाअी लोगोंको परिचित होना चाहिये परन्तु मैं अिस मुखसे यह सुननेको तैयार नहीं था कि तीन अंग्रेजी पुस्तकोंने अुनके जीवन और विचारोंकी रचना की थी। अुन्होंने स्पष्ट स्वीकार किया कि वे बहुत सारी पुस्तकें पढ़नेवालोंमें से नहीं हैं बल्कि अुत्तम पुस्तकोंको सावधानीसे चुनकर पढ़नेवाले रहे हैं। अिन पुस्तकोंका जिस क्रमसे अुन्होंने जिक्र किया वह यों था बाअिबल रस्किन टॉल्स्टॉय। बाअिबलके बारेमें बोलते हुअे अुन्होंने कहा कअी बार अैसा हुआ कि मुझे यह नहीं सूझता था कि किधर जाअूं। अैसे अवसरों पर मैंने

फटी हुआी थी और कहीं-कहीं असकी मरम्मत करनेकी बेमनसे कोशिश की गयी थी। गद्देमें भरी हुआी रुआी बहुत दिन तक काममें लेनेसे जिकट्ठी और सख्त हो गयी थी। गद्देके नीचे बिना धुले बिछौनोंका अक ढेर था। बरामदेमें अधिक विद्यार्थियोंके लिये गुंजािश करनेके खातिर घासकी चिकें लगा दी गयी थी।

अिस मुलाकातमें अनका अिरादा पांच मिनटसे ज्यादा लगानेका नहीं था। परन्तु वास्तवमें अन्होंने कामकाजका निरीक्षण करने और व्यवस्थापकको बातें समझानेमें पौन घंटा खर्च किया।

धडके नीचे हाथ-मुंह धोनेके कारण बहनेवाले पानीको जिकट्ठा करनेके लिये कोअी बरतन या कोअी स्थान होना चाहिये अन्यथा बहुतसा कीमती पानी व्यर्थ जाता है। जिसके सिवा अुससे मच्छर पैदा होते हैं। बिस्तरकी फटी हुआी चादरको या तो पैबन्द लगाना चाहिये था या जोड़कर करके अुसकी रजाअी बना लेनी चाहिये थी। मै जब ट्रान्सवाल जेलमें था तब मैंने कम्बलोंकी रजाअी बनानेका काफ़ी काम किया था। ये कम्बल गरम और टिकाअू होते हैं। फटे हुअे बिछौनोंको रद्दी नहीं समझना चाहिये। अुन्हें अच्छी तरह धोकर रखना चाहिये। वे कपड़ोंकी मरम्मतमें और अैसी दूसरे कामोंमें लिये जा सकते हैं।

कुछ लड़कोंके पास मैंने देखा कि सर्दीके काफ़ी कपड़े नहीं थे। जिनके पास अपनी जरूरतसे ज्यादा कपड़े हों अुन्हें यह क्यों न सिखाया जाय कि जिनके पास काफ़ी कपड़े नहीं हैं अुन्हें वे अपने फाजिल कपड़े दे दें? यह परस्पर सहायताका बढ़िया पदार्थपाठ होगा।

और बरामदेमें घासकी चिकें? बरामदा हवा और धूप आनेके लिये होता है। चिकोंसे दोनों रुकती हैं। मुझे बताया गया कि जैसा अधिक विद्यार्थियोंके लिये जगह करनेका किया गया था। परन्तु जितनोंके लिये जगह है अुनसे अधिकको दाखिल ही क्यों किया जाय?

जाते जाते अुन्होंने कहा "ये सब छोटी बातें दिखाअी देती होंगी। परन्तु सभी चीजें छोटी-छोटी बातोंसे बनती हैं। मेरा सारा जीवन छोटी बातोंसे बना है। हमने अपने लड़कोंको छोटी बातों पर ध्यान देना सिखानेमें जितनी गफलत की है अुतने ही हम असफल सिद्ध हुअे हैं। या

जो मैंने लंदनमें विद्यार्थी-अवस्थामें जब मैं १९ वर्षका था अधूरा छोड़ दिया था। ये राजमहेन्द्रीके सुन्दरम् गोपालराव हैं। जिनके लिये भूमिका अेक पैमाजिस-अफसरने तैयार कर दी थी। वे मुझे विजयवाड़ामें मिले थे। अुन्होंने मुझे कहा था कि सुन्दरम् गोपालराव लगभग कच्चे आहार पर रह रहे हैं। गोपालरावका राजमहेन्द्रीमें अेक प्राकृतिक चिकित्सालय है और अुसीमें वे अपना सारा समय लगाते हैं। अुन्होंने मुझसे कहा   अपने तरीके पर कटिस्नान और किसी तरहके अन्य अुपाय अच्छे हैं। परन्तु वे कृत्रिम हैं। रोगमुक्त होनेके लिये भोजन तैयार करनेमें अग्निमुक्त होना आवश्यक है। हमें भी जानवरोंकी तरह प्रत्येक वस्तुको अुसकी समान स्थितिमें ही खाना चाहिये।

मैंने पूछा   आप मुझे सर्वथा कच्चा आहार लेनेकी सलाह देंगे?

गोपालरावने अुत्तर दिया   बेशक क्यों नहीं? मैंने बूढ़े स्त्री पुरुषोंका जीर्ण अपच रोग अंकुरित अनाजके संतुलित भोजन द्वारा अच्छा किया है।

मैंने हल्का-सा विरोध करते हुअे कहा   मगर जीवनकी अेक स्थिति तो होती ही होगी?

गोपालरावने मुस्कराकर जवाब दिया   अैसी कोअी स्थिति जरूरी नहीं। कच्चा भोजन — जिसमें मैं कच्चे स्टार्च और कच्चे प्रोटीनको शामिल कर लेता हूं — पकाये हुअे भोजनसे सदा ही सुपाच्य होता है। आजमा कर देख लीजिये आपको मालूम हो जायगा कि अुससे आपकी तबीयतमें सुधार हुआ है।

मैंने कहा   आप यह जोखिम अुठानेको तैयार हैं? अगर मेरा दाह-संस्कार आश्रममें होगा तो लोग मेरे शरीरके साथ आपके शरीरका भी दाह-संस्कार कर देंगे।

गोपालरावने कहा   मैं यह जोखिम अुठानेको तैयार हूं।

तो ठीक है अपना भिगोया हुआ गेहूं मेरे लिये भेज दीजिये। मैं आजसे ही शुरू करता हूं   मैंने कहा।

बेचारे गोपालरावने भिगोया हुआ गेहूं भेज दिया। कस्तूरबाको मालूम नहीं था कि यह गेहूं मेरे लिये हो सकता है अिसलिये अुसने

"तीसरा अंग कुरानसे ली हुमी प्रार्थना है। जिसे कांग्रेसके प्रसिद्ध नेता अब्बास तैयबजीकी पुत्रीके कहने पर सम्मिलित किया गया है। अुसका गला बड़ा अच्छा है। अेक बार जब वह आश्रममें आयी थी तब अुसने आश्रमवासियोंमें कुरानकी शिक्षाका प्रचार करनेकी जिच्छा प्रगट की। मैं तुरन्त सहमत हो गया। अुसने कुरानकी अेक आयतको प्रार्थनामें शामिल करनेका सुझाव दिया और अैसा कर लिया गया।

प्रार्थनाका चौथा अंग जब अवस्तासे जो पहलवी भाषामें लिखा गया है लिया गया है। जब मैं आगाखां महलमें अुपवास कर रहा था तब डॉ० गिल्डर और डॉ० विधान राय आदि कुछ और डॉक्टर भी वहां थे। डॉ० गिल्डर पारसी हैं। जंद अवस्ताका श्लोक अुनसे लेकर प्रार्थनामें सम्मिलित किया गया था।

जहां तक भजनों और गीतोंका सम्बन्ध है कोअी कड़ा नियम नहीं है। सब कुछ प्रार्थनाके समय और स्थान पर निर्भर करता है।

१३३ 'मेरी कोअी सम्पत्ति है?'

जिस शीर्षकसे गांधीजीने यंग जिंडिया में जिस प्रकार लिखा था

मुझसे जो अनेक विचित्र जिज्ञासाओं की जाती हैं अुनमें से कुछ जो गुप्तूर जिलेके अेक पत्रलेखकने की है यहां देता हूं। लोग कहते हैं कि गांधीजी जो कहते हैं सो करते नहीं। वे दरिद्रताका अुपदेश देते हैं, परन्तु सम्पत्ति रखते हैं। वे दूसरोंसे तो गरीब हो जानेको कहते हैं मगर खुद गरीब नहीं हैं। वे सादे और किफायतशारीके जीवनका समर्थन करते हैं फिर भी स्वयं बहुत पैसा खर्च करते हैं। जिसलिये जिन प्रश्नोंका अुत्तर दीजिये क्या आप अपने गुजारे और दौरेके खर्चके लिये महासमिति या गुजरात कांग्रेस कमेटीसे कुछ लेते हैं? लेते हैं तो वह रकम कितनी है? नहीं लेते हैं और पैसा लोग समझते हैं आप सम्पत्तिहीन हैं तो आप अपनी लम्बी यात्राओं और भोजन-वस्त्रके खर्चकी क्या व्यवस्था करते हैं? जिस पत्रमें अैसी हो और बहुतसी बातें हैं परन्तु मैंने अुनमें से मुख्य मुख्य बातें ले ली हैं।

मेरा यह दावा अवश्य है कि मैं जैसा अुपदेश देता हूँ वैसा ही आचरण करनेका प्रयत्न करता हूँ। मगर मुझे स्वीकार करना चाहिये कि अपनी जरूरतों पर मैं जितना चाहता हूँ अुतना कम खर्च नहीं कर पाता। मेरी बीमारीके कारणसे मेरे भोजन पर जितना होना चाहिये अुससे अधिक खर्च होता है। मैं अुसे अेक गरीब आदमीका भोजन हरगिज नहीं कह सकता। मेरी यात्रा पर भी मेरी बीमारीसे पहलेकी अपेक्षा ज्यादा खर्च होता है। मैं अब लम्बी दूरीवाली यात्रामें तीसरे दर्जेमें नहीं कर सकता। पहलेकी तरह मैं किसी साथीके बिना भी सफर नहीं कर सकता। अिन सब बातोंका परिणाम सादगी और गरीबी नहीं बल्कि अिससे अुल्टा होता है। मैं महासमिति या गुजरात कांग्रेस कमेटीसे कुछ नहीं लेता। परन्तु मित्र लोग मेरा यात्रा-खर्च जिसमें भोजन-वस्त्र भी शामिल है जुटा देते हैं। अकसर मेरे मित्रोंमें से जो लोग मुझे बुलाते हैं वे रेलवे टिकट खरीद देते हैं और हर जगह मेरे यजमान मुझ पर अितनी कृपा बरसाते हैं कि मुझे अकसर परेशानी महसूस होती है। मेरे दौरामें लोग मुझे मेरी आवश्यकतासे कहीं अधिक खादी भेंट करते हैं। अुनमें से बची हुअी खादी अुन लोगोंका तन ढकनेमें काम आती है जिन्हें जरूरत है या मुझे आश्रमके सामान्य खद्दर-भण्डारमें रख दिया जाता है। भण्डार सार्वजनिक हितमें चलाया जाता है। मेरी कोअी सम्पत्ति नहीं है फिर भी मैं अनुभव करता हूँ कि शायद मैं संसारमें सबसे धनवान आदमी हूँ। कारण मुझे अपने लिये या अपनी सार्वजनिक संस्थाओंके लिये कभी धनका अभाव नहीं रहा। अीश्वरने सदा और समय पर अचूक मदद दी है। मुझे कअी अैसे अवसर याद हैं जब मेरी सार्वजनिक प्रवृत्तियोंके लिये लगभग पाअी पाअी खत्म हो चुकी थी। अैसे समय रुपया कहींसे आ पहुँचा जहाँसे मिलनेकी कोअी आशा नहीं हो सकती थी। अिन सहायताओंने मुझे नम्र बनाया है तथा अीश्वर और अुसकी कृपालुताके प्रति मुझे श्रद्धासे भर दिया है जो मेरा साथ घोर संकटके समयमें देंगे यदि कभी जीवनमें अैसा संकट मेरे भाग्यमें लिखा हो। अिसलिये संसार मुझ पर अिसके लिये हँस सकता है कि मैंने अपनेको सम्पत्तिसे वंचित कर लिया। मेरे लिये तो सम्पत्ति-विहीन होना निश्चित लाभ

ही सिद्ध हुआ है। मैं चाहता हूँ कि लोग मेरे सन्तोषमें मुझसे स्पर्धा करें। मेरे पास सबसे कीमती खजाना यही है। अिसलिअे शायद यह कहना सही है कि यद्यपि मैं अुपदेश गरीबीका देता हूँ फिर भी मैं धनवान आदमी हूँ।

१३४ अधिकार और कर्तव्य

मैंने अपनी निरक्षर किन्तु सयानी मातासे यह सीखा था कि कर्तव्यका अच्छी तरह पालन करनेसे ही मनुष्यको सारे अधिकारोंकी पात्रता प्राप्त होती है और तभी वे सुरक्षित रहते हैं। यह बात गांधीजीने संयुक्तराष्ट्रोंकी शिक्षा विज्ञान और संस्कृति-सम्बन्धी संस्थाके प्रमुख संचालक डॉ. जूलियन हक्सलेको भेजे गये अेक पत्रमें लिखी थी। यह पत्र गांधीजीने मअी १९४७ में दिल्ली जाते हुअे रेलके सफरमें लिखा था जो संसार भरके ६ प्रमुख व्यक्तियोंसे किये गये अेक प्रश्नके अुत्तरमें था। प्रश्न यह था कि आपके मतानुसार मानव-अधिकारोंके जागतिक पत्र का क्या आधार होगा।

गांधीजीने स्पष्टीकरण किया : चूंकि मैं सदा घूमता रहता हूँ अिसलिअे मुझे अपनी डाक समय पर नहीं मिलती। आपने पंडित नेहरूको पत्र न लिखा होता और अुसमें मेरे नाम भेजे आपके पत्रका हवाला न दिया होता तो शायद आपका पत्र मेरे हाथमें ही न आता।

अिस बात पर खेद प्रगट करके कि डॉ. हक्सले जितना लम्बा वक्तव्य चाहते हैं अुसके लिअे अुनके पास समय नहीं है अुन्होंने यह भी लिखा : परन्तु अिससे भी अधिक सत्य बात यह है कि मैं प्राचीन या अर्वाचीन साहित्यके कुछ रत्नोंको पढ़ना तो बहुत चाहता हूँ परन्तु पढ़ नहीं पाता। युवावस्थाके आरम्भिक कालसे ही मेरी जिन्दगी तूफानी रही है अिसलिअे मुझे आवश्यक वाचनके लिअे अवकाश ही नहीं मिला।

मानव अधिकारोंके बारेमें अपने विचारकी व्याख्या करते हुअे गांधीजीने कहा : जिन्दा रहनेका अधिकार भी हमें तभी मिलता है जब हम जगत्की नागरिकताका कर्तव्य पालन करें। यदि हम अिस

कर्तव्यका पालन नहीं करते तो दूसरे तमाम अधिकारोंके लिये यह साबित किया जा सकता है कि व चोर-जबरदस्तीसे प्राप्त किये गये हैं और उनके लिये लड़नेमें सार नहीं है।

इस विषय पर और अधिक प्रकाश उस समुद्री तारसे पड़ता है जो गांधीजीने स्वर्गीय श्री एच जी वेल्सको भेजा था। गांधीजीका तार यह था

आपका तार मिला। आपके पांचों लेख ध्यानसे पढ़ गया। क्षमा कीजिये। मैं यह कहता हूं कि आप गलत रास्ते पर हैं। मुझे विश्वास है कि मैं आपसे अच्छा अधिकार-पत्र तैयार कर सकता हूं। परन्तु उससे लाभ क्या होगा? उसका रक्षक कौन बनेगा? अगर आपका मतलब प्रचार या लोक-शिक्षणसे है तो आप गलत सिरेसे शुरू कर रहे हैं। मैं सही रास्ता सुझाता हूं।

आप मनुष्यके कर्तव्य-पत्रसे आरंभ कीजिये। मैं विश्वास दिलाता हूं कि जैसे शिशिरके बाद वसन्त आता है वैसे ही कर्तव्योंके बाद अधिकार अपने-आप चले आयेंगे। मैं अनुभवकी बात लिख रहा हूं। अपनी युवावस्थामें मैंने अपने अधिकारों पर जोर देनेकी कोशिशके साथ आरंभ की और मुझे जल्दी ही पता लग गया कि मेरा कोई अधिकार नहीं — अपनी पत्नी पर भी नहीं। इसलिये मैंने अपनी पत्नी अपने बच्चों अपने मित्रों साथियों और समाज सबके प्रति अपने कर्तव्यका पता लगाकर और उनका पालन करके जीवन आरंभ किया और आज मैं देखता हूं कि मेरे अधिकार जितने बड़े हैं उतने मेरी जानकारीमें शायद और किसीके नहीं हैं। अगर यह दावा बेहद बड़ा हो तो मैं कहता हूं कि मेरी जानकारीमें कोई भी ऐसा आदमी नहीं है जिसे मुझसे बड़े अधिकार प्राप्त हों।

१३५ महात्मा गांधीकी शिष्टता

बापू शिष्टताकी मूर्ति थे। बच्चे और बूढ़े अमीर और गरीब सबके प्रति अुनका व्यवहार अत्यन्त शिष्ट होता था। अुनके चरित्रके अिस पहलूके दृष्टान्तके रूपमें मिरास्सा फॉर्बिसन कलकत्तेके अिकोनॉमिक वीक्ली में अेक घटनाका वर्णन किया है। वे पहले गांधीजीसे कभी नहीं मिली थी। वे [illegible] बम्बअी पहुंची और अुन्हें मालूम हुआ कि अुन्हें दूसरी ही गाड़ीसे लाहौर चले जाना है। दूसरे दिन तीसरे पहर वे गाड़ीमें बैठनेको स्टेशन गयी। अेक कुली अुनका बिस्तर और सामान लिये जा रहा था। रास्तेमें अुन्हें कुछ देर लग गयी थी। अतः जब वे पहुंची गाड़ी चलनेकी तैयारीमें थी। जैसा सबको मालूम है भारतमें मर्दों और औरतोंके लिये अलग अलग डिब्बे होते हैं। गाड़ीमें स्त्रियोंका दूसरे दर्जेका अेक ही डिब्बा था लेकिन अुसकी चारों पटरियां भरी हुअी थीं। वे जगहकी तलाशमें प्लेटफार्म पर अिधर अुधर घबराअी हुअी भाग रही थी। लेकिन कहीं जगह नहीं थी। अुनकी नजर अेक खाली डिब्बे पर पड़ी। अुस पर पहला दर्जा लिखा हुआ था। परन्तु अुन्होंने निश्चय कर लिया कि अधिक किराया चुका दूंगी और गार्डको प्रबंध कर देनेके लिये अिधर अुधर देखने लगी। अुन्हें जल्दीमें डिब्बेके दूसरे सिरे पर दरवाजेसे लटकती हुअी वह बड़ी तख्ती नजर नहीं आयी जिस पर लिखा था कि डिब्बा सुरक्षित है।

वर्णन आगे बढ़ता है दरवाजेके सामने हिन्दू सज्जनोंकी अेक मडली खड़ी बातें कर रही थी। वे अुनकी ओर देखनेको मुड़े। अुनमें से अेकने अुन्हें रोककर पूछा कि क्या किसी सहायताकी जरूरत है। अुसका कद छोटा चेहरा सरल और मुख दन्तहीन था जिससे हंसने पर अुसकी हंसी भयानक लगती थी। गाड़ीने चेतावनीकी सीटी लगाअी। वह छोटा आदमी अेकदम मुड़ा और अुसने अधिकारपूर्ण संकेत किया। गार्डने जो झंडी दिखानेवाला ही था बदलेमें अपनी सीटी बजाअी। अिन परेशान महिलाने अपनी स्थिति समझाअी और हिन्दू सज्जनोंकी मडली अुनके चारों ओर जमा होकर घबराहटके चिह्न प्रकट करने लगी। अुस छोटे आदमीने अपनी धोतीकी तहें टटोलकर अेक टिकट निकाला और अुसे महिलाके हाथमें

पकड़ा कर अुसका टिकट मांगा। तुरन्त चारों ओरसे विरोधकी पुकार अुठी। अिस छोटेसे आदमीने सबको चुप कर दिया। भीड़ जमा हो गयी। स्टेशन-मास्टर दौड़कर यह देखने आया कि क्या मामला है। अुस छोटेसे आदमीने समझाया और मजदूरसे कहा कि अिस मुसाफिरका सामान डिब्बेके अन्दर रख दो और मेरा बाहर निकाल दो।

अुसने महिलासे कहा — बात यह है कि मैं पहले दर्जेमें सफर नहीं करना चाहता था, मगर मेरे मित्रोंने मुझे बताये बिना यह जगह खरीद ली। मुझे अब जगह बदलनेमें खुशी है। मैं भी लाहौर जा रहा हूं और आप भी लाहौर जा रही हैं। अिसलिअे कोअी दिक्कत नहीं होगी।

मिशनरी महिला अितनी अधिक विस्मित हुअी कि अुसने काफी विरोध न करके परिस्थितिको स्वीकार कर लिया और बिना दाढ़ीवाला आदमी प्रसन्न होकर गाड़ीके पिछले हिस्सेकी ओर चल दिया। अुसने सिपाहीके रोषपूर्ण विरोधकी काफी परवाह नहीं की। भीड़ खिसियानी और हंसती रही और स्टेशन-मास्टर घबराया हुआ कहने लगा कि मुझे अब गाड़ीको रवाना करना ही पड़ेगा।

१३६ बच्चोंके साथ सैर

मेरे जीवनका अेक सबसे बड़ा सुख यह रहा है कि मैं समय समय पर, थोड़े ही दिन सही, सेवाग्राममें रहा हूं जहां गांधीजी रहते हैं। आश्रमवासियोंके दैनिक जीवनके कअी विशेष पहलू हैं। परन्तु अुनमें से मुझे कोअी दो चुनने पड़ें तो मैं सुबह-शामकी प्रार्थनाका समय और गांधीजीकी सैरका समय चुनूंगा। सैरके वक्त अुनके साथ मेरा आश्रमके कुछ जवान और बूढ़े निवासी और अेक-दो दर्शनार्थी होते हैं जो संयोगवश वहां अुपस्थित हों। किन्तु अेक बार गांधीजीकी सुबहकी सैरमें साथ जाकर मैंने जो कुछ देखा अुसका वर्णन यहां मैं करूंगा।

अिस विशेष अवसर पर जो लोग गांधीजीके साथ थे अुनमें दो बच्चे भी थे। अेक अपनी मांकी गोदमें था और दूसरा अुसके पीछे पीछे चल रहा था। अकस्मात् छोटा गोदवाला बच्चा चिल्ला अुठा और मांने अुसे शान्त करनेका प्रयत्न किया। परन्तु अुसे सफलता न मिली। तब

गांधीजीने अपनी लम्बी लकड़ी (जिसे वे सैरके समय साथ ले जाते हैं) मुझे सौंप कर बच्चेको स्वयं अपनी बांहमें ले लिया। अुसके गालोंको हल्केसे दबाया और चमकती हुई आंखोंसे मुस्कुराये। और वह प्यारा बच्चा खुश हो गया। अितना ही नहीं वह भी अपनी ही प्रसन्नतासे मुस्कुरा दिया। मांको गांधीजीके मातृ-कौशल्य पर आश्चर्य हुआ।

तब दूसरा बच्चा जो अपनी मांके पीछे पीछे चल रहा था अुसके पासमें भाग गया और गांधीजीका दाहिना हाथ पकड़ कर अुन्हें अेक फूलके पास ले गया जो लड़केके पास अुगा हुआ था और अेक आविष्कारकके हर्षके साथ बोला "बापू, यह फूल कितना सुन्दर है!"

गांधीजीने मुस्कुराकर अुत्तर दिया "सचमुच बड़ा सुन्दर है।"

ठीक अुसी समय अेक कुत्ता पाससे गुजरा। बच्चेने कुत्तेकी तरफ अिशारा करके कहा "बापू, बापू, कुत्तेके दुम है।"

"अैसी बात है?" गांधीजीने बच्चेकी-सी निर्दोषतासे मुस्करा कर पूछा। और फिर जरा ठहर कर अुन्होंने पूछा "मगर तुम्हारे भी दुम है न?"

बच्चा हंसा और बोला "आप अितने बूढ़े और बड़े हैं फिर भी आप यह नहीं जानते कि मनुष्यके दुम नहीं होती। आप सचमुच कुछ नहीं जानते।"

गांधीजी और हम सब जोरसे हंस पड़े।

सच बात यह है कि गांधीजी बच्चोंके बीच होते हैं तब अुनकी तरह बच्चा ही बन जाते हैं। वे भूल जाते हैं कि वे सत्तर वर्षसे अधिकके हो गये हैं और अुन्होंने भारत और संसारके कल्याणके लिये यथार्थ कार्य करनेका भार अपने सिर पर ले रखा है। मैंने जब जब अुन्हें बच्चोंके बीच देखा है तब तब पेलेस्टाअिनके अुस दृश्यका चित्र मेरे सामने खड़ा हो जाता है जो अुस समय अुपस्थित होता था जब अीसा मसीह वहांकी बस्तियोंमें से गुजरते थे और बच्चे अुनके पांवोंके अिर्द-गिर्द जमा हो जाते थे और अुनकी प्रेमभरी आंखोंमें आंखें डाल कर देखने लगते थे।

— पुष्पा में अेम अेन जी

१३७ गुरु और चेला

१९ ९ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके लाहौर अधिवेशनमें गोपाल कृष्ण गोखलेने यह कहा था

प्रतिनिधि भाअियो, अिस मामलेमें श्री गांधीका जो अमर सम्मान रहा है अुसे जाननेके बाद मुझे कहना होगा कि किसी भी समय यहां अथवा भारतीयोंके अन्य किसी भी सम्मेलनमें किसी भारतीयके लिअे अुनका नाम गहरी भावना और गर्वके बिना लेना संभव नहीं होगा।

अिस पर सारी सभा खड़ी हो गअी और अुसने श्री गांधीके नामका तीन बार हृदयपूर्वक और अत्यंत अुत्साहसे जय-जयकार किया।

सज्जनो, यह मेरे जीवनका अेक सौभाग्य है कि मैं श्री गांधीको निकटसे जानता हूं और मैं कह सकता हूं कि अुनसे अधिक अुदात्त और अुच्चात्माने अिस पृथ्वी पर आज तक जन्म नहीं लिया है। (तालियां और जय-जयकार) श्री गांधी अुन मनुष्योंमें से हैं जो स्वयं तपस्यापूर्ण और सादा जीवन व्यतीत करते हैं और अपने मानव-बन्धुओंके लिअे प्रेम, सत्य और न्यायके समस्त अुच्चतम सिद्धान्तोंके प्रति जिनकी भक्ति होती है और जिस कारण जिन्हें देखते ही दुर्बल बन्धुओं पर जादूका-सा असर होता है और अन्हें नअी दृष्टि प्राप्त होती है। यह अैसा पुरुष है जिसे मनुष्योंमें मानव, शूरवीर और देशभक्त कहा जा सकता है और हम अुचित रूपमें यह कह सकते हैं कि अुनमें भारतीय मानवता अिस समय सचमुच सर्वोच्च शिखर पर पहुंच गअी है।

[illegible] मोहनदास करमचन्द गांधीने १ १ में जो लिखा था

यह मिलन अेक पुराने मित्रका था, यह कहना और भी अच्छा होगा कि सालोंके लम्बे वियोगके बाद हुआ मिलन था। अुनकी प्रेमभरी मुसकुराहटने अेक क्षणमें मेरा सारा भय और संकोच दूर कर दिया। मेरे अपने और मेरी दक्षिण अफ्रीकाकी प्रवृत्तियोंके बारेमें अुन्होंने जिस बारीकीसे पूछताछ की, अुससे वे तुरन्त मेरे हृदय-मंदिरके देवता बन गये

और अुस पड़ोस फिर कभी गांधीजीने मुझे अपने स्मरणसे ओझल नहीं किया। १९ १ में जब मैं दक्षिण अफ्रीकासे दुबारा लौटा तब हम और भी नजदीक आये। अुन्होंने मानो मुझे अपने हाथमें ले लिया और मुझे गढ़ना शुरू कर दिया। मैं कैसे बोलता हूं क्या पहनता हूं कैसे चलता हूं और क्या खाता हूं — हर बातकी चिन्ता वे रखते थे। मेरी मां भी शायद ही मेरी जितनी चिन्ता की हो। जहां तक मैं जानता हूं हम दोनोंके बीचमें कोअी दुराव-छिपाव नहीं था। सचमुच यह पहली दृष्टिमें ही प्रेमसूत्रमें बंध जानेका अुदाहरण था और १९११ में सख्त तनाव पड़ने पर भी यह प्रेम कायम रहा। अेक राजनीतिक कार्यकर्तामें मैं जो गुण देखना चाहता था वे सब अुनमें दिखाअी देते थे — वे स्फटिक जैसे शुद्ध गाय जैसे गरीब और शेरकी तरह बहादुर थे अुदार अितने कि अुनके अिस गुणको दोष भी मान सकते हैं। हो सकता है किसीको अिन गुणोंमें से अेक भी गुण अुनमें नजर न आया हो। पर मुझे अिसकी परवाह नहीं। मेरे लिअे अितना काफी था कि मुझे अुनमें कहीं अंगुली दिखाने लायक भी खामी नजर नहीं आअी। मेरे लिअे राजनीतिक क्षेत्रमें वे सम्पूर्ण पुरुष थे और आज भी हैं। अिसका कारण यह नहीं था कि हमारे कोअी राजनीतिक मतभेद नहीं थे। सामाजिक रीत-रिवाज जैसे विधवा-विवाह सम्बन्धी विचारोंमें हमारे बीच ठेठ १९ १ में भी मतभेद था। पाश्चात्य सभ्यताके मूल्यांकनके सम्बन्धमें भी हमें अपने बीच कुछ मतभेद मालूम हुआ था। अहिंसा-सम्बन्धी मेरे नये विचारोंसे अुनका स्पष्ट मतभेद था। परन्तु अिन मतभेदोंकी परवाह न तो वे करते थे न मैं करता था। हमें कोअी चीज जुदा नहीं कर सकती थी। आज वे जीवित होते तो क्या होता अिस प्रश्नको लेकर कल्पनाकी तरंगें दौड़ाना मैं पाप और नास्तिकता समझता हूं। मैं तो अितना ही जानता हूं कि आज भी मैं अुनकी ही छत्रछायामें काम कर रहा होता।

१३८. प्राणीमात्र अेक हैं

देर हो रही थी फिर भी गांधीजी सोनेसे पहले कुछ रूअी धुनकर पूनियां बना लेना चाहते थे। मीराबहन अुनकी तांत तैयार कर देना चाहती थी। जल्दी होनेके कारण अुन्होंने अेक स्थानीय स्वयंसेवकसे कह दिया कि बागसे कुछ बबूलकी पत्तियां ले आये। अिन पत्तियोंकी जरूरत धुनकीकी तांत पर घिसनेके लिअे होती है।

लड़का अेक बड़ा-सा गुच्छा ले आया और जब अुसने अुसे मीरा बहनके हाथमें सौंपा तो अुन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सारी छोटी छोटी पत्तियां सिकुड़ गअी थी। अुन्हें लेकर वे गांधीजीके कमरेमें गअी और कहने लगी देखिये तो बापू छोटी पत्तियां सब सो गअी हैं।

गांधीजीने जवाब देनेके लिअे सिर अुठाया तो अुनकी आंखोंमें रंज और दयाकी झलक थी। अुन्होंने कहा सो तो गअी ही हैं। वृक्ष हमारी ही तरह सजीव प्राणी हैं। वे हमारी तरह जीते हैं सांस लेते हैं और खाते-पीते हैं। हमारी भांति अुन्हें भी नींदकी जरूरत होती है। रातको जब पेड़ आराम ले रहा हो तब जाकर अुसकी पत्तियां तोड़ना बड़ी बुरी बात है। और तुम अितनी सारी पत्तियां क्यों लाअी हो? थोड़ीसी पत्तियोंकी ही जरूरत थी। अवश्य ही तुमने सुना होगा कि मैंने बेचारे फूलोंके बारेमें कलकी सभामें क्या कहा था। लोग जब ढेरों कोमल फूल तोड़ लाते हैं मेरे अूपर फेंकते हैं और मेरे गलेमें डालते हैं तब मुझे अतिशय दुःख होता है। क्या किसीको अिस तरह भेज कर किसी पेड़को अैसे समय जब अुसने नींदमें पत्तियां सिकोड़ ली हों छेड़ना और कष्ट देना विचारहीन बात नहीं थी? हमें अपने और शेष सजीव सृष्टिके बीच अधिक सजीव सम्बन्ध अनुभव करना चाहिये।

मीराबहनने शर्मसे सिर झुका कर कहा हां बापू मैं जानती हूं — समझती हूं। यह मैंने बड़ा विचारहीन काम किया। भविष्यमें मैं ध्यान रखूंगी और कोशिश करूंगी कि फिर कभी अपने कामके वास्ते पेड़ोंके पत्ते तोड़ कर अुनकी शान्तिपूर्ण नींदमें खलल न डालूं।

जब बादमें मीराबहनने यह घटना लिख डाली तब गांधीजीने अुस पर यह टिप्पणी लिखी

पाठक अिसे मेरी भावुकता न समझें और न मुझ पर या मीराबहन पर बुरी तरह असंगत होनेका दोष लगायें कि जब हम मनों साग भाजी खा जाते हैं तो हमारा रातको सोते हुअे पेड़की पत्तियां न तोड़नेकी बात करना वैसा ही है जैसा कि चींटीके मरने पर नाक-भौं सिकोड़ना और अूंटको निगल जाना। अेक कसाअी भी किसी हद तक दयालु हो सकता है। कोअी आदमी भेड़का मांस खाता है अिसलिअे वह सोती हुअी भेड़ोंके रेवड़को कत्ल नहीं कर डालता। कहनेका सार यह है कि पशु-जगत और वनस्पति-जगतके सभी प्राणियोंका ज्यादासे ज्यादा खयाल रखा जाय। जो सुखकी खोजमें दूसरोंका खयाल नहीं रखता वह जरूर अिन्सानसे कुछ घटिया है। वह विचारहीन है।

१३९ सिंहकी गुफामें

जब १९१७ में गांधीजीने चम्पारन (बिहार) के किसानोंकी हालतकी जांच करने और निलहोंके खिलाफ अुनकी शिकायतें समझनेके लिअे वहां कदम रखा तब निलहे गोरोंने गांधीजीके खिलाफ बड़ा शोर मचाया और अेंग्लो-अिंडियन अखबारोंने पूरी तरह अुनका समर्थन किया। अिन्होंने गांधीजीको फौरन जिलेसे निकाल देनेकी मांग की और यहां तक संकेत किया कि अगर अधिकारियोंने अुन्हें आगे बढ़नेसे रोक नहीं दिया तो हम कानूनको अपने हाथमें ले लेंगे। अब यह अितिहासकी बात हो गअी है कि अधिकारियोंने अिस आन्दोलनसे डरकर किस प्रकार गांधीजी पर यह नोटिस तामील किया कि वे तुरन्त जिलेको छोड़ कर चले जायं किस प्रकार गांधीजीने अुनकी बात माननेसे अिनकार कर दिया किस प्रकार अुन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और मुकदमेके लिअे पेश होनेको कहा गया और अन्तमें किस प्रकार यह समझ लेने पर कि अुनको सजा देनेके कैसे गंभीर परिणाम होंगे वाअिसरॉयने हस्तक्षेप करके यह मुकदमा वापस कराया।

घटनाचक्रके जिस प्रकार घूमनेसे निलहोंको कैसी चिढ़ हुअी होगी जिसकी अच्छी तरह कल्पना की जा सकती है और अुनमें से कुछ लोग प्रत्यक्ष कार्रवाअी करनेकी धमकियां देने लगे। प्रान्तके गवर्नरसे गांधीजीकी जिस दिन मुलाकात होनेवाली थी अुसके पहले दिन 'पायोनियर' ने मोतीहारी कारखानेके मैनेजर और अेक प्रमुख निलहे मि. डब्ल्यू. अेस. अिर्विनका अेक लम्बा पत्र प्रकाशित किया जिसमें अुन्होंने यह लिखा था

"मुझे विश्वास है कि मि. गांधी अेक नेक अिरादेवाले परोपकारी आदमी हैं, मगर वे सनकी और जुनूनी आदमी हैं और अुन पर दक्षिण अफ्रीकाकी अपनी आंशिक सफलताका और अिस विश्वासका भूत बुरी तरह सवार है कि भगवानने अुन्हें अन्यायको मिटानेके लिये पैदा किया है। वे यह समझ ही नहीं सकते कि अुन्हें वकील और मुख्तार लोग, महाजन और साहूकार, तथा होमरूलवाले राजनीतिक लोग अपना अस्त्र बना रहे हैं। चम्पारनके निलहोंकी सम्पत्तिकी रक्षाके लिये अेक और शायद अेकमात्र कार्रवाअी निहायत जरूरी है और वह है मि. गांधीको जिलेसे हटा देना। निलहोंकी जबरदस्त सहनशीलताने अब तक किसी गंभीर फसादको भड़क अुठनेसे रोक रखा है। परन्तु सरकार निलहोंकी रक्षाका अुपाय नहीं करेगी तो अुन्हें मजबूर होकर अपनी रक्षा आप करनेके लिये जरूरी कदम अुठाने पड़ेंगे।"

परन्तु गोरे निलहोंकी धमकियां कुछ काम नहीं आअीं, क्योंकि गांधीजीने डरनेसे अिनकार कर दिया और अन्तमें बिहार सरकारको किसानोंके कष्टोंकी जांचके लिये अेक कमीशन मुकर्रर करनेको विवश होना पड़ा।

१४० कर्ममें ओीश्वर

मशहूर ओीसाओी पादरी डॉ० जॉन मॉट जब दिसम्बर १९३८ में गांधीजीसे मिलने सेगांव आये तब अुनसे पूछा — कठिनािअयों संकटों और संदेहोंमें आपकी आत्माको सबसे गहरा सन्तोष किस चीजसे मिला है?

गांधीजीका अुत्तर था — ओीश्वरमें जीते-जागते विश्वाससे।

डॉ० मॉट — आपको अपने जीवन और अनुभवोंमें ओीश्वरका अलौकिक साक्षात्कार कब हुआ है?

गांधीजी — मैं समझ गया हूं और मेरा विश्वास है कि ओीश्वर सशरीर कभी दिखाओी नहीं देता परन्तु कर्ममें दर्शन देता है — अधिकसे अधिक अंधकारकी घड़ीमें भी हमारी रक्षाकी बात केवल अुसी तरह समझमें आ सकती है।

डॉ० मॉट — आपका अभिप्राय यह है कि औसी बातें होती हैं जो ओीश्वरके बिना शायद ही हो नहीं सकती?

गांधीजी — हां। वे अचानक और अनजाने होती हैं। ओेक अनुभव *मेरी स्मृतिमें बिलकुल स्पष्ट है। अुसका सम्बन्ध अछूतपन मिटानेके लिओे* मेरे २१ दिनके अुपवाससे है। पहली रातको जब मैं सोया तो मुझे जरा भी खयाल नहीं था कि दूसरे दिन सुबह ही अुपवासकी घोषणा करनी पड़ेगी। रातको बारह बजेके लगभग मुझे अचानक कोओी जगा देता है और कोओी आवाज — यह नहीं कहता कि भीतरसे या बाहरसे — कानमें कहती है — तुझे अुपवास करना होगा। मैं पूछता हूं — कितने दिनका? आवाज फिर कहती है — २१ दिनका। मैं पूछता हूं — यह कब शुरू होगा? वह कहती है — कल शुरू कर दो। यह निर्णय करनेके बाद मैं चैनसे सो गया। मैंने प्रातःकालीन प्रार्थनाके बाद तक अपने साथियोंसे कुछ भी नहीं कहा। मैंने अपन निश्चयकी घोषणा करनेवाला अेक कागजका पर्चा अुनके हाथमें रख दिया और मुझसे बहस करनेको मना कर दिया क्योंकि मेरा निश्चय अटल था। डॉक्टरोंका खयाल था कि अुपवास पूरा होने तक मैं जिन्दा नहीं बचूंगा। परन्तु मुझे भीतरसे

बिगड़ते नहीं थे। अेक गरीब राष्ट्रका भिखारी जब लोग अुसे भिक्षा देनेको ओर मचा रहे हों तब कैसे सोया रह सकता था? वे चुपचाप अुठ बैठते खिड़की बन्द होती तो अुसे खोल देते और चंदा जमा करनेका अपना काम शुरू कर देते थे।

मैंने ये दृश्य देखे हैं जब कभी कभी अतिशय थकानके मारे गांधीजी किसी स्टेशन पर जाग नहीं पाते थे। चंद आदमी अुनके डिब्बेमें घुस आते थे अुनके साथके आदमियोंके मना करने पर भी गांधीजीको झकझोरकर जगा देते थे और अुनके हाथोंमें रुपया-पैसा देकर महात्मा गांधीकी जय बोलते हुये चले जाते थे। गांधीजी मुस्कुरा देते थे फिर पटरी पर लेट जाते थे और गहरी नींदमें डूब जाते थे।

जब किसी मामूली भिखारीको कोओी सिक्का मिलता है तो अुसे खुशी होती है परन्तु जिस अजीब भिक्षुराजके मामलेमें लोग अुसके हाथोंमें सिक्के रखकर स्वयं खुशी महसूस करते हैं। कभी कभी कोओी कमजोर बुढ़िया फटे-पुरानेमें कपड़े पहने बड़ी मुश्किलसे भीड़में होकर गांधीजी तक पहुंच जाती अुनकी हथेलीमें अेक पैसा रखती थोड़ी देर तक ध्यानसे भक्तिपूर्वक अुनकी ओर देखती रहती और वापस चली जाती।

शायद १९२७ के शुरूकी बात होगी। अुस समय कांग्रेस पदग्रहण करने या असहयोग करनेकी दुविधाके बीच झूल रही थी। अेक पत्रकारने अुत्सुकतापूर्वक गांधीजीसे पूछा बापूजी क्या कांग्रेस पद ग्रहण करेगी? गांधीजीने बड़े मजेसे आंख दबाकर पूछा क्यों तुम मंत्री बनना चाहते हो? बेचारा संवाददाता झेंप गया और पीछे हटने लगा। परन्तु गांधीजी अुन जितनी आसानीसे छोड़नेवाले नहीं थे। अुन्होंने पूछा क्या मुझे अपना टोप भिक्षापात्रके तौर पर अिस्तेमाल करने दोगे? अवश्य ही टोप फौरन दे दिया गया और गांधीजीने खुशी खुशी अुसे अुसके मालिकके सामने ही फैला कर भिक्षा मांगनेकी शुरुआत कर दी। समीपवर्ती अुम्मीदवारोंकी हथेलीके बीच कुछ चांदीके सिक्के अिसमें डालने पड़े। यह अर्धनग्न फकीर भी कैसा अनोखा भिखारी था।

कहा जाता है कि भिखमंगोंको कोओी पसन्द नहीं हो सकती। मगर यह नियम गांधीजीका लागू नहीं होता था। वास्तवमें अनके साथ

मुलकी ही बात थी। अगर आप मालदार हैं तो वे आपसे सोना-चांदी मांगेंगे अगर गरीब हैं तो श्रीमानदारीका अेक पैसा ही ले लेंगे। अगर रुपया-पैसा आप नहीं दे सकते तो व आपसे हाथकता सूत ले लेंगे अगर आप यह भी नहीं कर सकते तो आपको अुपवास करके बचतके दाम चुकाने होंगे। गांधीजी जैसे भिक्षुक थे जिनसे कोअी बच नहीं सकता था। वे सख्तीसे काम लेनेवाले आदमी थे। फिर भी वे अत्यन्त मीठे अत्यन्त स्नेहपूर्ण और अत्यन्त क्षमाशील थे।

— गांधीजी डी जी तेंदुलकर और विट्ठलभाओी क
जवरी १९४४

१४२ बापूकी अहिंसाका अेक पुराना दृष्टान्त

१८९७ में दक्षिण अफ्रीकामें गोरोंकी अेक भीड़ने महात्मा गांधी पर हमला करके अुन्हें बेरहमीसे घायल कर दिया था। अुस समय अुन्होंने अपने आक्रमणकारियों पर मुकदमा चलानेसे अिनकार करके सार्वजनिक रूपसे जगतके सामने अहिंसाका अेक ज्वलन्त अुदाहरण अुपस्थित किया था। अुस आक्रमणकी कहानी अुन्होंने स्वयं जिस प्रकार बयान की है

अेक भीड़ हमारे पीछे हो गयी। ज्यों ज्यों हम आगे कदम आगे बढ़ते जाते थे त्यों त्यों भीड़ बढ़ती जा रही थी। जब हम वेस्ट स्ट्रीट पहुंचे तब भीड़ जबरदस्त हो गयी थी। अेक हृष्ट-पुष्ट शरीरवाला आदमी मि लॉटनको पकड़कर मुझसे दूर खींच ले गया। अिसलिअे व मेरे साथ साथ चलनेकी स्थितिमें नहीं रहे। भीड़ मुझे गालियां देने लगी और मुझ पर पत्थर और जो भी कुछ अुसके हाथ लगा वह बरसाने लगी। अुन लोगोंने मेरी पगड़ी अुतारकर फेंक दी। अिसी बीच अेक मोटा-सा आदमी मेरे पास आया और मेरे मुंह पर थप्पड़ जमाकर मुझसे मुझे लातें लगाओी। मैं बेहोश होकर गिरने ही वाला था कि मैंने नजदीकके मकानकी रेलिंग पकड़ ली और सांस लेकर खड़ा रहा। मैंने काफी देर तक पिटा और जब बेहोशीका असर मिटा तो अपना रास्ते पर चल पड़ा। मेरे घर पहुंचनेकी आशा लगभग छोड़

दी थी। परन्तु मुझे अच्छी तरह याद है कि तब भी मेरा हृदय मुझ पर हमला करनेवालोंको दोष नहीं दे रहा था।

जब नेटाल सरकारके बड़े वकील मि. अेस्कम्बने गांधीजीसे कहा हम चाहते हैं कि अपराधी सजा पायें। क्या आप अपने आक्रमणकारियोंमें से किसीको पहचान सकते हैं? तो गांधीजीने अुत्तर दिया — शायद मैं अुनमें से अेक-दोको पहचान सकूं। परन्तु यह बातचीत आगे बढ़े अिससे पहले ही मैं आपको तुरंत कह देता हूं कि मैंने अपने आक्रमणकारियों पर मुकदमा न चलानेका संकल्प कर लिया है। मैं यह निर्णय नहीं कर सकता कि वे कसूरवार हैं। अुन्हें जो कुछ जानकारी थी वह अुनके नेताओंसे मिली थी। अुनसे यह निर्णय करनेकी आशा नहीं रखी जा सकती कि वह जानकारी सही है या गलत। जो कुछ अुन्होंने मेरे बारेमें सुना था यदि वह सब सच था तो अुनके लिये अुत्तेजित होकर क्रोधके आवेशमें कुछ न कुछ अैसा काम कर बैठना स्वाभाविक था। मैं अुसके लिये अुन्हें दोष नहीं दूंगा। लोगोंकी भड़की हुआी भीड़ने सदा अिसी तरह न्याय करनेकी कोशिश की है। अगर किसीको दोष दिया जाय तो गोरोंकी कमेटीको स्वयं आपको और अिसलिये *नेटालकी सरकारको दिया जाना चाहिये। रायटरने तोड़-मरोड़कर जो* भी विवरण भेजा हो लेकिन जब आप जानते थे कि मैं नेटाल आ रहा हूं तो यह आपका और कमेटीका धर्म था कि मुझसे पूछ कर मेरी भारतकी हलचलोंके बारेमें अपनी शंका समाधान करते मेरा कहना सुनते और फिर अुस हालतमें जो भी ठीक मालूम होता वह करते। मैं आप पर या कमेटी पर तो हमलेके लिये मुकदमा चला नहीं सकता। चला सकूं तो भी मैं कानूनकी अदालतसे राहत प्राप्त नहीं करना चाहूंगा। आपको नेटालके गोरोंकी हितरक्षाके लिये मुनासिब मालूम हुआी वह कार्रवाई आपने की। यह अेक राजनीतिक मामला है। यह अब मेरा काम है कि मैं आपसे राजनीतिक क्षेत्रमें लड़कर आपको और गोरोंको विश्वास करा दूं कि भारतीय लोग ब्रिटिश साम्राज्यकी आबादीका अेक बड़ा हिस्सा हैं और वे गोरोंको जरा भी हानि पहुंचाये बिना अपने *स्वाभिमान और अधिकारोंकी रक्षा करना चाहते हैं।*

१४३ आदर्श कैदी

आचार्य काका कालेलकर, जो १९१ में यरवडा जेलमें गांधीजीके साथी थे अपनी दिनचर्याका वर्णन अिस प्रकार करते हैं

हम सबके ही चार बजे जब तारे अपनी पूरी शानसे चमकते होते हैं अुठ जाते हैं। ४–२ पर हमारी प्रार्थना शुरू हो जाती है। प्रार्थनाके बाद गीतापाठ होता है। पाठ समाप्त हो जाने पर मैं अपनी सुबहकी सैरको निकल जाता हूं और गांधीजी आधा घंटा लिखने-पढ़नेमें बिताकर मेरे साथ हो जाते हैं। गीता आश्रम-आदर्श आहारकी समस्या चरखा मेरी चिकित्सा आदि सैरके समय चर्चाके साधारण विषय होते हैं। ठीक ६ बजे हम अपने नाश्ते पर बैठते हैं। गांधीजीके नाश्तेमें दही (जब वे लेते हैं) और पानीमें भिगोये हुअे खजूर होते हैं। जब तक हमारा नाश्ता खतम होता है बकरियां दूध निकलवाने आ जाती हैं। गांधीजीके लिअे अुनके बच्चोंका बेसब्रीसे दूध पीनेका और कभी कभी बीच बीचमें ठहर कर मिमियानेका दृश्य सदा आनन्ददायक होता है। बादकी हल्की-सी लात खाकर यह क्रिया बंद हो जाती है। क्षणभर भी देर किये बिना गांधीजी चरखे पर बैठ जाते हैं और चरखा भारतके दुख-दर्दोंकी दर्दभरी कहानी दोहराने और मुक्तिकी निश्चित आशा दिखाने लगता है। आपने कभी किसी ध्यानपूर्ण व्यवस्थित चरखेके पीड़ातुर स्वर सुने हैं? अिस महाकाव्यकी कथा अेकके बाद दूसरे पदके क्रममें जारी रहती है और अुसका प्रभाव आपके मन पर छाता जाता है।

पासमें चरखेकी गुनगुनाहट होती रहे तो कभी अकेलापन महसूस नहीं होता। बीचमें अेक दो बार जरूरी कामोंके लिअे उठनेके अलावा यह क्रम साढ़े दस बजे तक चलता रहता है। सात बजेके करीब वे नीबू और नमक डालकर गरम पानीकी अेक प्याली लेते हैं। साढ़े दस बजे वे नहाने चले जाते हैं। मैं आपसे यह कहना भूल रहा हूं कि वे हर रोज सुबह कुछ समय काव्यपूर्ण असर करनेवाली योजना पर विचार

है। आठ घंटेके कामसे अुन्हें अपनी दिनभरकी जरूरतसे ज्यादा पूनियां मिल जाती हैं। अेक बार सरदार वल्लभभाअीकी पूनियां खतम हो गयी तो अुन्होंने सुपरिन्टेन्डेन्टके मारफत कुछ पूनियां मंगवाअीं। मेरा भंडार सदा थोड़ा ही रहता था। गांधीजीने जीवनका अपना समय दुगुना कर दिया। अिसमें अुन्हें अुतना ही आनन्द आता था जितना मांको अपने प्यारे बच्चोंके लिअे भोजन बनानेमें आता है।

११ बजेके करीब हम दोपहरका खाना खाया करते थे। अिस समय भी दहीमें पुटकीभर सोडा खजूर या द्राक्ष और अुबली हुअी तरकारी होती थी। लगभग अुसी समय अखबार आते थे। मैं खादी प्रहारों और बम्बअीकी महिलाओंके राष्ट्रीय झंडे फहरानेके बारेमें ताजी खबरें सुनाया करता था। समाचारों पर हम चर्चा क्वचित् ही करते। वह शामकी सैरके लिअे रखी जाती। भोजनके समय आहारशास्त्र और अिस रोगोपचार चर्चाके मुख्य विषय होते क्योंकि गांधीजीने अिस क्षेत्रमें गहरा अध्ययन और परिश्रमपूर्ण प्रयोग किये हैं। भोजनके बाद तुरन्त चरखा तो आता ही। अुसके बाद अखबार और फिर दोपहरकी झपकी। डेढ़ बजे वे अेक प्याला खट्टे नींबूका रस सोडा डालकर पीते हैं। अिसके बाद चिट्ठियां पढ़ना या लिखना होता है। मीराबहनके खातिर आश्रम भजनावलिके भजनोंका अंग्रेजी अनुवाद तो होता ही है। चार बजे आप अुन्हें तकली लिअे धूपमें टहलते और दूध जैसा सफेद सूत निकालते पायेंगे। तकली टूटे खपरेल और बांसकी डंडीसे खुद अुन्हींकी बनाअी हुअी है।

पांचका घंटा बजते ही हमारा सायंकालीन भोजन आरंभ हो जाता है। अुसमें वही खजूर और कुछ शाकभाजी होती है। फिर बकरियां आती हैं और अुनके बच्चे अपनी छोटी छोटी दुम हिलाते हैं। भोजन समाप्त होने पर मैं बरतन धोता हूं और गांधीजी अगले दिनके लिअे खजूर संवारकर पानीमें भिगो देते हैं। फिर शामकी सैर होती है। संध्याकालीन आकाशके रंग सूर्यास्तका गौरव और नाटे मोटे सफेद बादलोंकी अजीब शक्लें गांधीजीके लिअे विशेष आकर्षणकी चीजें हैं। कभी कभी पानीके नल पर मेरा काम पूरा नहीं हो पाता अुससे पहले वे मुझे बत्तीस आकाशके किसी विशेष सौन्दर्यको देखने बुला लेते हैं। मैंने

अुन्हें अिस प्रकार किसीको अपना नियत कार्यसे कुछ समय चुराकर आनेके लिये कहते बहुत ही कम देखा है।

सात बजे हम अपनी शामकी प्रार्थना शुरू करते हैं। बरसातके दिनोंमें अुसका समय ७॥ बजेका रखा गया था परन्तु जाड़ा शुरू होने पर आश्रमने अपना समय बदलकर ७ बजेका कर दिया। हमने भी अपना समय बदल दिया ताकि हमें यह सन्तोष रहे कि भले ही हम सैकड़ों मील दूर हों फिर भी हम आश्रमके लड़के-लड़कियोंके साथ साथ अपनी प्रार्थना कर रहे हैं। जो लोग प्रार्थनाके भावुत्वको जानते हैं वे ही हमारे लिये हुअे परिवर्तनकी कद्र कर सकते हैं।

१५४ 'अधनंगा राजद्रोही फकीर

कट्टर साम्राज्यवादी मि० (अब सर) विन्स्टन चर्चिलका पक्का विश्वास था कि भारतके हाथसे निकल जाने पर ब्रिटिश साम्राज्यका पतन हो जायगा और यह महान शरीर क्षणभरमें मुर्दा होकर इतिहासमें विलीन हो जायगा। अुन्होंने घोषणा की थी कि हमारी सरकार सम्राट्के मुकुटके जिन अत्यन्त भव्य और मूल्यवान रत्नको जिसमें हमारे अन्य सब अुपनिवेशों और अधीन देशोंकी अपेक्षा ब्रिटिश साम्राज्यका सबसे अधिक धन और गौरव निहित है, फेंक देनेका कोअी विचार नहीं रखती। ये चर्चिल साहब अपने पर काबू न रख सके जब अुन्होंने देखा कि भारतके वाअिसरॉय लॉर्ड अर्विन महात्मा गांधी द्वारा देशव्यापी सविनय कानून भंग आन्दोलन छोड़ दिये जानेके बाद अुनसे राजनीतिक सन्धिकी बातचीत कर रहे हैं। २३ फरवरी १९३१ को जब अेपिंग यूनियनिस्ट असोसिअशनकी कौंसिलके समक्ष भाषण देते हुअे अुन्होंने महात्माजी और वाअिसरॉय दोनोंके खिलाफ भाषण दिया जिसके फकाअे जिन शब्दोंमें था:

यह अेक चौंकानेवाला भी घिनौना दृश्य है कि मिडल टेम्पलके अेक वकील मि० गांधी जो अब पूर्वमें सुपरिचित अेक विशेष प्रकारके राजद्रोही फकीर बन गये हैं, अर्धनग्न अवस्थामें वाअिसरॉय भवनकी सीढ़ियों पर चढ़ते दिखाओी दें, सम्राट्के प्रतिनिधिके साथ बराबरीके

जाने प्रतिज्ञायें भी करे और साथ साथ सविनय कानून-भंगकी अेक विरोधी मुहिम भी संगठित और संचालित करें।

अुन्होंने यह गर्जना भी की थी — मैं कोअी अर्विन और गांधीजीके बीचकी अिन वार्ताओं और समझौतोंके विरुद्ध हूँ। सच तो यह है कि गांधीवादको और अिन बातोंका यह प्रतीक है अुन सबको अन्तमें कुचल देना पड़ेगा। कोअी आश्चर्यकी बात नहीं कि जब गांधीजी अुस वर्षके अन्तमें दूसरी गोलमेज परिषदके प्रतिनिधि बनकर अिंग्लैण्ड गये तब चर्चिलने अुनसे मिलना अस्वीकार कर दिया।

गांधीजीके विरुद्ध चर्चिलकी गर्जनाकी प्रतिध्वनि १३ वर्ष बाद फिर सुनाअी दी। मअी १९४४में वे आगाखाँ महलकी नजरबन्दीसे छूटे थे और पंचगनीमें स्वास्थ्य सुधार रहे थे। चर्चिल अुस समय ग्रेट ब्रिटेनके प्रधान मंत्री थे। अुन्हें गांधीजीने यह पत्र लिखा

दिलखुश (पंचगनी)
१७ जुलाअी १९४४

प्रिय प्रधान मंत्री

खबर है कि आप अिस नंगे फकीरको — मेरा यह वर्णन आपका ही किया हुआ बताया जाता है — कुचल डालनेकी अिच्छा रखते हैं। मैं बहुत अर्सेसे फकीर — और वह भी नंगा जो और भी कठिन काम है — बननेकी कोशिश कर रहा हूँ। अिसलिअे मैं अिस वर्णनको अपनी प्रशंसा ही समझता हूँ चाहे वर्णन करनेवालेका आशय वैसा न रहा हो। तो मैं आपसे अुसी हैसियतसे अनुरोध करता हूँ कि मुझ पर विश्वास कीजिये और मेरा अपनी और आपकी कौमकी सेवाके लिअे तथा अुसके द्वारा संसारकी सेवाके लिअे अुपयोग कर लीजिये।

आपका सच्चा मित्र
मो॰ क॰ गांधी

यह पत्र किस प्रकार गुम हुआ और अुसके प्रकाशित होनेमें कैसे देर लगी यह गांधीजीने १८ जून १९४५ को पंचगनीसे लिखाये गये अेक वक्तव्यमें बताया था। गांधीजीके कथनानुसार यह पत्र १७ जुलाअीको आधी रातके बाद अूंघते समय लिखा गया था जब अुन्होंने वायसरॉयके नाम अेक

नाते सविनय भी करें और साथ साथ सविनय कानून-भंगकी अेक विरोधी मुहिम भी संगठित और संचालित करें।

अुन्होंने यह गर्जना भी की थी — मैं कोअी भविष्य और गांधीजीके बीचकी [illegible] वार्ताओं और समझौतोंके विरुद्ध हूं। सच तो यह है कि गांधीवादको और जिन बातोंका वह प्रतीक है अुन सबको अन्तमें कुचल देना पड़ेगा। कोअी आश्चर्यकी बात नहीं कि जब गांधीजी अुस [illegible] अन्तमें दूसरी गोलमेज परिषदके प्रतिनिधि बनकर विलायत गये तब चर्चिलने अुनसे मिलना अस्वीकार कर दिया।

गांधीजीके विरुद्ध चर्चिलकी गर्जनाकी प्रतिध्वनि ११ वर्ष बाद [illegible] सुनाअी दी। अभी १९४४में वे आगाखां महलकी नजरबन्दीसे छूटे थे और पंचगनीमें स्वास्थ्य सुधार रहे थे। चर्चिल अुस समय ग्रेट ब्रिटेनके प्रधान मंत्री थे। अुन्हें गांधीजीने यह पत्र लिखा :

पंचगनी (पंचगनी)
१७ जुलाअी १९४४

प्रिय प्रधान मंत्री,

खबर है कि आप अिस नंगे फकीरको — मेरा यह वर्णन आपका [illegible] [illegible] हुआ बताया जाता है — कुचल डालनेकी अिच्छा रखते हैं। मैं [illegible] अर्सेसे फकीर — और वह भी नंगा जो और भी कठिन काम है — बननेकी कोशिश कर रहा हूं। अिसलिअे मैं अिस वर्णनको अपनी [illegible] ही समझता हूं यद्यपि वर्णन करनेवालेका आशय वैसा न रहा [illegible]। [illegible] मैं आपसे अैसी हैसियतसे अनुरोध करता हूं कि मुझ पर विश्वास कीजिये और मेरा अपनी और आपकी कौमकी सेवाके लिअे [illegible] अुनके द्वारा संसारकी सेवाके लिअे अुपयोग कर लीजिये।

मुझे दुःख और साथ ही खुशी भी हुआी । खुशी जिस बातकी कि मुझे अुस पर अपने प्रेमकी वर्षा करनेका अवसर मिला। मैंने अुसे कहा तुम्हारी भूल है। मैं बीमार होता और मुझे नमक या और कोअी पदार्थ छोड़नेकी सलाह दी जाती तो मैं निःसंकोच मान लेता । मगर यह लो डॉक्टरी या और किसी सलाहके बिना ही मैं अेक सालके लिये नमक और दाल छोड़ता हूं तुम चाहे छोड़ो या न छोड़ो।

कस्तूरबाको जिससे आघात लगा और अुन्होंने गांधीजीसे क्षमा मांगी। वे जानती थी कि अुनके पति जो कहते हैं वही सदा करते हैं। अुन्होंने अुनसे अपनी प्रतिज्ञा वापस लेनेकी प्रार्थना की और समझाया कि यह मेरे साथ बहुत बड़ी ज्यादती होगी। गांधीजी अुनसे नाराज नहीं हुअे बल्कि अुन्हें सांत्वना दी। अुन्होंने कहा कि मेरे परहेजसे तुम्हें मदद मिलेगी और मुझे बल मिलेगा। जिस पर कस्तूरबा रो पड़ी क्योंकि वे जानती थी कि गांधीजी अपनी बातसे पीछे नहीं हटेंगे।

और आप मानें या न मानें कस्तूरबाका स्वास्थ्य अच्छा होने लगा। रक्तस्राव सर्वथा बन्द हो गया और अुन्होंने शीघ्र ही अपना हमेशाका अुत्तम स्वास्थ्य पुनः प्राप्त कर लिया। और वैसा गांधीजीने विनोदमें कहा अेक नीम हकीम के रूपमें अुनकी प्रतिष्ठामें कुछ वृद्धि हो गअी।

१४६ भंगीके रूपमें जीवन्मुक्त

अमेरिकामें दीर्घ कालसे रह रहे अेक भारतीय श्री अेस के रायने डॉ रवीन्द्रनाथ टैगोरसे जब सन् १९२ में वे अमेरिका गये थे तब यह पूछा कि महात्मा गांधीने बोलपुरमें रहते हुअे क्याकुछ अैसा क्या किया था जिससे आप जितने प्रभावित हुअे। जिस पर शान्तिनिकेतनके विख्यात कविने कहा था जो मैं बरसोंमें नहीं कर सका वह अुन्होंने कुछ ही दिनोंमें कर दिखाया। श्री रायके अनुसार पहला सुझाव हुआ डॉ टैगोरने आगे कहा

मेरी सदा यह राय रही कि मेरी पाठशालाके विद्यार्थियोंको अपने कमरे आप साफ करने चाहिये अपने बिस्तर खुद लगाने चाहिये अपना भोजन आप बनाना चाहिये और अपनी थालियां खुद धोनी चाहिये ।

मुझे दुःख और साथ ही खुशी भी हुअी। खुशी अिस बातकी कि मुझे अुस पर अपने प्रेमकी वर्षा करनेका अवसर मिला। मैंने अुसे कहा — तुम्हारी भूल है। मैं बीमार होता और मुझे नमक या और कोअी पदार्थ छोड़नेकी सलाह दी जाती तो मैं निःसंकोच मान लेता। मगर यह लो, डॉक्टरी या और किसी सलाहके बिना ही मैं अेक सालके लिअे नमक और दाल छोड़ता हूं, तुम चाहे छोड़ो या न छोड़ो।

कस्तूरबाको अिससे आघात लगा और अुन्होंने गांधीजीसे क्षमा मांगी। वे जानती थी कि अुनके पति जो कहते हैं वही सदा करते हैं। अुन्होंने अुनसे अपनी प्रतिज्ञा वापस लेनेकी प्रार्थना की और समझाया कि यह मेरे साथ बहुत बड़ी ज्यादती होगी। गांधीजी अुनसे नाराज नहीं हुअे बल्कि अुन्हें सान्त्वना दी। अुन्होंने कहा कि मेरे परहेजसे तुम्हें मदद मिलेगी और मुझे बल मिलेगा। अिस पर कस्तूरबा रो पड़ी क्योंकि वे जानती थी कि गांधीजी अपनी बातसे पीछे नहीं हटेंगे।

और आप मानें या न मानें कस्तूरबाका स्वास्थ्य अच्छा होने लगा। रक्तस्राव सर्वथा बन्द हो गया और अुन्होंने शीघ्र ही अपना हमेशाका अुत्तम स्वास्थ्य पुनः प्राप्त कर लिया। और जैसा गांधीजीने विनोदमें कहा अेक 'नीम हकीम' के रूपमें अुनकी प्रतिष्ठामें कुछ वृद्धि हो गअी।

१४६ भंगीके रूपमें जीवन्मुक्त

अमेरिकामें दीर्घ कालसे रह रहे अेक भारतीय श्री अेस० के० रायने डॉ० रवीन्द्रनाथ टैगोरसे जब सन् १९२० में वे अमेरिका गये थे तब यह पूछा कि महात्मा गांधीने बोलपुरमें रहते हुअे सचमुच अैसा क्या किया था जिससे आप अितने प्रभावित हुअे। अिस पर शान्तिनिकेतनके विख्यात कविने कहा था — जो मैं बरसोंमें नहीं कर सका वह अुन्होंने कुछ ही दिनमें कर दिखाया। श्री रायके अनुसार घटना सुनाते हुअे डॉ० टैगोरने आगे कहा :

मेरी सदा यह राय रही कि मेरी पाठशालाके विद्यार्थियोंको अपने कमरे आप साफ करने चाहिअे, अपने बिस्तर खुद लगाने चाहिअे, अपना भोजन आप बनाना चाहिअे और अपनी थालियां खुद धोनी चाहिअे।

परन्तु हमारे लड़के अितनी अूँची जातियोंके घरोंसे आते थे कि मैं अुनसे ये काम नहीं करा सका। दिक्कत यह थी कि न अपना कमरा खुद साफ नहीं करता था न अपना बिस्तर स्वयं बिछाता था न अपना खाना आप बनाता था और न अपनी थाली खुद धोता था। अिसलिअे लड़के मेरी बात पर गंभीर ध्यान देनेकी परवाह नहीं करते थे। मैं कोरा व्याख्यान देता था अिसलिअे लड़के सिर्फ सुन लेते थे।

परन्तु गांधीजी जब आये तो अुन्होंने तुरन्त हमारे लड़कोंके हृदय जीत लिये। वे अुनमें से अेक बनकर अुनके साथ घुलमिल गये। अुन्होंने विद्यार्थियोंसे कहा कि जो काम तुम्हें स्वयं करना चाहिये वह नौकरोंसे कराना अनुचित है। और वे स्वयं अपना कमरा साफ करते अपना बिछौना खुद बिछाते अपनी थाली आप मांजते और अपने कपड़े भी खुद ही धो लेते।

लड़कोंको अपने पर शर्म आयी और वे बड़ी खुशीसे वे सब काम करने लगे। मैंने फौरन् जान लिया कि गांधीजीने विद्यार्थियोंके दिल कैसे जीते।

अेक बार गांधीजीने भंगियोंसे कहा कि कुछ दिनके लिये तुम लोग कोअी काम मत करो। अूंची जातिके लड़के अछूत भंगियोंका काम करनेकी कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। मैलेकी बदबूसे सार हरेकका जीना दूभर हो गया।

तब गांधीजी स्वयं मैलेके बरतन अपने सिर पर रखकर ले चले और मैला जमीनमें गाड़ आये। अुनका यह असाधारण साहस सफल सिद्ध हुआ। शीघ्र ही अुच्चतम जातियों और अमीर घरोंके लड़के अछूत भंगियोंका काम करनेका सम्मान प्राप्त करनेमें अेक-दूसरेसे होड़ लगाने लगे।

और मैं अचम्भेसे दंग हुअे अिस महापुरुषके प्रति आश्चर्य और प्रशंसाकी भावनासे ओतप्रोत हो गया। मैंने नम्रतापूर्वक अपने हृदय और मनसे अत्यन्त गुरु मानकर अुनको नमस्कार किया। और मुझे अिस महान [illegible] और अत्यन्त आदरपूर्ण भावसे [illegible] दिखायी दिए। मुझे अितना अपार आनन्द होता है कि अब सारा भारत अुनका अनुसरण करता है। अगर गांधी जैसी अिस धरतीका पवित्र हो

तो यह गांधीजी ही हैं। और यह मालूम होना चाहिये कि यह पदवी गांधीजीको हमारे लोगोंकी दी हुअी हार्दिक भेंट है।

श्री रायने यह बातचीत साधिकोंसोंधी नामक पत्रके अेक अंकमें दी है। अुन्होंने कविको सम्बोधित करते हुअे कहा आपके मुखसे गांधीजीके बारेमें अैसे शब्द सुनकर आह्लाद होता है। महात्मा गांधी आज भारतके करोड़ों निवासियों पर जबरदस्त प्रभाव रखते हैं। क्या आप कृपा करके मुझे बतायेंगे कि अुनकी सफलताका वास्तवमें क्या रहस्य है?

डॉ टैगोरने कहा गांधीजीकी सफलताका रहस्य अुनके तेजस्वी आध्यात्मिक बल और अटूट स्वार्थत्यागमें है। बहुतसे सार्वजनिक व्यक्ति स्वार्थपूर्ण कारणोंसे त्याग करते हैं। यह अेक तरहका पूंजी लगाना है जिससे अच्छा मुनाफा मिलता है। गांधीजी बिलकुल भिन्न हैं। वे अपनी अुदारतामें अद्वितीय हैं अुनका जीवन ही त्यागका दूसरा नाम है। अुन्होंने अपने आपको बलिदान कर दिया है। अुन्हें किसी सत्ता किसी पद किसी दौलत नाम या ख्यातिकी लालसा नहीं है। अुन्हें सारे भारतका राज-सिंहासन देकर देखिये वे अुस पर बैठनेसे अिनकार कर देंगे परन्तु सिंहासनमें जड़े रत्नोंको बेचकर अुसका रुपया मोहताजोंमें बांट देंगे।

अुन्हें आप अमरीकाके पास जितना भी रुपया है देकर देखिये। वे निश्चित रूपमें अुसे लेनेसे अिनकार कर देंगे अगर वह रुपया मानव-जातिके अुत्थानके किसी योग्य कार्यमें लगानेके लिये न हो।

अुनकी आत्मा सदैव देनेको अुत्सुक रहती है और वे बदलेमें कुछ भी पानेकी अपेक्षा नहीं रखते — धन्यवाद तककी नहीं। यह अतिशयोक्ति नहीं है क्योंकि मैं अुन्हें खूब जानता हूं।

वे बोलपुरमें हमारी पाठशालामें आकर कुछ समय रहे थे। अुनकी त्यागशक्ति अिस कारण और भी अधिक अजेय बन जाती है कि अुनके साथ अत्यन्त निर्भयता जुड़ी हुअी है।

सम्राट् और महाराजा बन्दूकें और मशीनें कैद और यातनायें अपमान और प्रहार, यहां तक कि मौत भी गांधीजीकी आत्माको कभी विचलित नहीं कर सकती।

वे जीवन्मुक्त हैं। दूसरे शब्दोंमें अुनकी आत्मा मुक्त हो गयी है। मेरा कोअी गला घोटे तो मैं मददके लिअे चिल्लाअूंगा परन्तु गांधीजीका गला घोटा जाय तो मुझे यकीन है कि वे चिल्लायेंगे नहीं। वे गला घोंटनेवाले पर हंसेंगे और अगर अुन्हें मरना ही पड़ा तो वे मुस्कराते हुअे मरेंगे।

"अुनके जीवनकी सादगी बच्चोंकी-सी है अुनका सत्य-पालन अटल है, मानव-जातिके लिअे अुनका जीवन रचनात्मक प्रभावसे पूर्ण है। अुनमें वही वृत्ति है जिसे अीसाकी वृत्ति कहते हैं। मैं अुन्हें जितना ही अधिक जानता हूं अुतना ही अुनके प्रति मेरा प्रेम बढ़ता जाता है। मेरे लिअे यह कहना अनावश्यक है कि यह महापुरुष संसारके भविष्यके निर्माणमें अवश्य प्रमुख भाग लेगा।"

"अैसे महापुरुषके बारेमें दुनियाको अच्छी जानकारी होनी चाहिये। आप यह जानकारी क्यों नहीं देते आप तो जग-प्रसिद्ध व्यक्ति हैं" श्री रायने पूछा। डॉ. टैगोरने अुत्तर दिया

"मैं अुन्हें प्रसिद्धि कैसे दे सकता हूं? अुनकी प्रकाशमान आत्माकी तुलनामें मैं कुछ भी नहीं हूं। फिर किसी भी सच्चे महापुरुषको बनाना नहीं पड़ता। ये लोग तो अपने गौरवसे ही बड़े होते हैं और जब संसार तैयार होता है तब वे स्वयं अपनी महानताके बल पर प्रसिद्ध हो जाते हैं। जब समय आयेगा तब लोग गांधीजीको जान लेंगे क्योंकि संसारको अुनकी और अुनके प्रेम स्वातंत्र्य और भ्रातृभावके सन्देशकी जरूरत है।

पूर्वकी आत्माको गांधीके रूपमें अेक योग्य प्रतीक मिल गया है क्योंकि वे अत्यन्त प्रभावशाली ढंगसे यह प्रमाणित कर रहे हैं कि मनुष्य वास्तवमें अेक आध्यात्मिक प्राणी है यह नैतिक और आध्यात्मिक जगतमें अलग रूपमें फलता-फूलता है और घृणा तथा युद्धके वातावरणमें आत्मा और शरीर दोनोंका साथ निश्चित रूपमें नष्ट हो जाता है।"

जब कवि १९३० में अन्तिम बार अमरीका गये तब अुन्होंने भी लगभग यह कहा था

महात्मा गांधी अलौकिक पुरुष हैं। वे बहुत बड़े पैमाने पर अुन आदर्शों पर निःशस्त्र प्रयोग कर रहे हैं जिनका अुपदेश बुद्ध

बीसा और महात्मा जैसे पैगम्बरोंने दिया था। गांधीजीने संसार भरमें जिस प्रचण्ड आध्यात्मिकता को फैला दिया है, उसकी कद्र करनेके लिये वे जो कुछ कहते और करते हैं उस सबसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। आज वे संसारके सबसे बड़े आदमी हैं। उनके पास अत्यंत मूल्यवान आंतरिक निधियां हैं।

१४७ गांधी रोमां रोलांकी भेंट

महात्मा गांधी दिसम्बर १९३१ में महान फ्रांसीसी विद्वान रोमां रोलांसे उनके घर पर विलेन्यू स्विट्जरलैण्डमें मिलने गये थे। इस घटनाके बारेमें रोमां रोलांने अपने अेक अमरीकी मित्रको यों लिखा था

भारतीय मेहमानोंके आगमनके दिनोंमें आप यहां होते तो मुझे कितना अच्छा लगता! वे विला वियोनेतेमें ५ से ११ दिसम्बर तक पांच दिन ठहरे। गांधीका कद छोटा है और मुंहमें दांत नहीं हैं। उनकी आंखों पर चश्मा था और शरीरको उन्होंने अपनी सफेद शालसे लपेट रखा था मगर उनकी सारसकी-सी पतली टांगें खुली हुई थीं। उनका सिर, जिस पर छोटे-छोटे थोड़ेसे ही बाल रह गये हैं, मुंडा हुआ और मेंहसे भीगा हुआ था। वे मेरे पास खुली-सी हंसी हंसते हुए आये। उनका मुंह ऐसा खुला हुआ था जैसे कोई प्यारा कुत्ता हांफ रहा हो। मेरे गलेमें हाथ डालकर उन्होंने अपना गाल मेरे कंधे पर झुका दिया। मैंने उनका सफेद बालोंवाला सिर मेरे गालसे लगा हुआ अनुभव किया। मुझे मन ही मन ऐसा लगा कि यह सन्त डोमिनिक और सन्त फ्रांसिसका चुम्बन था।

उनके बाद मीरा (कुमारी स्लेड) आयी। उनका शरीर ऊंचा-पूरा और चाल डिमीटर जैसी शानदार थी। अन्तमें तीन भारतीय और आये। उनमें से अेक गांधीका छोटा लड़का देवदास था, जिसका मुंह गोल और प्रसन्न था। वह सुशील है, मगर अपने नामकी महानताका उसे भान नहीं है। दूसरे दो गांधीके मंत्री — शिष्य — थे। इन दोनों नौजवानोंमें हृदय और बुद्धिके अनूठे गुण हैं। ये थे महादेव देसाई और प्यारेलाल।

चूंकि कुछ ही दिन पहले मेरी छातीमें सख्त सर्दीका असर हो चुका था अिसलिअे गांधी मेरे ही मकान पर विला ओल्गामें दूसरी मंजिल पर, जिस कमरेमें मैं सोता हूं वहां आकर रहे। वे रोज सुबह आ जाते थे और काफी लम्बी बातचीत हुआ करती थी। मेरी बहन मीराकी सहायतासे दुभाषियेका काम करती थी और मेरी अेक रूसी मित्र और मंत्री कुमारी कोम्बाचेव्स् हमारी चर्चाओंके नोट लेती थी। माड्रियोनाके हमारे पड़ोसी स्लीमरने कुछ अच्छे फोटो लेकर हमारी मुलाकातका दृश्य अंकित किया।

शामको सात बजे पहली मंजिलवाले बड़े कमरेमें प्रार्थना होती थी। रोशनी धीमी कर दी जाती थी। भारतीय मेहमान नीचे कालीन पर बैठते थे और श्रद्धालुओंका छोटासा समूह अुनके चारों ओर बैठ जाता था। प्रार्थनामें तीन सुन्दर पाठ होते थे — पहला गीताका अेक अंश दूसरा कुछ चुने हुअे पुराने संस्कृत श्लोक जिनका गांधीने अनुवाद किया है और तीसरा राम और सीता पर अेक भजन (धुन) जिसे मीरा अपनी प्रेम और आशीर्वाद भरी वाणीमें गाती थी।

गांधी दूसरी प्रार्थना प्रातःकाल तीन बजे करते थे। जिसके लिअे वे अपने हारे-थके साथियोंको जगाया करते थे। हालांकि वे खुद अेक बजे तक नहीं सोते थे। यह छोटासा आदमी दीखनेमें जितना कमजोर है परन्तु कभी थकता नहीं। थकान शब्द जैसा है या अुसके शब्दकोशमें ही नहीं है। यह बीसके अटपटे प्रश्नोंका चेहरे पर जरा भी शिकन लाये बिना घंटों तक शान्तिसे अुत्तर दे सकते हैं जैसा अुन्होंने लोसान और जिनेवामें किया। अेक मेज पर निश्चल बैठे हुअे अपनी आवाजको जरा साफ और शान्त रखकर अुन्होंने अपने खुले या छिपे विरोधियोंको — जिनकी जिनेवामें कमी नहीं थी — ऐसे जवाब दिये और ऐसी खरी-खरी सुनाअी कि अुनकी जबान बन्द हो गअी और वे घबरा गये।

रोमके बूर्जुआ नागरिक और शस्त्रधारी जिन्होंने अुनका पहले छद्मपूर्ण कृत्रिम स्वागत किया था जब वे रवाना हुअे तब अुनसे खफा रहे थे। मेरा विश्वास है कि यदि गांधी यहां कुछ दिन और ठहरते तो सार्वजनिक सत्याग्रही जमात खड़ी कर दी जाती। अुन्होंने राष्ट्रीय नेताओं

और पूंजी तथा श्रमके संघर्षके दोहरे प्रश्नों पर अपने अनुसार स्पष्ट भाषामें प्रगट किये । अुन्हें किस दूसरे मार्ग पर अग्रसर करनेमें कहीं हद तक मैं जिम्मेदार था।

अुनका विभाग अेकके बाद अेक प्रयोग करके कर्ममें अग्रसर होता है और वे सीधी रेखा पर चलते हैं परन्तु वे रुकते कभी नहीं। यह साल पहले अुन्होंने जो कुछ कहा था अुसके आधार पर अुनके बारेमें निर्णय किया जाय तो अुसमें भूल होनेका अंदेशा रहेगा क्योंकि अुनके विचारोंमें सतत क्रान्ति होती रहती है। मैं जिसका अेक छोटासा अुदाहरण दूंगा जो अुनकी जिस विशेषताको अच्छी तरह प्रगट करता है।

लोज़ानमें अुनसे जिस बातको स्पष्ट करनेके लिये कहा गया कि अीश्वरसे वे क्या समझते हैं। अुन्होंने समझाया कि हिन्दू धर्मशास्त्रोंमें अीश्वरके जो अुच्चतम नाम बताये गये हैं अुनमें से अुन्होंने मूल तत्त्वकी सच्चीसे सच्ची व्याख्या करनेके लिये अपनी युवावस्थामें सत्य सत्यको ही चुना था। अुस समय अुन्होंने कहा था अीश्वर सत्य है। परन्तु अुन्होंने कहा दो वर्ष हुअे मैं अेक कदम और आगे बढ़ा हूं। मैं अब कहता हूं कि सत्य ही अीश्वर है । क्योंकि नास्तिक भी सत्यकी शक्तिकी जरूरतके बारेमें शंका नहीं करते। अपनी सत्य-संशोधनकी लगनमें नास्तिकोंने अीश्वरके अस्तित्वको अस्वीकार करनेमें संकोच नहीं किया है और अपने दृष्टिबिन्दुसे वे ठीक भी हैं। आप जिस अेक ही लक्षणसे समझ लेंगे कि पूर्वके जिस धार्मिक पुरुषमें कितना साहस और कितनी स्वाधीनता है। मैंने अुनमें विवेकानन्द जैसे लक्षण पाये हैं। फिर भी कोअी राजनीतिक चाल अैसी नहीं जिसके लिये वे तैयार न रहते हों। और अुनकी अपनी राजनीति तो यह है कि वे जो भी विचार करते हैं वह सब हरअेकसे कह देते हैं कोअी बात छिपाते नहीं।

कल शामकी प्रार्थनाके बाद गांधीने मुझसे कहा कि मुझे थोड़ा बीथोवन बजा कर सुनाअिये। बीथोवनका अुन्हें कोअी ज्ञान नहीं है परन्तु अुन्हें मालूम है कि बीथोवन मीरा और मेरे बीच मध्यस्थ रहा है जिसलिये मीरा और अुनके बीच भी रहा है और जिसलिये अन्तमें तो हम सभीको बीथोवनका ऋणी होना चाहिये। मैंने अुन्हें

पांचवें सप्तकका आरोह बजाकर सुनाया। अिसके अलावा लकका के चैम्स बेलीशीप भी बजाकर सुनाया — जो समूह-संगीतके लिये अेक पुष्ठ और बासुरीके लिये धुन है।

अुन पर अपने देशके धार्मिक भजनोंका बड़ा असर होता है। वे हमारी ग्रेगोरियन धुनोंमें से कुछ सुन्दरतम धुनोंसे कुछ कुछ मिलते हैं और अुनका संग्रह करनेके लिये अुन्होंने परिश्रम किया है। हमने कला पर भी विचार-विनिमय किया। कलाको वे अपनी सत्यकी कल्पनासे भिन्न नहीं मानते और न आनन्दकी कल्पनाको अपनी सत्यकी कल्पनासे भिन्न समझते हैं। अुनके खयालमें सत्यसे आनन्दका अनुभव होना ही चाहिये। परन्तु अिस मान्यतासे यह परिणाम अपने-आप निकलता है कि जैसे क्रूर स्वभावके लिये आनन्द प्रयत्नके बिना प्राप्त नहीं होता और न स्वयं जीवन कष्टके बिना संभव होता। सत्य-शोधकका हृदय कमल-सा कोमल और वज्र-सा कठोर होता है।

मेरे प्यारे मित्र ये हैं हमारे सहवासके अुन दिनोंकी थोड़ीसी झांकियां जिनके मैंने कहीं अधिक विस्तृत नोट लिये हैं। मैं आपको अिस बातका तो वर्णन ही नहीं लिख रहा हूं कि अिस आश्रमसे हमारी दोनों कुटीरों पर किस प्रकार बिना बुलाये आवारा और जल्दी लोगोंका तांता बंध गया था। नहीं नहीं टेलीफोनकी घंटी तो कभी बन्द ही नहीं होती थी और फोटोग्राफरोंके हमले हरअेक झाड़ीके पीछेसे होते थे। श्रीमानके गोपालक-संघने मुझे सूचना दी कि आपके यहां भारतके राजा के संपूर्ण निवास-कालमें अुनके भोजन की तमाम जिम्मेदारी लेनेका हमारा अिरादा है। हमें शौकदार-गुर्गों के पत्र मिले। कुछ चिट्ठी-वालोंने महात्माको पत्र लिख कर प्रार्थना की कि आप अपनी अगली साप्ताहिक राष्ट्रीय लॉटरीके १ भाग्यशाली नंबर हमें बताअिये!

मेरी बहन जिसका तो रह गयी मगर वह स्विट्जरलैंडके अेक आरोग्य भवनमें दस दिन आराम लेने गयी है। वह जल्दी ही लौट आयेगी। मेरा यह हाल है कि मैं नींदकी नियामतसे बिलकुल वंचित हो गया हूं। अगर आपको वहींसे मिल जाय तो रजिस्ट्री करके डाकसे मेरे पास भेज दें!

— रि रोलां न्यूवॉर्क

१४८. पत्रकार 'पुत्र' को फटकार

अेक बार अैसा प्रसंग आया जिसने गांधीजीको बहुत क्षुब्ध कर दिया और उन्हें अेक सम्पादकको आड़े हाथों लेनेके लिअे बाध्य कर दिया। बात यों हुआी कि श्री अेस. सदानन्द द्वारा सम्पादित फ्री प्रेस जर्नल ने अपने १२ जुलाअी १९४४ के अंकमें कांग्रेस-लीग समझौते के लिअे श्री सी. राजगोपालाचार्य द्वारा श्री अेम. अे. जिन्नाके सामने पेश किये गये नये प्रस्तावके सम्बन्धमें यह लिखा था कि श्री राजगोपालाचार्य और गांधीजीके आसपासके अन्य लोगोंने गांधीजीको गुमराह कर दिया। गांधीजीने खानगी तौर पर अिस निराधार आक्षेपके लिअे सम्पादकको उलाहना दिया और सम्पादकने गांधीजीसे अेक प्रकारकी क्षमा-याचना कर ली। परन्तु मालूम होता है कि अिससे गांधीजीका समाधान नहीं हुआ क्योंकि उन्होंने १३ जुलाअीको श्री सदानन्दको अिस प्रकार लिखा

दिलखुश, पंचगनी
१३-७-१९४४

प्रिय सदानन्द,

तुम्हारा तार मिला। यद्यपि वह उत्तर तुम्हें अेक पत्रकारकी हैसियतसे और प्रकाशनके लिअे दिया जा रहा है फिर भी मेरे जवाबका तरीका अिस आधार पर होगा कि तुम मेरे पुत्र होनेका दावा करते हो। यह दावा तुम कअी बार दोहरा चुके हो।

तुमने मेरे सुधार मुंहसे तो स्वीकार कर लिये हैं मगर लिखतमें उन्हें अस्वीकार कर दिया है। अपने तारके शुरूके हिस्से फिर पढ़ो तो मेरा मतलब तुम्हारी समझमें आ जायगा। समझमें आ जाय तो मैं चाहूंगा कि सुधार स्वीकार करनेकी लिखतमें भी तुमने मेरे प्रति जो अपराध किया है उसे तुम सार्वजनिक रूपमें स्वीकार करो।

तुम्हारे व्यवहारसे ठीक उलटा और सुन्दर व्यवहार उन चार संवाददाताओंका है जिनसे मैं कल मिला था। उनका व्यवहार

जितना मुधार था कि मुन्होंने मेरे सुधार स्वीकार कर लिये और मुनके फलितार्थोंको पूरी तरह समझ लिया।

तुमने मुझसे जो प्रश्न पूछे हैं मुनमें से अेक अेकका मेरे पास स्पष्ट मुत्तर है। परन्तु मुझे बहुत अंदेशा है कि वे प्रामाणिक नहीं हैं बल्कि मुनका हेतु तुम्हारी बहादुरीका विज्ञापन और अनुचित प्रकारका अखबारी प्रचार करना है।

१२-७-'४४ के अंकमें तुम्हारे लेख पढ़ कर मुझे बड़ी पीड़ा हुआी है। मुनमें राजाजी पर द्वेषभावपूर्ण और दूसरे प्रतिष्ठित सार्वजनिक पुरुषों पर मुसकी अपेक्षा कुछ हलका हमला करनेवाले शीर्षक दिये गये हैं। राजाजी पर आक्रमण करके तुम अपने प्रति बड़ा अन्याय कर रहे हो और अपने राष्ट्रवादको कलंकित कर रहे हो। जहां तक म जानता हूं, राजाजीका कोओी स्वार्थ नहीं। मुन्होंने अपने देशप्रेमके लिये सब कुछ त्याग किया है और अपनी अन्तरात्माके आदेशका पालन करनेमें लोकप्रियताको जोखिममें डाल दिया है। मैं तुम्हें बता दूं कि राजाजीने अपनी राजनीतिकी मुझसे चर्चा नहीं की है। मुनकी राजनीतिसे जैसा मैंने लेखमें समझा है, मेरा मतभेद बना हुआ है।

अब चूंकि मैं अनिच्छापूर्वक और समयसे पहले राजनीतिक विवादमें घसीट लिया गया हूं, जिसलिये मैं मुनसे जिन सब बातोंकी चर्चा विस्तृत राजनीतिक मतभेद होते हुए भी आदरके साथ अवश्य करूंगा जैसी कि अभी भी कर रहा हूं।

विरोधियोंके प्रति शिष्टता और मुनका दृष्टिकोण समझनेकी मुत्सुकता अहिंसाका क-ख-ग है। परन्तु और किसीको नहीं तो तुम्हें तो मालूम होना चाहिये कि मैंने जिस सीधे और तंग रास्तेसे चलना पसन्द किया है मुससे वे दृष्टिकोण मुझे हटा नहीं सकते। वे मुझे मुनका अनुसरण करनेके अपने संकल्पमें मजबूत ही बना सकते हैं कमजोर हरगिज नहीं।

और अगर मैं राजाजी जैसे प्रमुख नेताओं या जिन-दलके साथियोंसे गुमराह किया जा सकूं, तो मैं नेता या अहिंसाके प्रतिपादकके नाते सर्वथा अयोग्य ठहरूंगा।

मि॰ गेल्डरने जो प्रामाणिक भूल की थी कि मुलाकातोंके निश्चित नोट समयसे पहले प्रकाशित कर देनेके कारण अुनसे हुअी मालूम होती है वह अेक प्रकारसे नियामत है। क्योंकि अिससे देशको यह जाननेका अेक बार फिर मौका मिल गया कि मेरे स्वभावमें समझौता करनेकी वृत्ति कितनी है। मुझे अुस पर लज्जित होनेका कोअी कारण नहीं है और मैंने अिसे कभी कमजोरीका चिह्न नहीं समझा बल्कि ताकतकी निशानी ही माना है।

अगर तुम मेरे योग्य पुत्र साबित होना चाहते हो तो तुम अपनी सारी नीति बदल दोगे और अपनी पत्रकार-कलाको अिस प्रकार काममें लाओगे जिससे देशकी सत्य और अहिंसाके मार्गसे सेवा हो।

अपने पत्रकारके धंधेसे तुम्हें काफी भौतिक संपत्ति प्राप्त हुअी है। अब जरूरत हो तो गरीब बननेका साहस करो और जनताको सनसनीदार खुराक देनेके बजाय अुन्हें ठोस सोनेके सिवा कुछ न दो। और अगर तुम्हें यह काम नहीं आता हो तो कोअी नया धंधा अपना लो। तब तुम्हें कमसे कम यह तो श्रेय रहेगा कि तुमने हानि करना बन्द कर दिया है।

मुझे आशा है कि अिसे तुम फेरबदल किये बिना प्रकाशित करोगे।

शुभाकांक्षी
मो॰ क॰ गांधी

१४ जुलाअीको पंचगनीमें महात्मा गांधीको यह तार भेजा गया

आपका पत्र मिला। सदानन्द अिस समय दिल्लीमें हैं। अधिकसे अधिक मंगलवारको लौटेंगे। तब ध्यान देंगे।—श्री अमल

गांधीजीने अुत्तर दिया

दिलखुश पंचगनी
१५-७-४४

प्रिय स्वामिनाथन संपादकजी

आपका तार मिला। श्री सदानन्दको लिखा मेरा पत्र अेक खास अधिक महत्त्वका सार्वजनिक अुत्तर है और वह प्रकाशनके लिये है। ठीक

बात तो यह थी कि मेरे विरुद्ध शिकायत छापनेसे पहले मेरे अुत्तरकी प्रतीक्षा की जाती। देर होनेसे मुझे शंका हो रही है।

अगर श्री सदानन्द बाहर हैं और मामूली बातमें आदेश जरूरी समझा जाता हो तो आपके पास फोन से आदेश लेनेके साधन हैं।

मंगलाकांक्षी

मो० क० गांधी

अन्तमें श्री सदानन्दके नामका गांधीजीका पत्र फ्री प्रेस जर्नल के १९ जुलाअी १९४४ के अंकमें प्रकाशित हुआ। साथमें श्री सदानन्दका नीचे लिखा स्पष्टीकरण भी प्रकाशित हुआ

बम्बअी १८ जुलाअी १९४४

मेरे नाम गांधीजीका ११ जुलाअीका पत्र १४ जुलाअीका गांधीजीके नाम भेजा तार और १५ जुलाअीका गांधीजीका अुत्तर अिस अंकमें प्रकाशित किये जा रहे हैं।

चूंकि मैं आज (१८ तारीखको) तीसरे पहर ही दिल्लीसे लौटा हूं अिसलिये अिससे पहले अिनका प्रकाशन नहीं हो सका।

गांधीजीने अपने प्रति मेरी पुत्रोचित वफादारीकी याद दिलाकर मेरी हिम्मत बढ़ाअी है। मैं आज भी अुस वफादारीमें सच्चा होनेका दावा करता हूं।

यह महात्माजी जानते हैं कि मेरी कल्पनाके अनुसार पुत्र पिताकी भी बुरी सजासे आत्मरक्षा नहीं कर सकता।

मैं अिस सुवर्ण नियमको अिस अवसर पर भंग करनेका कोअी कारण नहीं पाता।

येस सदानन्द

या सामान आया और शामको श्री हरिभाबू फाटक और बालकाका कानिटकर आ पहुंचे। ये दोनों भाओी चरखेमें विश्वास रखनेवाले माने जाते हैं जिसलिअे गांधीजीने अुनसे कहा मैं अभी तक क्ये दुःखे आघातके असरसे मुक्त नहीं हुआ हूं। बालकाकासे मुझे चार निराशा हुओी है। तुम तो चरखेकी शपथ खाया करते थे क्या चरखेमें तुम्हारी नहीं श्रद्धा है?

बालकाकाने कहा परन्तु मैंने आपसे नहीं कहा था कि कौंसिलका कार्यक्रम रचनात्मक कार्यक्रमको अवश्य नष्ट कर देगा?

यह असंगत बात है। जिसका तुम्हारी खादी और कताओीकी श्रद्धासे क्या सम्बन्ध? अुसे तो तुमने असंख्य बार दोहराया है। दृढ़ विश्वास जिसीलिअे होते हैं कि अुनके लिअे हम जियें और मरें और अुन पर अमल तो जरूर ही करें। मगर यह दृढ़ विश्वास जिस पर कुछ भी अमल न हो निरर्थक है। यह सत्यकी पीठमें छुरा भोंकना है।

जिन शब्दोंके बारेमें कोओी गलतफहमी नहीं हुओी। श्री हरिभाबू बोले आपने हमें जो फटकारें लगाओी हैं हम अुनके पात्र हैं। हमने फिरसे नया जीवन जीनेका निश्चय कर लिया है।

गांधीजीने कहा "परन्तु जिस दुःखद घटना पर मैंने जो आराम छोड़ना भी है अुसका तुम्हें पता नहीं है। अगर हमें अपने दृढ़ विश्वासकी जितनी कम परवाह हो तो हमें स्वराज्य कैसे मिल सकता है? अब तुम कहते हो कि सुधार करोगे। यह ठीक है। भूल करना मनुष्यका काम है और अुसे सुधारना भी अुसीका काम है। परन्तु यह जानकर भी कि हम भूल कर रहे हैं अुसे न सुधारना मनुष्यताका पतन है। कारण पशु भूल नहीं करता। परन्तु मनुष्यताका पतन शब्द ठीक नहीं। भूल करना मानवता है भूल न करना देवत्व है। भूल-सुधार करना मानवता है परन्तु भूल-सुधार न करना राक्षसीपन है। यह ठीक शब्द है। और अगर तुम भूलको सुधार लोगे तो सब कुछ ठीक हो जायगा। परन्तु दृढ़ विश्वासके बिना कुछ न करना। वह दृढ़ विश्वास तुम्हारा अपना होना चाहिये मुझसे सुधार लिया हुआ नहीं।

सत्यकी पीठमें छुरा — ये शब्द हमारे दिलोंमें भालेके नश्तरकी तरह घुस गये। मैं पुलिसिया मुंहसे नहीं मांगता जिनका काशी या काबेमें विश्वास नहीं। माननीय श्रीनिवास शास्त्री और म यहूदे मित्र हैं मगर मुनके सामने मैं बरबा शब्द तकका कभी मुच्चारन नहीं करता। कारण मुनका मिसमें विश्वास नहीं। जो लोग मिसमें विश्वास नहीं रखते और मिसकी निन्दा करते हैं मुनकी मैं मिज्जत करता हूं। परन्तु तुम्हारा मिसमें विश्वास है और तुम अपने जीवनमें प्रतिदिन असत्याचरण करते हो। यही सत्यकी पीठमें छुरा भोंकना है — जिससे बड़ा कोओ पाप नहीं।"

१५० अखबारी सदाचारके पाठ

[सैयद बार के प्रभु]

अनेक अकल्पित परिस्थितियोंके मिल जानेसे १९१८ के वर्षके अन्तमें मुझे यंग अिंडिया के सम्पादनका भार संभालना पड़ा था। यह साप्ताहिक पत्र थोड़े दिन बादसे ही वर्षों तक भारतीय अितिहासके घटनाक्रम पर अत्यंत गहरा प्रभाव डालनेवाला था। मुस समय यह पत्र बॉम्बे क्रॉनिकल छापेखानेमें छपता था और जमनादास द्वारकादास मुसके घोषित सम्पादक थे। मुन्होंने मेरे सामने प्रस्ताव रखा कि मैं पत्रके सम्पादनका कामकाज देखूं और मैंने मुसे मंजूर कर लिया था। मेरे काम संभालनेके बाद मुश्किलसे तीन महीने बीते थे कि बॉम्बे क्रॉनिकल के सम्पादक हार्निमैनको बम्बअीसे अपनी रोगशय्यासे अचानक मुठाकर अिंग्लैण्ड भेज दिया गया और बॉम्बे क्रॉनिकल और मुसके छापेखाने पर सरकारी सेंसर बिठा दिया गया। नतीजा यह हुआ कि यंग अिंडिया के संचालक-मंडलको मजबूर होकर पत्रका प्रकाशन स्थगित करना पड़ा।

यह फरवरी १९१ की बात है। जब दो सप्ताह बाद सेंसर खतम हुआ और बॉम्बे क्रॉनिकल प्रेस फिरसे साधारण रूपमें काम करने लगा तो बॉम्बे क्रॉनिकल और यंग अिंडिया दोनोंके संचालकोंकी तरफसे

गांधीजीके सामने प्रस्ताव रखा गया कि वे जिन पत्रोंको अपने हाथमें ले लें। गांधीजीने कौंसिलके वाला प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया परन्तु यंग जिंडिया का स्वीकार कर लिया बशर्ते कि अुन्हें पत्रके प्रकाशनका स्थान बम्बअीसे बदलकर अहमदाबाद ले जानेकी स्वतंत्रता हो। जब यंग जिंडिया के नियंत्रणको बदलनेकी बातचीत पूरी हुअी तो मुझ गांधीजीसे मिलनेको कहा गया ताकि मैं अपना काम अुन्हें समझा दूं और पत्रके सम्पादनके बारेमें अुन्हें किसी भी जानकारीकी जरूरत हो तो अुन्हें दे दूं।

जिस समय गांधीजी मणिभवन गामदेवीमें रेवाशंकरभाअी झवेरीके मेहमान बनकर ठहरे हुअे थे। अपने अेक पत्रकार साथीको साथ लेकर मैं वहांके लिये चला। ये भाअी यंग जिंडिया में नियमित रूपसे लिखते थे। मेरा हमेशासे यह खयाल था कि मेरे जिन साथीको मेरी अपेक्षा अंग्रेजी शब्द-भंडार और मुहावरे पर अधिक प्रभुत्व प्राप्त है और मुझे अुनकी प्रतिभा पर अीर्ष्या होती थी। मणिभवन पहुंचकर हमने गांधीजीको अपना परिचय दिया। यंग जिंडिया के पिछले अंककी अेक प्रति मैंने गांधीजीके हाथमें दी। अुसके सम्पादकीय स्तंभों पर दृष्टिपात करके गांधीजीने यह जानना चाहा कि अुसके अेक विशेष लेखका लेखक कौन है। मुझे याद है कि वह लॉयड जॉर्जके भारत-सम्बन्धी गोलमोल वाक्योंमें से अेककी तीव्र आलोचना थी। मैंने गांधीजीसे कहा कि वह लेख मैंने लिखा है। अेक दूसरे लेखकी तरफ अिशारा करके गांधीजीने पूछा कि यह किसका लिखा हुआ है? मेरे साथीने कहा मेरा लिखा हुआ है।

थोड़ी देर ठहर कर गांधीजी बोले मुझे पहला लेख पसन्द है मगर दूसरा बिलकुल पसन्द नहीं। पहलेमें आपको जो कुछ कहना था सो सब आपने सीधे ढंगसे कह दिया है जब कि दूसरे लेखके लेखकने तरह तरहके व्यंग्यपूर्ण आक्षेपोंका आश्रय लिया है और अैसी बातें कही हैं जो सचमुच वह कहना नहीं चाहता। गांधीजीने मेरे साथीकी ओर देखते हुअे कहा अुदाहरणार्थ आप लिखते हैं हमें भय है अित्यादि अित्यादि। मुझे यह भाषा बिलकुल पसन्द नहीं। यदि आप सचमुच पाठकको यह विश्वास कराना नहीं चाहते कि आपको भय है — आपका

अिससे ठीक अुलटा अर्थ है। क्या यह बात नहीं है? जब आप कोअी बात कहना चाहते हैं गोलमोल बातें मत कहिये कठोर बातको नरम शब्दोंमें कहना या चुटकियां लेना आदि न कीजिये बल्कि सीधे साफ ढंगसे कहिये।

संभव है कि ये ठीक वही शब्द न हों जो गांधीजीने कहे थे मगर जहां तक मुझे याद है वे अिसी आशयके थे। बेशक जब हमें पत्रकारिताके सदाचार पर यह छोटासा अुपदेश दिया गया तब मेरा साथी और मैं दोनों चुपचाप सुनते रहे। थोड़ी देर बाद जब मेरे साथी चले गये तो गांधीजीने यंग अिण्डिया का वह पृष्ठ देखकर, जिसमें संक्षिप्त समाचार दिये गये थे मुझसे पूछा कि ये खबरें किसने अिकट्ठी की हैं। यह कहे जाने पर कि अुनके लिये मैं जिम्मेदार हूं अुन्होंने पूछा कि आपने ये खबरें कहांसे ली हैं? मैंने कहा कि यंग अिण्डिया और 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के बदलेमें जो भिन्न भिन्न भारतीय पत्र आते हैं अुनके ताजे अंकोंसे काटकर ली गयी हैं।

अुन्होंने पूछा "अिन खबरोंको जमा करनेमें आप कितना समय खर्च करते हैं?"

मैंने अुत्तर दिया कि अिस पृष्ठके लिये जितनी खबरें चाहिये अुन्हें छांटने और चिपकानेमें मुझे आधे घंटेसे ज्यादा शायद ही लगता है।

अुन्होंने आश्चर्यके साथ कहा आप अिन पर सिर्फ आधा घंटा खर्च करते हैं? अुन्होंने यह भी कहा जब मैं दक्षिण अफ्रीकामें अिण्डियन ओपिनियन का सम्पादन करता था तो हमें परिवर्तनमें कोअी दो सौ पत्र मिलते थे और सप्ताह भरमें मैं अुन सबको सावधानीसे पढ़ लेता था और प्रत्येक समाचारको तभी लेता था जब मुझे तसल्ली हो जाती कि अिसमें सचमुच जानकारी भरी होगी। जब कोअी सम्पादककी जिम्मेदारी लेता है तो अुसे अपना दायित्व पूरी कर्तव्य-भावनासे पूरा करना चाहिये। अिसी पद्धतिसे पत्रकारका धंधा चलाना चाहिए। क्या आप अिससे सहमत नहीं हैं?

लज्जित होकर मैंने कहा जी हां। बादमें मैंने अपनी सफाअी देते हुअे गांधीजीसे कहा कि 'क्रॉनिकल' के सम्पादकीय विभागमें मेरा

कार्यकर्ताके नाते मुझे सप्ताह भर बहुत काम रहता था अिसलिये यंग अिंडिया के लिये मुझे जल्दी जल्दीमें काम करना पड़ता था। होता यह था कि अिस पत्रके लिये मेरा अधिकांश कार्य अिसमें सम्पादकीय लेखोंका लिखना भी शामिल था अेक दिनके तीसरे पहरसे ज्यादा वक्त नहीं लेता था।

फिर अुन्होंने अेकदम पूछा — और अिस सबका आपको पुरस्कार क्या दिया जाता है?

मैंने अुत्तर दिया कि मुझे प्रति कालम दस रुपयेके हिसाबसे मिलता है। यहां यह बता देना चाहिये कि अेक कालम मुश्किलसे १ अिंच लम्बा होता था और वह भी मोटे मोटे दस पाअिण्टके टाअिपमें। अिस प्रकार यंग अिंडिया से मेरी कमाअी सौ और डेढ़ सौ रुपयेके आसपास रहती थी।

कुछ कठोर प्रश्नकर्ताने मुझ पर दूसरे प्रश्नकी गोली छोड़ी — "कौंसिल के कार्यकर्ताकी हैसियतसे आपको क्या मिलता है?

मैंने अुत्तर दिया — चार सौ रुपये मासिक।

कुछ देर ठहरकर, जो मुझे अनन्त काल जैसी प्रतीत हुअी गांधीजी बोले — क्या आपके खयालमें यंग अिंडिया से आप जो रकम ले रहे हैं अुसका लेना अुचित है? आप जानते हैं कि वह पत्र कोअी कमाअीका साधन नहीं है। वह देशभक्तिका काम है और मेरे खयालमें वह स्वावलम्बी भी नहीं है। क्या अुसके संचालकोंका भार बढ़ाना आपके लिये ठीक है?

मैंने अुत्तर दिया कि पत्र-संचालक मुझे जो कुछ देते हैं अुसके लिये मैंने अुन्हें मजबूर नहीं किया। मैंने कहा कि जमनादास द्वारकादास जैसे मुझे देते हैं वैसे ही वे यंग अिंडिया के लिये लिखनेवाले सभीको अुदारतापूर्वक पुरस्कार देते हैं। यह सब वे स्वेच्छापूर्वक करते हैं। मैंने अपने पुरस्कारके लिये कोअी शर्त नहीं की थी।

गांधीजी बोले — फिर भी अगर मैं आपकी जगह होता तो यंग अिंडिया से अेक पाअी भी न लेता। अुन्होंने यह भी कहा — आपको अपने पूरे समयके कामके लिये कौंसिल कार्यालयसे अच्छा वेतन

ओेक बीमार बच्चेके पिताके नाम

प्रिय मित्र

कष्टोंसे पीड़ित छह महीनेके शिशुके लिअे मैं क्या नुसखा बता सकता हूँ? अीश्वरसे प्रार्थना करनेके सिवा कोअी नुसखा नहीं है। मेरी दृष्टिमें कोअी भी दवा अविचारणीय है। आप बच्चेवाले अवयवोंको हलकी मालिश करें, बच्चेको धूपमें रखें और दूध और फलोंके रसके सिवा कुछ न दें। अीश्वरने चाहा तो वह अच्छा हो जायगा। अच्छा न हो तो आपको साहस करके अुसका वियोग सहन कर लेना चाहिये।

जो देता है वह छीन भी सकता है।

आपका

मो० क० गांधी

मृतकोंके प्रति जीवितोंका धर्म

[पारसी धर्मगुरु दस्तूर कुर्संटजी पावरीकी मृत्यु पर शोक प्रगट करते हुअे अुनके पुत्र डॉ० जाल पावरी और कुमारी आयमी पावरीको]

जो परलोक सिधार गया है अुसके लिअे अत्यधिक शोक नहीं करना चाहिये, क्योंकि जानेवाला तो आत्माके रूपमें सदा जीवित है, परन्तु पीछे रहनेवाले हम लोगोंको मानव जातिकी सेवामें मरनेके लिअे जीना चाहिये।

जानेवालेकी आत्माको सुख पहुँचानेका अेकमात्र अुपाय यह है कि अुसके सबसे प्रिय स्वप्नको चरितार्थ किया जाय, क्योंकि जानेवालेकी आत्मा तो सदा हमारे साथ विद्यमान रहती है, जीवितोंका निश्चित रूपसे बल पहुँचाती है। केवल अिसी प्रकार पीछेवाले अपनेको अुस पवित्र अुत्तराधिकारके योग्य सिद्ध करेंगे और अिसी तरह जानेवालेकी आत्माको प्रसन्नता होगी।

(अिनमें से अन्तिम पत्र गुजरातीमें लिखे बिना तारीखके समाप्त होता है मो० क० गांधीका आशीर्वाद।)

अेडोल्फ हिटलरके नाम

प्रिय मित्र

आपको मित्र सम्बोधन करके लिखना केवल मेरा शिष्टाचार नहीं है। मेरे कोअी शत्रु है ही नहीं। पिछले ३३ वर्षोंसे मेरा जीवन-कार्य ही यह रहा है कि सारी मानव-जातिको अपना मित्र बनाअूं। जिसके लिअे मैंने जाति रंग या धर्मका भेदभाव रखे बिना मनुष्यमात्रका मित्र बननेकी कोशिश की है।

मैं आशा करता हूं कि आपको जितना जाननेका समय और अिच्छा होगी कि मानव जातिका अेक बड़ा भाग जो विश्वव्यापी मित्रताके सिद्धान्तके असरमें रहा है आपके कार्योंको किस नजरसे देखता है। हमें आपके शौर्य या देशभक्तिमें सन्देह नहीं और न हम यह मानते हैं कि जैसा आपके विरोधी वर्णन करते हैं वैसे आप राक्षस ही हैं। परन्तु आपके अपने तथा आपके मित्रों और प्रशंसकोंके लेखों और भाषणोंसे जिसमें सन्देह करनेकी गुंजाअिश नहीं रह जाती कि आपके अनेक कार्य राक्षसी हैं और मानव-गौरवको शोभा देनेवाले नहीं हैं — खास तौर पर मेरे जैसे आदमियोंकी नजरमें जिनका अखिल मानवीय मित्रतामें विश्वास है। आपका चेकोस्लोवाकियाका अपमान पोलैण्ड पर बलात्कार और डेन्मार्कको हड़प लेना अैसे ही कार्य हैं। मुझे मालूम है कि जीवन सम्बन्धी आपकी दृष्टिमें वे अपहरण पुण्यकार्य माने जाते हैं। परन्तु हमें बचपनसे अैसे कृत्योंको मानवता पतन करनेवाले मानना सिखाया गया है। जिसलिअे हम युद्धमें आपके विजयकी कामना नहीं कर सकते। परन्तु हमारी अजीब स्थिति है। हम नाजीवादसे ब्रिटिश साम्राज्यवादका कम विरोध नहीं करते। अगर कुछ अन्तर है तो वह मात्राका है। मानव जातिके पांचवें हिस्सेको अैसे अुपायोंसे अंग्रेजोंके अधीन बनाया गया है जो जांचमें अधिक नहीं ठहर सकते। जिसका हम जो विरोध कर रहे हैं अुसका अर्थ अंग्रेज जातिको हानि पहुंचाना नहीं है। हम अुनके विचार बदलना चाहते हैं अुन्हें रणक्षेत्रमें पराजित नहीं करेंगे। हम ब्रिटिश शासनके विरुद्ध निःशस्त्र विद्रोह कर रहे हैं। परन्तु हम अुनका हृदय-परिवर्तन करें या न करें हमने निश्चय कर लिया है कि अहिंसात्मक असहयोग द्वारा अुनके

शासनको हम असंभव बना देंगे। यह तरीका ही अैसा है कि जिसमें हार नहीं होती। जिसका आधार यह ज्ञान है कि कोअी भी अत्याचारी अपने शिकारके स्वेच्छापूर्वक या लाचारीसे दिये गये कुछ न कुछ सहयोगके बिना अपना अुद्देश्य पूरा नहीं कर सकता। हमारे शासक हमारी भूमि और हमारे शरीर ले तो ले सकते हैं परन्तु हमारी आत्माओंको नहीं ले सकते। भूमि और शरीर भी वे प्रत्येक भारतीय स्त्री पुरुष और बालकको नष्ट करके ही ले सकते हैं। यह सही है कि सभी अुस हद तक बहादुरी नहीं दिखा सकते और भयका प्रदर्शन काफी मात्रामें होनेसे विद्रोहकी कमर टूट सकती है परन्तु यह दलील असमत होगी। कारण अगर भारतमें अैसे स्त्री-पुरुषोंकी काफी संख्या हो जो अत्याचारियोंके प्रति कुछ भी दुर्भाव न रखकर जिस बातके लिअे तैयार हो जायं कि हम अपने प्राण निछावर कर देंगे परन्तु अुनके सामने गर्दन नहीं झुकायेंगे तो वे हिंसाके अत्याचारसे मुक्त होनेका रास्ता दिखा देंगे। आप मेरी जिस बात पर विश्वास कीजिये कि भारतमें आपको अैसे स्त्री-पुरुषोंकी आशातीत संख्या मिलेगी। अुन्हें पिछले बीस वर्षसे यह तालीम मिल रही है।

पिछली आधी शताब्दीसे हम ब्रिटिश हुकूमतको अुखाड़ फेंकनेकी कोशिश कर रहे हैं। स्वाधीनताका आन्दोलन जितना जोरदार आज है अुतना पहले कभी नहीं था। सबसे शक्तिशाली राजनीतिक संगठन मेरा मतलब भारतकी राष्ट्रीय कांग्रेससे है जिस लक्ष्यकी प्राप्तिका प्रयत्न कर रहा है।

अहिंसक प्रयाससे हमें बहुत बड़ी मात्रामें सफलता मिल चुकी है। ब्रिटिश सत्ता संसारकी सबसे सगठित हिंसाकी प्रतीक है। हम अुसीका मुकाबला करनेके ठीक अुपायकी तलाशमें हैं। आपने अुसे चुनौती दी है। अब यह देखना है कि दोनोंमें अधिक सगठित हिंसा कौनसी है जर्मन या ब्रिटिश।

हम जानते हैं कि हमारे लिअे और दुनियाकी गैर-यूरोपियन जातियोंके लिअे ब्रिटिश पंजेके क्या परिणाम हुअे हैं। परन्तु हम जर्मन सहायतासे ब्रिटिश हुकूमतका खात्मा हरगिज नहीं चाहते। अहिंसाके रूपमें हम अेक अैसा शक्तिका पता लग गया है जो संगठित हो जाय तो संसारकी तमाम अत्यन्त हिंसात्मक शक्तियोंके समूहका निःसन्देह सामना

कर सकती है। अहिंसक कार्यप्रणालीमें जैसा मैं कह चुका हूं हार जैसी कोअी वस्तु नहीं होती। अिसमें तो प्राण लिये अथवा चोट पहुंचाये बिना केवल करना या मरना ही होता है। अिसका प्रयोग लगभग बिना रुपयेके किया जा सकता है और अिस विनाशकारी विज्ञानको आपने जितने ऊंचे दर्जे पर पहुंचा दिया है अुसकी मददके बिना तो स्पष्ट ही किया जा सकता है।

मेरे लिये यह आश्चर्यकी बात है कि आप यह नहीं समझ सकते कि अुस पर किसीका अेकाधिकार नहीं है। अंग्रेज नहीं तो कोअी और ताकत आपके तरीकेमें जरूर तरक्की करेगी और आपको आपके ही हथियारसे हरायेगी। आप अपनी जनताके लिये कोअी अैसी विरासत नहीं छोड़ रहे हैं जिस पर अुसे गर्व हो। निर्दय कृत्योंकी कितनी ही कुशल योजना क्यों न की जाय अुनके दोहरानेमें अुसे गर्व नहीं हो सकता।

अिसलिये मैं आपसे मानवताके नाम पर अपील करता हूं कि लड़ाअी बन्द कर दीजिये। आपके और ग्रेट ब्रिटेनके बीचके झगड़ेके सब मामले दोनोंकी पसन्दके किसी आन्तर-राष्ट्रीय न्यायालयके सुपुर्द कर दिये जायें तो आप कुछ भी घाटेमें नहीं रहेंगे। अगर युद्धमें आपको सफलता मिल भी जाये तो अिससे यह साबित नहीं होगा कि आप ठीक रास्ते पर थे। अुससे अितना ही साबित होगा कि आपकी विनाशक शक्ति अधिक बढ़ी चढ़ी थी। जब कि किसी निष्पक्ष अदालतका निर्णय जहां तक मानवके लिये सम्भव है यह साबित करेगा कि कौन सा पक्ष न्यायपथ पर था।

आप जानते हैं कि कुछ समय पहले मैंने प्रत्येक अंग्रेजसे यह अपील की थी कि वह अहिंसक विरोधका मेरा तरीका अपना ले। मैंने यह अिस लिये किया कि अंग्रेज जानते हैं कि मैं विद्रोही होने पर भी अुनका दोस्त हूं। आपके और आपके यहांके लोगोंके लिये मैं अजनबी हूं। जो अपील मैंने प्रत्येक अंग्रेजसे की थी वही आपसे करनेका मुझे साहस नहीं होता। यह अिसलिये नहीं कि वह जितने जोरके साथ अंग्रेजोंको लागू होती है अुतने ही जोरके साथ आपको लागू नहीं होगी। परन्तु मेरा यह प्रस्ताव अससे कहीं ज्यादा सरल है, क्योंकि यह कहीं अधिक व्यावहारिक और सुपरिचित है।

अिस युद्धमें जब यूरोपके लोगोंके हृदय शान्तिके लिअे लालायित होते हैं, हमने अपना शान्तिपूर्ण संग्राम भी स्थगित कर दिया है। क्या आपसे यह कहना बहुत बड़ी मांग होगी कि अैसे समयमें जिसका व्यक्तित्व आपके लिअे कोअी महत्त्व न भी हो परन्तु जिसका मत लाखों यूरोपियनोंके लिअे बड़ा महत्त्व है जिनकी शान्तिके लिअे मूक पुकार मैं सुन रहा हूं आप शान्तिके लिअे अेक प्रयत्न करें? मेरे कान करोड़ों मूकजनोंकी पुकार सुननेके लिअे सधे हुअे हैं। जब मैं गोल-मेज परिषदका प्रतिनिधि बनकर अिंग्लैण्ड गया था अुन दिनों रोममें मुझे सीनोर मुसोलिनीसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मुझे आशा है कि वे भी आवश्यक परिवर्तनके साथ अिस अपीलको अपने लिअे मान लेंगे।

आपका सच्चा मित्र
मो. क. गांधी

(अूपर अुद्धृत किया गया पत्र गांधीजीने १९४१ के बड़े दिनोंवाले सप्ताहमें लिखा था परन्तु भारत-सरकारने अिसे नाजी तानाशाहके पास भेजे जानेकी अिजाजत नहीं दी।)

१५२ गांधीजीके प्रिय भजन

[निम्नलिखित भजन गांधीजीके प्रिय भजनोंमें से थे और वे आम तौर पर अुनकी प्रार्थना-सभाओंमें गाये जाते थे।]

सच्चा वैष्णव

वैष्णव जन तो तेने कहीये जे पीड पराअी जाणे रे
परदुःखे अुपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे
सकळ लोकमां सहुने वंदे निंदा न करे केनी रे
वाच काछ मन निश्चळ राखे धन धन जननी तेनी रे
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी परस्त्री जेने मात रे
जिह्वा थकी असत्य न बोले परधन नव झाले हाथ रे
मोह माया व्यापे नहि जेने दृढ वैराग्य जेना मनमां रे
रामनामशुं ताळी लागी सकळ तीरथ तेना तनमां रे

वणलोभी ने कपटरहित छे काम क्रोध निवार्या रे
भणे नरसैंयो तेनु दरसन करतां कुळ अेकोतेर तार्या रे

(गुजराती) —नरसिंह मेहता

अर्थ सच्चा वैष्णव जन वह है जो दूसरोंकी पीड़ाको अपनी पीड़ा समझता है। वह दूसरोंके दुःखमें अुपकार करता है फिर भी मनमें अभिमान नहीं लाता। वह सारे जगतमें सबको प्रणाम करता है और किसीकी भी निन्दा नहीं करता। वह मन वचन और कर्मकी शुद्धता रखता है अुसकी माता धन्य है। वह समदृष्टिवाला होता है और तृष्णाका त्याग करता है। वह परस्त्रीको माताके समान समझता है। वह जीभसे कभी असत्य नहीं बोलता और दूसरोंके धनको हाथसे नहीं छूता। वह मोह और मायाके बन्धनोंसे मुक्त रहता है। अुसके मनमें दृढ़ वैराग्य होता है। अुसको रामनामकी लौ लगी रहती है और अुसके शरीरमें सारे तीर्थोंका वास होता है। वह लोभ और कपटसे मुक्त होता है और काम-क्रोधसे दूर रहता है। नरसिंह मेहता कहते हैं कि अुसके दर्शन करनेसे मनुष्यके अिकहत्तर कुल तर जाते हैं।

प्रेमका मार्ग

हरिनो मारग छे शूरानो नहि कायरनु काम जोने
परथम पहेलु मस्तक मूकी वळती लेवु नाम जोने
सुत वित दारा शीश समरपे ते पामे रस पीवा जोने
सिन्धु मध्ये मोती लेवा माहीं पड्या मरजीवा जोने
मरण आगमे ते भरे मूठी दिलनी दुग्धा वामे जोने
तीरे ऊभा जुअे तमाशो ते कोडी नव पामे जोने
प्रेमपंथ पावकनी ज्वाळा भाळी पाछा भागे जोने
माहीं पड्या ते महासुख माणे देखनारा दाझे जोने
माथा साटे मोंघी वस्तु, सांपडवी नहि सहेल जोने
महापद पाम्या ते मरजीवा मूकी मननो मेल जोने
राम-अमलमां राता माता पूरा प्रेमी परखे जोने
प्रीतमना स्वामीनी लीला ते रजनीदिन नरखे जोने

(गुजराती) —प्रीतम

धर्म हरिका मार्ग शूरोंका मार्ग है, अुस पर कायरोंका काम नहीं है। सबसे पहले हरिके चरणोंमें मस्तक रखना चाहिये फिर अुसका नाम लेना चाहिये। जो मनुष्य स्त्री-पुत्र धन-दौलत सब कुछ अर्पण कर देता है अुसे ही हरिका प्रेमरस पीनेको मिलता है। जो समुद्रमें से मोती निकालनेकी अिच्छा रखते हैं अुन्हें प्राणोंको हथेलीमें लेकर गहरे पानीमें गोते लगाने होते हैं। जो मृत्युसे जूझते हैं अुन्हें मुट्ठी भर भर कर मोती मिलते हैं और अुनके हृदयकी पीड़ा शान्त होती है। जो लोग समुद्रके तट पर खड़े रहकर केवल तमाशा देखते हैं अुन्हें कुछ भी नहीं मिलता। प्रेमपंथ आगकी ज्वाला है। कायर अुसे देखकर पीछे भागते हैं। ज्वालाका भ्रम रखनेवाले अुसमें झुलसते हैं परन्तु जो अुसमें कूद पड़ते हैं वे महासुख प्राप्त करते हैं। प्रेम जैसी महंगी वस्तु सिरका सौदा करके ही मिलती है, यह आसानीसे नहीं मिल जाती। जो लोग मनका मैल त्याग कर प्राणोंकी आहुति देनेको तैयार रहते हैं अुन्हींको महापद प्राप्त होता है। जो रामके नशेमें मस्त रहते हैं वे ही सच्चे प्रेमीको पहचान सकते हैं। प्रीतम कवि कहते हैं कि अैसे ही लोग मेरे स्वामी — अीश्वर — की लीलाका दिन रात दर्शन करते हैं।

मेरी हार्दिक प्रार्थना

पापाची वासना नको दावूं डोळां
त्याहूनी आंधळा बराच मी।
निंदेचें श्रवण नको माझे कानी
बधिर करोनि ठेवी देवा।
अपवित्र वाणी नको माझ्या मुखा
त्याजहूनि मुका बराच मी।
नको मज कधी परस्त्री-संगति
जनातूनि माती मुका भली।
तुका म्हणे मज अवघ्याचा कंटाळा
तू अेक गोपाळा आवडसी।

(मराठी) — तुकाराम

अर्थ — हे भगवान, मुझे अैसी वस्तुअें देखनेसे बचाओ जिनसे बुरे विचार पैदा होते हैं। जिससे अच्छा तो यह है कि मैं अंधा हो जाअू।

हे भगवान, मुझे निन्दाका अेक भी शब्द सुननेसे बचाओ। जिससे अच्छा तो यह है कि मैं बहरा हो जाअू।

हे भगवान, अपवित्र वाणी बोलकर अपनी जबान गंदी करनेके पापसे मुझे बचाओ। जिससे तो मेरा गूंगा हो जाना ज्यादा अच्छा है।

हे भगवान, जिन्हें मुझे अपनी बहन समझना चाहिये अुन पर कुदृष्टि डालनेके पापसे मुझे बचाओ। जिससे तो मेरा मर जाना ज्यादा अच्छा है।

तुकाराम कहते हैं कि मैं सबसे अूब गया हूं। हे गोपाल, अेक तू ही मुझे प्रिय है।

* * *

['लीड काअिण्डली लाअिट', 'दि वाण्डरस क्रॉस', 'रॉक ऑफ अेजेज' नामक अंग्रेजी भजन तथा अीसाका 'सर्मन ऑन दि माअुण्ट' नामक अुपदेश भी गांधीजीको बहुत प्रिय थे। अुनका हिन्दी अर्थ नीचे दिया जाता है।]

हे दयालु, मुझे मार्ग बता

हे दयालु, मुझे जिस व्यापक अन्धकारमें अपने दिव्य प्रकाशसे मार्ग दिखा, मुझे मार्ग बताता रह।

रात अंधेरी है और मैं घरसे बहुत दूर हूं। तू मेरा मार्गदर्शक बन।

मेरे पैर तू स्थिर रख, मैं तुझसे यह नहीं मांगता कि मैं दूरके दृश्य देखता रहूं, मेरे लिअे अेक कदम काफी है।

मेरा हमेशा यही हाल नहीं था और न मैंने यह प्रार्थना की कि तू सन्मार्ग दिखाता रह।

मुझे अपना मार्ग चुनना और देखना प्रिय था, परन्तु अब तू मुझे मार्ग बता।

मुझे वैभवसे प्रेम था और भय होने पर भी मेरी अिच्छामें गर्वकी प्रधानता थी, अुन पिछली बातोंको तू याद न रख।

अब तक तेरी सत्ताका आशीर्वाद मुझे प्राप्त रहा है, अवश्य ही वह अब भी मेरा पथ प्रदर्शन करता रहेगा।